Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jam

गद्य विभा

प्रो. चमनलाल सप्रू

15+4 = 19
10+6 = 16.
17+3 = 10

152 =
Sumber
Ramban
40-50 km
Digdol

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गद्य विभा

[दिल्ली विश्वविद्यालय की बी० काम (पास) प्रथम वर्ष (बी० कोर्स) के लिए पाठ्य-क्रमानुसार प्रस्तुत गद्य संकलन की पाठ्य-पुस्तक]

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 2827 (D)
Dated 21/12/2015

सम्पादन/संकलन
प्रो० चमनलाल सप्रू श्रीनगर कश्मीर

भूमिका
डॉ० देवेन्द्र आर्य
हिन्दी विभाग
मोतीलाल नेहरू कालेज (सांध्य)
नयी दिल्ली

Donated by
Badri Nath Pandita
"ABHILASH"
Durga Nagar, Sec-1

ऋषभचरण जैन एवम् सन्तति

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

© 1988,
दिग्दर्शन चरण जैन
नई दिल्ली
[सम्बद्ध रचनाओं के कापीराईट सम्बन्धित लेखकों के आधीन]

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुनर्मुद्रण	1988
मूल्य	रु. 6.00
प्रकाशक	दिग्दर्शन चरण जैन ऋषभचरण जैन एवम् सन्तति 4697/5-21A दरियागंज, नई दिल्ली-2 11 गार्डनरीच, कुलड़ी, मसूरी
मुद्रक	रुचिका प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Gadhya Vibha, Miscellanay of Hindi Prose Ed. by Prof. C. L. Sapru

Price Rs. 6.00

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्राक्कथन

प्रस्तुत संकलन आपको सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है, प्रसन्नता इसलिए कि गद्य की प्रायः सभी महत्वपूर्ण विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं को इस संकलन के माध्यम से आपके सम्मुख प्रस्तुन करने का सुअवसर मुझे मिल रहा है। कोई भी रचना किसी बड़े लेखक-कवि की होने से ही महत्वपूर्ण और कालजयी नहीं हो जाती, वह बड़ी होती है तब जब उसमें जीवन-जगत की संवेदना की, संघर्ष-पीड़ा की, हास-विलास की सहज अभिव्यक्ति इस प्रकार हो कि वह जन-मानस में गहरे उतरकर उसके प्रकाश-पथ को प्रशस्त करती है; 'स्व' का दायरा तो बहुत छोटा होता है, स्व से पर तक की यात्रा, आत्म से अनात्म में समा जाने की ललक भारतीय चिन्तन शैली की विशेषता रही है; समष्टि-हित को दृष्टि में रखकर ही इस संकलन की रूपरेखा तैयार की गयी है। 'धर्म' मानव मात्र के जीने की एक प्रक्रिया या विधि है, लेकिन इतने पवित्र धर्म को आड़ बनाकर जब कोई स्वार्थ के घिनौने खेल खेलता है तो व्यक्ति समाज का जीवन दूषित हो उठता है, इस कुत्सित मनोवृत्ति से निपटना प्रत्येक स्वतन्त्र चेता मसिजीवी का कर्तव्य है, इसी दृष्टि से गणेश शंकर विद्यार्थी का लेख 'धर्म की आड़' को पहले नम्बर पर रखा गया है। 'धन' का आज के जीवन में अन्यतम स्थान है, पर धन के साथ उसका सदुपयोग भी आवश्यक है, अपने लिए तो सभी जीते हैं परन्तु परहित में जीने का सुख ही कुछ और है: 'अपने लिए, सबके लिए' यही धन की सर्वोत्तम उपयोगिता है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम तथा भारतीय राजनीतिक जीवन में गांधीजी का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया है, उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र-हित समर्पित था—

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसे महान् पुरुष के सान्निध्य में रहकर कुछ करने का मोका कुछ ही भाग्यवान् लोगों को मिलता है, 'साबरमती आश्रम में महात्माजी' नामक संस्मरण में चतुर्वेदीजी ने गांधीजी के जीवन को अनेक कोणों से देखा-परखा और विश्लेषित किया है। साम्प्रदायिकता या मजहब का अन्धापन भारतीय जीवन की दुखद विडम्बना रही है, इसी के लिए देश का विभाजन हुआ; मजहबी जुनून में आदमी शैतान हो जाता है लेकिन वही जुनून भावनाओं के दौर से गुजरकर आँसू बन छलक जाता है तो आदमी के भीतर सोया 'आदमी' जाग जाता है, इस मार्मिक अनुभूति को चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की कहानी 'मास्टर साहब' में कुछ कहने का अवसर मिला है। हिन्दी-साहित्य के छायावादी युग में निराला अपने नाम को सार्थक करते हैं; लेकिन जग को अमृत पिलानेवाला कवि स्वयं कितने विष को कण्ठगत कर गया है, इसका लेखा-जोखा डॉ० रामविलास शर्मा ने अपनी कलम से 'निराला ! जीवन की सार्थकता का प्रश्न' में दिया है। हमारा आज का समाज अभी भी संस्कारों की दासता भोग रहा है, संस्कारों से परे हटकर वह किसी भी स्थिति को सहज स्वीकार नहीं करता लेकिन कई बार ऐसा होता है कि जिन बातों का हम प्राण-प्रण से विरोध करते हैं, एक समय आता है जब हम उन्हीं बातों को चुपचाप स्वीवार कर लेते हैं। वस्तुतः सड़े-गले संस्कार तो जंजीर हैं, भावनाओं के प्रवल प्रहार से उनका खण्डित होना ही शुभ है। विष्णु प्रभाकर ने इस सफल एकांकी 'संस्कार और भावना' में इसी तथ्य को कथा में ढालकर प्रस्तुत किया है। दुखों और अभावों की आग में तप कर ही समर्थ व्यक्तित्व कुन्दन सा निखरता है; जीवन भर अभावों की चक्की में पिसते हुए प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को जो सम्पदा दी है, वह अद्भुत है; ऐसे महान लेखक के अछूते प्रसंगों को समर्थ साहित्यकार ऋषभचरण जैन ने शब्दबद्ध कर पाठकों का कितना हित संवर्धन किया है, इसका आकलन आप ही करें तो अच्छा है।

इस संकलन की रचनाओं को मैंने अपने दृष्टिकोण से देखने, समझने और विश्लेषित करने की चेष्टा की है, पर साहित्य में कोई भी शब्द अन्तिम नहीं होता, आज अपनी स्वतन्त्र आलोच्य दृष्टि का निर्माण और विकास कीजिए इससे मेरा परिश्रम सार्थक होगा।

—सम्पादक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

भूमिका	: 5 :	देवेन्द्र आर्य
रचनाकार और रचना	: 25 :	,,
धर्म की आड़	: 40 :	गणेशशंकर विद्यार्थी
धन और उसका उपयोग	: 49 :	पुरुषोत्तमदास टंडन
साबरमती आश्रम में महात्मा जी	: 57 :	बनारसी दास चतुर्वेदी
मास्टर साहब	: 63 :	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार
जीवन की सार्थकता का प्रश्न	: 74 :	रामविलास शर्मा
संस्कार और भावना	: 83 :	विष्णु प्रभाकर
प्रेमचन्द स्मृति*	: 94 :	ऋषभचरण जैन
शब्दार्थ और टिप्पणी	: 100 :	देवेन्द्र आर्य

*अंतिम निबन्ध (प्रेमचन्द स्मृति) दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में नहीं है।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी गद्य का विकास : एक संक्षिप्त परिचय

खड़ी बोली गद्य का जो स्वरूप आज हमारे सामने है, उसकी कथा बड़ी रोचक है। नदी की सतत प्रवहमान धारा के समान हिन्दी गद्य भी सदियों से अपने स्वरूप की तलाश में अनेक पड़ावों और मोड़ों को पार करता हुआ आज जहाँ पहुँचा है, वहाँ प्रायः सभी विधाओं की पूर्णता से मण्डित है। निबन्ध, कहानी, संस्मरण, यामावृत्त, रिपोर्ताज, नाटक, उपन्यास आदि सभी कुछ तो है।

हिन्दी गद्य का प्रारम्भिक रूप राजस्थानी और ब्रजभाषा में देखा जा सकता है। सन् 945 ई० से 1345 ई० तक राजस्थान प्रायः सभी साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र रहा। चारण-भाटों ने पद्य के साथ-साथ धर्म, नीति, इतिहास, छन्द शास्त्र आदि विषयों का गद्य में प्रणयन किया, कुछ जैन साधुओं ने भी राजस्थानी गद्य में रचनाएँ कीं। सन् 1345 के बाद जैसे-जैसे ब्रजभाषा साहित्यिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित होती गयी, पद्य के साथ-साथ गद्य में भी कुछ रचनाएँ लिखी गयीं। 16वीं, 17वीं शताब्दी में गोसाईं बिट्ठल नाथ ने 'शृंगार रस मण्डन', गोस्वामी गोकुल नाथ ने 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' एवं 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' तथा नाभादास ने 'अष्टयाम' आदि रचनाओं का ब्रजभाषा गद्य में प्रणयन कर इस धारा को आगे बढ़ाया। इसके बाद भी 18वीं, 19वीं शताब्दी तक गद्य लिखा जाता रहा लेकिन ब्रजभाषा गद्य की अपनी सीमाएँ थीं; उसने 'गद्य' के विकास को आधार तो अवश्य प्रदान किया पर इतना समर्थ और विकसित नहीं हो पाया कि वह गद्य की समस्त विधाओं को अपने में समेट लेता, इसीलिए कुछ दूर चलकर ही ब्रजभाषा गद्य की गति मन्द किंवा अवरुद्ध ही हो गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज की समृद्ध खड़ी बोली के अस्तित्व-बिन्दुओं को विद्वानों ने हिन्दी के आदिकाल में तलाशने का प्रयास किया है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है कि 'अपभ्रंश के ग्रन्थों में, उतर मध्यकाल के सन्तों की बानियों में और विनोदपूर्ण ढंग से लिखी हुई संस्कृत कविताओं में इस भाषा (खड़ी-बोली) के नमूने मिल जाया करते हैं।' मुगल शासन के दौरान दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में विशिष्ट भाषा के रूप में खड़ीबोली का प्रयोग होने लगा था। अकबर के दरबारी कवि गंग(सन् 1576 ई० के आसपास) द्वारा रचित 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' और राम प्रसाद निरंजनी (सन् 1741 ई० में) 'भाषा योग वासिष्ठ' को प्रमुख आलोचक पं० रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी गद्य की प्रथम प्रौढ़ कृतियाँ माना है, लेकिन सत्य यह है कि खड़ीबोली गद्य को विकास पथ तक ले जाने का वहुत कुछ श्रेय 19वीं शताब्दी के चार लेखकों—(1) मुंशी सदासुख लाल (2) ईंशा अल्ला खाँ (3) लल्लू लाल और (4) सदल मिश्र—को जाता है। मुंशी सदासुख लाल ने श्रीमद्भागवत का 'सुख सागर' के नाम से हिन्दी भाषा में अनुवाद किया; ईंशा अल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखी, लल्लू लाल ने 'प्रेम सागर' और सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की।

ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अंग्रेजों ने कलकत्ता में 'फोर्ट विलियम कालेज' स्थापना की। कालेज की ओर से लल्लू लाल और सदल मिश्र ने खड़ीबोली गद्य में पुस्तकें लिखनी शुरू कीं। लार्ड मैकाले की शिक्षा योजना के लिए जब शहरों-कस्बों और देहातों में स्कूल खोले गये तो पाठ्य पुस्तकों की माँग को पूरा करने के लिए आगरे में तथा बाद में कलकत्ता में 'स्कूल बुक सोसायटी' की स्थापना की गयी, इसके अन्तर्गत इतिहास, भूगोल और विज्ञान आदि की पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित की गयीं। इसके साथ-साथ ईसाई मिशनरी ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए बाइविल का हिन्दी में अनुवाद किया, अनेक पैमफ्लेट भी निकलवाये। ईसाई मिशनरियाँ शहर-शहर, गाँव-गाँव घूमकर ईसाई मत का प्रचार करते हुए जब हिन्दू धर्म पर तीखा प्रहार कर रहे थे तो प्रतिक्रिया स्वरूप आर्य समाज, ब्रह्म समाज एवं सनातन धर्म भी देश-धर्म की रक्षा हेतु सन्नद्ध हो गये, दोनों ओर से पुस्तकें और पैमफ्लेट आदि छपकर बँटे थे; इससे और जो हुआ

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सो हुआ लेकिन हिन्दी खड़ीबोली गद्य के स्वरूप में निरन्तर निखार आता चला गया।

लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति के चलते सर सैयद अहमद खाँ ने स्कूलों में हिन्दी को अनिवार्यतः पढ़ाने का विरोध किया, राजनीतिक कुचक्र के कारण अदालतों में हिन्दी को पहले ही खत्म कर दिया गया था; इस हिन्दी विरोधी नीति से दुखी होकर राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मण सिंह ने हिन्दी के लिए पुरजोर संघर्ष कर उसे स्कूलों में पुनः उचित स्थान दिलाया; पाठ्य पुस्तकों की कमी को पूरा करने के लिए अपने सहयोगियों के साथ राजा शिवप्रसाद ने अनेक पुस्तकों का प्रणयन किया। राजा लक्ष्मण सिंह तत्सम निष्ठ हिन्दी के समर्थक थे, 'प्रणय हितैषी' अखबार भी निकाला। 'शकुन्तला नाटक' का अनुवाद किया, और इन सारी घटनाओं के बीच हिन्दी गद्य का विकास होता चला गया।

आधुनिक काल के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का साहित्य मंच पर उदय युग की सबसे अधिक चमत्कारिक घटना थी। भारतेन्दुजी ने जहाँ एक ओर गद्य की अनेक विधाओं में श्रेष्ठ कृतियों का प्रणयन कर साहित्य की श्री वृद्धि की वहाँ दूसरी ओर एक समर्थ लेखक मण्डल तैयार कर माँ भारती की अप्रतिम सेवा की। बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाचरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह आदि ने कहानी, निबन्ध, नाटक, उपन्यास, व्यंग्य आदि विधाओं में रचना की और इस प्रकार खड़ीबोली हिन्दी को विकास की ओर द्रुतगति से ले चले।

यह युग राष्ट्रीय चेतना के बीज वपन का था। निबन्धकार-पत्रकार स्पष्टता-निर्भीकता से विदेशी सत्ता पर करारा व्यंग्य कर रहे थे। 'कवि वचन सुधा', 'काशी पत्रिका', 'भारतबन्धु', 'हिन्दी प्रदीप', 'आनन्द कादम्बिनी', 'देश हितैषी' आदि सत्ताईस पत्र-पत्रिकाएँ इस काल में प्रकाशित हुई जिनके माध्यम से हिन्दी-गद्य के स्वरूप में निखार आता जा रहा था; इस गतिशीलता के बावजूद अभी तक भाषा का कोई आदर्श स्वरूप स्थिर नहीं हो पाया था। जहाँ एक ओर उर्दू-फारसी से लदी खिचड़ी भाषा थी तो दूसरी ओर तत्सम प्रधान शब्दों से लदी बोझिल भाषा थी; हालाँकि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतेन्दु युगीन लेखकों ने मध्यम वर्ग अपनाते हुए सरल, स्वाभाविक भाषा को ही अपनाया था फिर भी भाषा में एकरूपता नहीं आ पायी थी; हिन्दी के सौभाग्य से फिर से एक चमत्कारी घटना हुई। 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन भार आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सँभाला। भाषा की व्याकरण सम्बन्धी शिथिलता और दुर्बलता का परिहार कर द्विवेदीजी के उसका परिष्कार और संस्कार किया, भाषा में स्थिरता और परिपक्वता आयी। द्विवेदीजी ने स्वयं तो आलोचनात्मक निबन्ध लिखे ही, अन्य लेखकों को भी इस ओर प्रेरित किया। बालमुकुन्द गुप्त, देवकी नन्दन खत्री, पं० किशोरी लाल गोस्वामी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', बाबू श्यामसुन्दर दास, पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, पं० देवीदत्त शर्मा, पं० पद्मसिंह शर्मा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मिश्रबन्धु आदि अनेकानेक साहित्यकारों ने हिन्दी गद्य के महारथ को विकास की मंजिलों की ओर पहुँचाने में अपना बहुमूल्य योगदान किया। बाबू देवकी नन्दन खत्री के तिलस्मी उपन्यासों 'चन्द्रकान्ता' और 'चन्द्रकान्ता सन्तति' ने तो इतनी धूम मचायी कि न जाने कितने लोगों ने इन उपन्यासों को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी गद्य के इस महारथ को जिस विकास पथ पर उन्मुख किया था, वह निरन्तर मानो और आगे बढ़ता चला गया; प्रौढ़ता की ओर बढ़ते इस रथ को जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचन्द, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेन्द्र, महादेवी वर्मा, निराला, पन्त जैसे अनेक परवर्ती लेखकों ने अपना महत्त्वपूर्ण योग दिया। परिणाम बड़ा सुखद रहा; यहाँ तक आते-आते हिन्दी गद्य धारा अनेकधा होकर बहने लगी—निबन्ध, कहानी, उपन्यास, आलोचना, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, व्यंग्य आदि अनेक विधाओं के भरपूर विकास के कारण माँ का भण्डार नित नूतन रचनाओं से समृद्ध होता चला गया। हिन्दी साहित्य के विकास की अभी भी अनन्त सम्भावनाएँ हैं; हिन्दी भाषा को अभी न जाने कितनी विकास की मंजिलों को पार करना है; राष्ट्रभाषा के रूप में समादृत होने के साथ साथ इसे विश्वभाषा के रूप में अपनी पहचान बनानी है। हिन्दी का लेखक वर्ग निरन्तर इस दिशा में प्रयत्नरत रहा है।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निबन्ध : स्वरूप और विकास

व्युत्पत्ति की दृष्टि से निबन्ध (नि + बन्ध् + घञ्) का शाब्दिक अर्थ है—विशेष रूप से बांधना, संवारकर बांधना। साहित्यिक बांधना। अंग्रेजी के शब्द 'एस्से' (Essay) के समानार्थक हिन्दी का निबन्ध शब्द है जिसकी परिधि गद्यमयी संक्षिप्त रचना तक सीमित कर दी गयी है। हालांकि अंग्रेजी में गद्य-पद्यमयी छोटी सरल या गम्भीर रचना को 'एस्से' के अन्तर्गत माना गया है।

निबन्ध को विद्वानों ने परिभाषा में बांधने का प्रयास अनेकशः किया है। फ्रांसिसी लेखक मोन्तेन विचारों या भावों का कोई क्रम स्वीकार न करते हुए निबन्ध को अनियन्मित रचना मानते हैं। 'जानसन' स्वच्छन्द मन की निर्बन्ध रचना को निबन्ध के अन्तर्गत स्वीकार करते हैं। अंग्रेजी कोशों में किसी भी विषय से सम्बद्ध सामान्यतः गद्यमयी, संक्षिप्त और साहित्यिक रचना को निबन्ध कहा है। संस्कृत आचार्यों ने गद्य को कवियों की कसौटी माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल निबन्ध को गद्य की कसौटी मानते हैं। बाबू गुलाबराय ने लेखक के निजत्व से युक्त, संक्षिप्त, रोचक एवं सजीव गद्य रचना को निबन्ध माना है। वस्तुतः निबन्ध गद्य की ऐसी महत्वपूर्ण विधा है जिसे निश्चित परिभाषा में बांधा नहीं जा सकता। यह तो एक ऐसी लचीली विधा है जिसमें गम्भीर-से-गम्भीर और सरल-से-सरल विषयों को चिन्तन प्रधान या व्यंग्य प्रधान शैली में बांधा जा सकता है, वर्णन वस्तु-परक या आत्मपरक कैसा भी हो सकता है। परिभाषाओं के सीमित घेरे में न बांधते हुए भी हम ऐसी रचना को आदर्श निबन्ध की श्रेणी में रख सकते हैं जिसमें एक ओर सम्बद्धता-एकसूत्रता है तो दूसरी ओर भाव तत्व भी है, एक ओर विश्लेषणात्मक शैली में विषय का निर्वाह किया गया है तो दूसरी ओर हल्की-फुल्की हास्य-व्यंग्य प्रधान शैली में विषय का समुचित प्रति-पादन है। भाव यह है कि निबन्ध (विशेष रूप से बंधा हुआ) होते हुए भी निबन्ध को विषय, भाव या शैली की सीमित शृंखला में जकड़ा नहीं जा सकता। इसी निर्द्वन्द्वता और स्वच्छन्दता के कारण निबन्ध आज गद्य की इतनी महत्वपूर्ण विधा बन गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्वानों द्वारा व्यक्त किए गये विचारों के आधार पर हम निबन्ध के अनिवार्य तत्वों का कुछ इस प्रकार वर्णन कर सकते हैं—

एकसूत्रता निबन्ध का पहला अनिवार्य तत्व माना जा सकता है। ऊपर ऊपर से असम्बद्ध या विशृंखल दीख पड़ने वाले विचार या भाव एक केन्द्रीय भाव से इस प्रकार जुड़े होने चाहिए कि इसी के चारों ओर विचारों-भावों का ताना-बाना बुना रहे।

आत्मीयता दूसरा प्रमुख तत्त्व है। निबन्ध का विषय भाव प्रधान, चिन्तन प्रधान या व्यंग्य प्रधान कैसा भी क्यों न हो, लेखक का अपना व्यक्तित्व, उसकी आत्मीयता सहज भाव से मीठी चाशनी की तरह घुलती चलेगी तो निबन्ध अधिक स्पृहणीय हो जायेगा: पाठक को लगेगा कि लेखक जैसे हमारे सामने बैठकर एक के बाद एक भाव-पर्तों को उद्घाटित कर रहा है, इस प्रकार पाठक भी लेखक की भाव-धारा के साथ सहज ही प्रवहमान हो सकेगा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धों में आत्मीयता का यह गुण सहज ही अंकित किया जा सकता है।

संक्षिप्तता के साथ-साथ **पूर्णता** भी निबन्ध का आवश्यक गुण है। विषय के अनुसार विचारों का प्रतिपादन इस प्रकार हो कि अनावश्यक विस्तार और असम्बद्ध विचारों से बचा जा सके। कई बार बड़े निबन्धों में केन्द्रिय भाव की पकड़ ढीली हो जाती है: इससे विषय का प्रतिपादन तो होता ही नहीं, पाठक में भी ऊब पैदा हो जाती है। इसलिए निबन्ध संक्षिप्त तो हो ही, पूर्ण भी हो अर्थात् लेखक ने जिस भाव, विषय को उठाया है, उसका पूरा-पूरा निर्वाह होना चाहिए।

कलात्मकता निबन्ध की ऐसी विशेषता है जिसके अभाव में सारा ताना-बाना ही खण्डित होकर रह जाता है। सुष्ठु, सहज-प्रांजल भाषा निर्झरवत् सहृदयों की भाव-भूमि को आर्द्र और सिंचित करती हुई उन्हें रसमग्न कर दे, इसी में निबन्ध की सार्थकता और लेखक की सफलता है।

वर्ण्य विषय और शैली भेद के आधार पर निबन्ध को वैसे तो अनेकानेक श्रेणियों में बाँटा जा सकता है, लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से इसका प्रमुख तीन भागों में विभाजन करना समीचीन होगा—(1) विचारात्मक (2)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भावात्मक और (3) वर्णनात्मक।

विचारात्मक निबन्ध लेखक के गम्भीर चिन्तन का परिणाम होते हैं। सारगर्भित, युक्तियुक्त, सुसम्बद्ध और विश्लेषणात्मक शैली में विषय का प्रतिपादन करता हुआ लेखक पाठक को अतिबौद्धिकता और नीरसता से बचाता हुआ कथ्य-तथ्य के मूल तक इस प्रकार ले जाता है कि वह स्वयं भी मौलिक चिन्तन के लिए प्रेरित हो सके। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि 'शुद्ध विचारात्मक निबन्धों का उत्कर्ष नहीं कहा जा सकता है जहाँ एक-एक पैराग्राफ में विचार दबा-दबाकर कसे गए हों और एक-एक वाक्य किसी सम्बद्ध विचार खण्ड के लिए हो।'

भावात्मक निबन्धों में लेखक किसी मनोभाव, भाव या अनुभूतियों को सरल-सरस शैली में पाठकों तक इस प्रकार पहुँचाता है कि वह बौद्धिकता की जकड़न से दूर विचारों की तरंगायित डोर पकड़कर कभी कल्पना एवं भाव-रस के खुले आकाश में उड़ान भरने लगता है तो कभी रस के स्रोत में निमग्न होकर स्वयं भी काव्यमयी बन जाता है। ऐसे निबन्धों में लेखक लेखक भी होता है और कवि भी; गद्य-काव्य की सीमाओं को छूता हुआ अधिक रमणीय और स्पृहणीय बन जाता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और कुबेरनाथ राय के निबन्ध इसी प्रकार के होते हैं।

वर्णनात्मक निबन्धों का आयाम कुछ बड़ा है। लेखक अपनी कल्पना एवं संवेदनशीलता से किसी वस्तु, व्यक्ति, दृश्य या घटना व्यापार आदि का इस प्रकार प्रतिपादन करता है कि पाठक के सामने सारा वस्तु जगत मूर्तिमान हो उठता है। व्यंग्यात्मकता एवं कथात्मकता का पुट देकर लेखक इन निबन्धों को और भी अधिक रोचक तथा भाव सम्पन्न बना देता है। रघुबीर सिंह का 'फतेहपुर सीकरी' इस दृष्टि से समर्थ निबन्ध है।

विकास की दृष्टि से हम कह सकते हैं कि हिन्दी गद्य के विकास की कहानी किन्हीं अर्थों में हिन्दी निबन्ध के विकास की कहानी है, फिर भी इसके समुचित विकास की कहानी भारतेन्दु-युग से प्रारम्भ होती है। राष्ट्रीय जन-जागरण के इस युग में देश और समाज की समस्याओं के प्रति जागरूक लेखकों की अभिव्यक्ति का सबल माध्यम निबन्ध ही था। इस युग के अधिकांश निबन्धकार किसी न किसी पत्रिका के सम्पादक भी थे, इसलिए जहाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ओर उन्होंने नव चेतना, जागृति और भारतीय संस्कृति-सभ्यता से परिपूर्ण विचारों से साहित्य का कोश भरा, वहाँ दूसरी ओर कुरीतियों अंध-विश्वास, आडम्बर का उन्मूलन करते हुए विदेशी सत्ता के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया। यही कारण है कि इस काल में निबन्धों में ईमानदारी, सजीवता, जिन्दादिली, तेजस्विता और आत्मीयता के भाव पूरी तरह परि-लक्षित होते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्वयं तो निबन्ध रचना की ही, एक समर्थ लेखक मण्डल भी उन्होंने तैयार किया—इसमें प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', ठाकुर जगमोहनसिंह, बाल-मुकुन्द गुप्त, अम्बिकादत्त व्यास, बाबू तोताराम, पं० केशवराम भट्ट और लाला श्रीनिवास आदि प्रमुख हैं।

द्विवेदी युग हिन्दी निबन्ध के विकास का दूसरा युग है। स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने और उनके सहयोगी निबन्धकारों ने हिन्दी निबन्ध को प्रौढ़, गम्भीर, विचारपूर्ण और विषयनिष्ठ बनाने का महती कार्य किया; 'सरस्वती के सम्पादक के रूप में आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी भाषा को परिष्कृत परिमार्जित और प्रौढ़ बनाने का स्तुत्य कार्य किया। इस युग के प्रमुख निबन्धकार हैं—बालमुकुन्द गुप्त, माधव प्रसाद मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, गोपाल राम गहमरी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, पद्मसिंह शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, गुलाबराय, रामचन्द्र शुक्ल और बाबू श्यामसुन्दर दास आदि। आचार्य द्विवेदी की लेखन प्रवृत्ति और अति अनुशासनप्रियता के कारण भारतेन्दु कालीन जीवन्तता, स्वच्छन्दता और उन्मुक्तता पर थोड़ा बहुत अंकुश लगा; हास्य-व्यंग्य प्रधान रचनाओं में कमी आई; नैतिकता और इतिवृतात्मकता को बढ़ावा मिला। बालमुकुन्द गुप्त के 'शिवशम्भु के चिट्ठे' हास्य-व्यंग्यपूर्ण रचना है। अध्यापक पूर्णसिंह ने 'मजदूरी और प्रेम' जैसे भाव-विचार पूर्ण निबन्ध लिखे। इसी काल में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने शुद्ध विचारात्मक निबन्ध (लोभ और प्रीति, क्रोध, भाव और मनोविकार, कविता क्या है? आदि) लिखकर निबन्ध साहित्य को प्रौढ़ता प्रदान की। द्विवेदी युगीन निबन्धों में वैसे तो भारतेन्दु युगीन रचना पद्धतियों का ही उत्तरोत्तर विकास हुआ है। बालमुकुन्द गुप्त की व्यंग्यात्मकता, सरदार पूर्णसिंह की लाक्षणिकता, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की सूत्रात्मकता और गुलेरी की प्रमाण-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-GRANT

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गर्भिता ने खड़ी बोली गद्य को जो अभिव्यक्ति क्षमता प्रदान की, उससे निबन्ध साहित्य का अद्‌भुत विकास हुआ।

शुक्ल युग—हिन्दी निबन्ध के विकास का तीसरा और अत्यन्त महत्व-पूर्ण युग है द्विवेदी युगीन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी निबन्ध साहित्य को जो प्रौढ़ता, विकास और विस्तार दिया, उस कारण आलोचक द्विवेदी उत्तर युग को शुक्ल युग के नाम से अभिहित करने लगे। 'चिन्तामणि' में संग्रहीत उनके निबन्ध सचमुच 'गद्य की कसौटी' ही सिद्ध हुए हैं। संयत, प्रौढ़ और गम्भीर भाषा के बीच-बीच में हास्य-व्यंग्य के समावेश ने निबन्धों को अधिक प्रभावशाली बना दिया है।

शुक्ल युग के प्रमुख निबन्धकारों में हैं—गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि, रायकृष्णदास, शान्तिप्रिय द्विवेदी, शिवपूजन सहाय आदि। इन लेखकों ने इतिहास, संस्कृति, मनोविज्ञान, साहित्य से सम्बन्धित विचारात्मक और भावात्मक निबन्धों का प्रणयन किया। बाबू गुलाबराय के निबन्ध आत्मीयता, विचारों की स्पष्टता और भाषा शैली की सुबोधता लिए हुए है; वियोगी हरि, रायकृष्णदास और शान्तिप्रिय द्विवेदी के अनुभूतिपरक भावात्मक निबन्धों में गद्यगीत एवं काव्य का सा आनन्द पाठकों को मिलता है।

शुक्लोत्तर युग निबन्ध के विकास का चौथा आयाम है। निबन्ध साहित्य के बहुमुखी विकास में नन्द दुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, डॉ० नगेन्द्र, विनय मोहन शर्मा, वियेन्द्र स्नातक, भगीरथ मिश्र जैसे समर्थ आलोचकों ने तथा पंत, निराला, महादेवी, अज्ञेय, दिनकर, सियारामशरण गुप्त, जैनेन्द्र कुमार, इलाचन्द्र जोशी, धर्मवीर भारती जैसे कारयित्री प्रतिभा के साहित्यकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। इतिहास, पुराण, साहित्य और लोक परम्परा के गम्भीर से गम्भीर तथ्यों को ललित शैली पाठकों तक पहुँचाने में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अद्‌भुत कार्य किया; 'अशोक में फूला' उनका महत्वपूर्ण निबन्ध संग्रह है। भारतीय संस्कृति और पुरातत्व को लेकर डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, भगवतशरण उपाध्याय, विद्यानिवास मिश्र, राहुल सांकृत्यायन ने तथा भावात्मक शैली में रघुबीरसिंह तथा कुबेरनाथ राय ने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। हास्य-व्यंग्य और विनोद

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्ण शैली के निबन्धकारों में बेढ़ब बनारसी, प्रभाकर माचवे, हरिशंकर परसाई, रवीन्द्रनाथ त्यागी, शरद जोशी, बरसाने लाल चतुर्वेदी, श्रीलाल शुक्ल आदि प्रमुख हैं।

इस प्रकार विषय की दृष्टि से ही नहीं, भाषा एवं शैली की दृष्टि से शुक्लोत्तर युग में निबन्ध साहित्य का जिस प्रकार विकास हो रहा है, वह निश्चित ही गौरव की बात है।

संस्मरण

संस्मरण गद्य साहित्य की वह महत्वपूर्ण विधा है जिसमें लेखक अपने जीवन की किसी अविस्मरणीय घटना या व्यक्ति विशेष के साथ घटी घटना एवं महत्वपूर्ण क्षणों को स्मृति के सहारे इस प्रकार रूपायित करता चलता है कि चित्रपट पर अंकित चित्र सा सारा परिवेश उभरता चलता है। इसमें घटना या वस्तु या व्यक्ति विशेष के चरित्र चित्रण पर ही लेखक का मुख्य ध्यान केन्द्रित रहता है। संस्मरण सम्पूर्ण जीवन नहीं वरन् उस खण्ड विशेष का चित्रण है जितने से लेखक का सम्पर्क-सम्बन्ध रहा है। वस्तुतः वे विशेष क्षण लेखक की संवेदना को इतनी गहराई तक प्रभावित कर जाते हैं कि परिस्थिति विशेष में स्मृति की हल्की सी कुलबुलाहट अतीत के कुहासे को हटाकर व्यक्ति या वस्तु या घटना को रूप प्रदान कर देती है, तब नवस्मृति स्वयं लेखक बनकर घटनाओं की, भावों की पर्तें उतारने लगती है, इसीलिए संस्मरण में भावात्मकता का स्वभावतः समावेश हो जाता है। ऐसे में लेखक स्वयं भी अपने जीवन सूत्रों को संस्मरण में गूंथता चलता है।

संस्मरण की आधार भूमि वास्तविक घटना या व्यक्ति है, इसलिए उसमें अतिरिक्त कल्पना या घटना विस्तार की गुंजाइश नहीं होती। उत्सुकता, कौतुहल, द्वन्द्व आदि गुणों के होते हुए भी संस्मरण इसीलिए कहानी से अलग हो जाता है। क्योंकि इसमें सारे ताने-बाने अनिवार्यतः सत्य की भाव-भूमि पर ही बुने जाते हैं, अगर ऐसा नहीं होगा तो संस्मरण संस्मण नहीं रह जाएगा। जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों से युक्त होने के कारण संस्मरण सहज ही पाठक से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। संस्मरण लेखक और व्यक्ति के आन्तरिक सम्बन्धों को रूपायित करने वाला

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कथात्मक दस्तावेज है। लेखक की शैली के अनुसार संस्मरण में कभी व्यंग्य विनोद का पुट रहता है तो कभी भावात्मकता का, कभी गम्भीरता का तो कभी वर्णनात्मकता का कलेवर की दृष्टि से संस्मरण छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी, फिर भी संक्षिप्तता, रोचकता और हृदयस्पर्शिता संस्मरण के अपरिहार्य गुण माने जाते हैं।

संस्मरण वर्ण्य व्यक्ति का लेखा-जोखा तो प्रस्तुत करता ही है, लेखक की तत्सम्बन्धी रुचि-अरुचि, राग-द्वेष, संस्कार और दृष्टिकोण को भी स्पष्ट करता चलता है अर्थात् लेखक अपने नजरिये से देखता हुआ व्यक्ति की रेखाएं चित्रित करता है, वह सर्वथा निर्लिप्त भाव से स्थितियों का चित्रण मात्र नहीं कर सकता। हम कह सकते हैं कि संस्मरणकार कैमरे से व्यक्ति का चित्र तो उतारता है पर उसमें अपने भी अनेक रंग भर देता है, संवेदना, निजता और भाषा-भावगत कलात्मकता से चित्र को ऐसा मुंह बोलता चित्र बना देता है कि वह सहज भाव से पाठक से तादातम्य स्थापित करता चलता है।

विकास की दृष्टि से संस्मरण का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। सरस्वती, सुधा, विशाल भारत, माधुरी आदि पत्रिकाओं के माध्यम से संस्मरण का जन्म हुआ। बालमुकुन्द गुप्त और प्रताप नारायण मिश्र ने सबसे पहले संस्मरणात्मक निबन्ध की शुरुआत की। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने अनुमोदन का अन्त, सभा की सम्यता, विज्ञानाचार्य वसु का विज्ञान मन्दिर आदि संस्मरण के लिए इस विधा को आगे बढ़ाया।

छायावाद काल में रामकुमार खेमका, भगवानदीन दुबे, रामेश्वरी नेहरू, श्रीमन्नारायण अग्रवाल आदि ने यात्रावृत शैली में 'सरस्वती' में अनेक सस्मरण लिखे। बाबू श्यामसुन्दर दास ने लाला भगवानदीन पर, रामदास गौड ने श्रीधर पाठक और रायदेवीपूर्ण पर कुछ संस्मरण लिखे। इलाचन्द्र जोशी, बनारसीदास चतुर्वेदी, वृन्दावनलाल वर्मा, रूपनारायण पाण्डेय, मोहनलाल महतो वियोगी आदि ने अनेक संस्मरण लिखकर इसे विशेष गति प्रदान की। पद्मसिंह शर्मा ने 'पद्मपराग' में अकबर इलाहाबादी से सम्बन्धित संस्मरण लिखकर संस्मण साहित्य को प्रौढ़ता प्रदान की।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छायावादोत्तर काल में तो संस्मरण सहस्रधा होकर बह निकला। श्रीराम शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी और महादेवी वर्मा ने संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखकर इस विधा को नई दिशा प्रदान की। कविहृदया महादेवी ने दीन-हीन और शोषित वर्ग के पात्रों को आधार बनाकर अपनी संवेदना, भावुकता और कलात्मक अभिव्यक्ति से पात्रों को जीवन्त रूप प्रदान किया। 'रामा', सबिया, बिहो, घीसा, गुंगिया आदि पात्र संस्मरण के माध्यम से अमर हो गए हैं। 'अतीत के चलचित्र,' 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', स्मारिका और 'मेरा परिवार' आदि संग्रह संस्मरण साहित्य के आधार स्तम्भ हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने अद्भुत शब्द शिल्प में यथार्थ, कल्पना, संवेदना और भावुकता का मिश्रण कर 'लालतारा', 'माटी की मूरतें', 'गेहूँ और गुलाब' आदि संग्रह प्रस्तुत किए। प्रकाशचन्द्र गुप्त (पुरानी स्मृतियाँ), राधिका रमण प्रसाद सिंह (टूटा तारा) विनय मोहन शर्मा (रेखा और रंग) कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर (जिन्दगी मुसकाई, माटी हो गई सोना, दीप जले शंख बजे), शिवपूजन सहाय (वे दिन वे लोग) शान्तिप्रिय द्विवेदी (स्मृतियाँ और कृतियाँ) उपेन्द्रनाथ अश्क (रेखाएँ और चित्र, मंटो मेरा दुश्मन) विष्णु प्रभाकर (कुछ शब्द, कुछ रेखाएँ) राहुल सांकृत्यायन (बचपन की स्मृतियाँ, जिनका मैं कृतज्ञ, मेरे असहयोग के साथी) जगदीशचन्द्र माथुर (दस तस्वीरें) सेठ गोविन्द दास (स्मृति कण) डा० नगेन्द्र (चेतना के बिम्ब) माखनलाल चतुर्वेदी (समय के पाँव) रामधारीसिंह दिनकर (लोकदेव नेहरू संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ) हरिवंशराय बच्चन (नये पुराने झरोखे) तथा अनेकानेक लेखकों ने संस्मरण साहित्य को पुष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। और भविष्य की दिशाएँ तलाशते और संवारते मां सरस्वती के भण्डार को भर रहे हैं।

हिन्दी कहानी

कहानी का सम्बन्ध मानव जन्म से जुड़ा हुआ है: सृष्टि के विशाल प्रांगण में पलक झपकने के साथ जो रूप-दृश्य उसके सामने उजागर हुआ व इतिवृत्त कौतूहलपूर्ण था; दादा-दादी या नाना-नानी की कहानियों ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परीलोक से लेकर यथार्थ जीवन के न जाने कितने आयामों से उसे निरन्तर परिचित कराया है, यहीं से कहानी के ताने-बाने उसके मन के कल्पना पट पर फूल-पत्तियाँ चित्रित, उतारने लगते हैं; मानव-जन्म से जुड़ी इस कहानी की चर्चा भी बहुत निराली है लेकिन जब हम हिन्दी कहानी की चर्चा करते हैं तो उसके जन्म का विवाद सामने आ खड़ा होता है। कुछ समालोचक इंशाअल्ला खां द्वारा रचित 'रानी केतकी की कहानी' को हिन्दी की प्रथम कहानी मानते हैं तो कुछ समालोचक रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903 ई०) नामक कहानी को पहली कहानी स्वीकार करते हैं। विवाद में न उलझते हुए हम आधुनिक हिन्दी कहानी का विकास बीसवीं शताब्दी से मानते हैं जिसके सर्वश्रेष्ठ कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। हिन्दी कहानी के विकास को प्रेमचन्द पूर्व और प्रेमचन्दोत्तर काल में बाँटकर देखें तो विकास क्रम को देखने में अधिक सुविधा हो सकेगी।

प्रेमचन्द पूर्व काल में किशोरी लाल गोस्वामी की 'इन्दुमती', बंग महिला की 'दुलाईवाली', चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' और जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम' आदि कहानियाँ प्रसिद्ध हो चुकी थीं। इस काल की कहानियों में घटनाओं की बहुलता और रोचकता का अधिक समावेश हुआ है।

प्रेमचन्द युगीन कहानी साहित्य अपनी विशालता, विविधता, सामाजिक-नैतिक मूल्यों की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। 1909 ई० से 1920 ई० के बीच वृन्दावनलाल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, जी० पी० श्रीवास्तव, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, विश्वम्भरनाथ जिज्जा, चतुरसेन शास्त्री, विश्वम्भरनाथ कौशिक, ऋषभचरण जैन, प्रेमचन्द, सुदर्शन आदि कहानीकारों की अनेक कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी थीं। इस युग में प्रेमचन्द के अलावा जयशंकर प्रसाद भी प्रमुख कहानीकार के रूप में उभरकर आए। प्रसाद ने रोमानी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर मानव मन के द्वन्द्वों का सूक्ष्म चित्रण किया तो प्रेमचन्द ने ग्रामीण एवं शोषित वर्ग के जीवन के दुख-दर्द को, समस्याओं को सामाजिक और आदर्शवादी परिवेश में रखकर चित्रित किया। इसी काल में जैनेन्द्र कुमार (अपना-अपना भाग्य) ने मनोवैज्ञानिकता को अपनी कहानियों का आधार बनाया। भगवती प्रसाद

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाजपेयी, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय आदि ने भी मनोवैज्ञानिक शैली को समृद्ध किया। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' की 'डाची' और 'खिलौने' जैसी कहानियों ने सामाजिक-नैतिक और पारिवारिक परिवेश को उजागर कर नई दिशा प्रदान की।

प्रेमचन्दोत्तर काल में साम्यवादी प्रभाव से प्रगतिवादी कहानियों का दौर शुरू हुआ जिसमें यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, हंसराज रहबर, रांगेय राघव और अमृतराय आदि ने उल्लेखनीय कार्य किया। फणीश्वरनाथ रेणु ने आंचलिक कहानी लिखकर इस विधा को नई दिशा प्रदान की। सामाजिक-वैयक्तिक सम्बन्धों की व्याख्या करते हुए मध्य एवं निम्नवर्गीय व्यक्ति की अतृप्ति, कुण्ठा, निराशा और आत्महनन आदि मनोदशाओं को चित्रित करने के लिए 1954-55 के आसपास 'नयी कहानी' का आन्दोलन चला। राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, अमरकान्त, धर्मवीर भारती, रमेशबक्षी, कृष्णबलदेव वैद और रामकुमार आदि लेखकों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

आज की हिन्दी कहानी अनेक आन्दोलनों के दौर से गुजर रही है यथा साठोत्तरी कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सहज कहानी, जनवादी कहानी, लघु कहानी आदि। तेजी से बदलते राजनीतिक, सामाजिक-आर्थिक परिवेश में आज के आदमी का जीवन कितना घुटन, संत्रास, एकाकीपन, टूटन, पारिवारिक सम्बन्धों के बिखराव से त्रस्त हो गया है—आज की कहानी में इन सबका बखूबी चित्रण हो रहा है। आज की कहानी मानव के नैतिक मूल्यों के विघटन और बिखराव की कहानी है; जब समूचे समाज का जीवन संत्रास है तो कहानी आश्वस्त कैसे हो सकती है भाषा-शैली और मुहावरा भी आज के जीवन की तरह तेज-तर्रार और आकर्षक हो गया है। समग्रतः कहानी ने विकास की अनेक मंजिलें पार की हैं और भविष्य में भी नई-नई मंजिलों की ओर अग्रसर होने में सतत प्रयासशील है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी एकांकी

नाटकों की भारतीय साहित्य में एक लम्बी परम्परा रही है। संस्कृत में तो 'काव्येषु नाटक रम्यम्' कहकर नाटक को साहित्य-काव्य की सबसे रम्य विधा कहा है। हिन्दी नाटक का उदय भी भारतेन्दु युग से पूर्व ही हो गया था। भारतेन्दु युग से लेकर आज तक हिन्दी नाटकों ने अभूतपूर्व विकास किया है। समय और जीवन की बहती धारा को नाटक ने सम्यक् रीति से चित्रित किया है। हिन्दी एकांकी के जन्म, प्रचलन और विकास की कहानी को हम आज के युग से जोड़ते हैं; कुछ आलोचक इसे पश्चिम के प्रभाव का सुफल मानते हैं लेकिन आज एकांकी का जो स्वरूप हमारे सामने है, उसे न तो पूरी तरह पश्चिम की एकांकी कला का प्रतिफलन कह सकते हैं और न संस्कृत साहित्य की विकसित लम्बी परम्परा—भाण, व्यायोग, प्रहसन, ईहा-मृग, अंक, नाट्यरासक, रासक, विलासिका आदि के साथ पूर्णतः जोड़ सकते हैं, बल्कि यह कहना अधिक समीचीन होगा कि हिन्दी एकांकी का जो स्वरूप हमारे सामने है, वह बीसवीं शताब्दी की देन है। इसमें कितना अंश पश्चिम का है और कितना यहाँ का—इस विवाद को निरस्त कर इतना स्वीकार करें कि हिन्दी एकांकी न तो इस देश की प्राचीन परम्पराओं से सर्वथा विच्छिन्न है और न पश्चिम के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त, वस्तुतः परम्परा से प्राप्त इन दो सीढ़ियों पर पैर रखकर आज हिन्दी एकांकी विकास की इस मंजिल तक पहुँचा है।

विकास की दृष्टि से देखें तो हिन्दी एकांकी के सूत्र भारतेन्दु काल में ही देखने को मिल जाते हैं। स्वयं भारतेन्दु ने संस्कृत के भाषा, प्रहसन आदि के आधार पर 'धनंजय विजय', 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'अंधेर नगरी', 'विषस्य विषमौपधम्' जैसे नाटकों का प्रणयन किया था। कार्य-व्यापार की तीव्रता की दृष्टि से इन नाटकों को एकांकी के काफी करीब माना जा सकता है। काशीराम खत्री कृत 'सिन्ध देश की राजकुमारियां', 'लवजी का स्वप्न', राधाचरण गोस्वामी कृत 'अमरसिंह राठौर', 'श्रीदामा', 'सती चन्द्रावती' जैसी कृतियों को एकांकी साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा सकता है। हास्य-व्यंग्य, सामाजिक-राष्ट्रीय समस्याओं को समेटते हुए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-GRANT

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
देवकी नन्दन, बालकृष्ण भट्ट, अम्बिकादत्त व्यास, प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, किशोरीलाल गोस्वामी ने भी अनेक एकांकी लिखकर इस विधा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया।

द्विवेदी युग में सामाजिक-राष्ट्रीय चेतना जागृत करते हुए सियाराम-शरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, रामसिंह वर्मा, रूपनारायण पाण्डेय, सुदर्शन, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र आदि साहित्यकारों ने कुछ एकांकियों को प्रणयन किया अवश्य, वैसे नाटक और एकांकी के लिए यह युग अपनी कोई पहचान स्थापित नहीं कर पाया।

डा० नगेन्द्र और डा० हरदेव बाहरी जैसे आलोचकों ने प्रसादजी के 'एक घूंट' (1921 ई०) को हिन्दी का प्रथम एकांकी माना है। इसमें वैवाहिक प्रेम और स्वच्छन्द प्रेम के संघर्ष-द्वन्द्व को प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यंजित किया है। सन् 1930 में डा० रामकुमार वर्मा का प्रतीकात्मक शैली में लिखे एकांकी 'बादल की मृत्यु' के साथ एकांकी नाटकों की जैसे अजस्रधारा बह निकली।

प्रसाद युग में एकांकी साहित्य का सर्वाधिक विकास हुआ। मूल रूप से कवि डा० रामकुमार वर्मा को हिन्दी एकांकी का जनक कहा जाता है, चारु-मित्रा, विभूति, सप्त किरण, रजत रश्मि, दीपदान, ऋतुराज, रिमझिम, इन्द्रधनुष, पाँच जन्म, मयूर पंख, जुही के फूल, रूपरंग आदि। सामाजिक समस्याओं को, संघर्ष और अन्तर्द्वन्द्व को रूपायित करते हुए ऐतिहासिक एकांकियों में बलिदान, तप, त्याग, क्षमा, उदारता आदि भावों का उदासी-करण किया है। सन् 1935 के आसपास भुवनेश्वर के विसंगत शैली के लिखे 'असर', 'ताम्बे के कोड़े' आदि एकांकी काफी चर्चित हुए। 1930 से 1941 के बीच डा० रामकुमार वर्मा और भुवनेश्वर के अलावा उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचन्द्र माथुर एवं सेठ गोविन्ददास जैसे लेखकों ने एकांकी धारा को शतधा प्रवाहित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया।

'अश्क' जी ने मध्यवर्गीय समाज की विसंगतियों और रोजमर्रा की जिन्दगी को अपने नाटकों का विषय बनाया। सजीव वातावरण एवं अनुभूति की प्रामाणिकता लिए उनके अनेक एकांकी चर्चित हुए हैं यथा—सूखी
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डाल, लक्ष्मी का स्वागत, अंजो दीदी, स्वर्ग की झलक, पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ आदि। 'देवताओं की छाया में', 'चरवाहे', 'पक्का गाना', 'अंधी गली', 'साहब को जुकाम है,' आदि इनके प्रसिद्ध एकांकी संग्रह हैं।

उदयशंकर भट्ट के अभिनव एकांकी, 'स्त्री का हृदय', 'चार एकांकी', 'समस्या का अन्त', 'धूमशिखा', 'अन्धकार और प्रकाश', 'आदिम युग', 'परदे के पीछे', 'आज का आदमी', 'जवानी', 'छह एकांकी', 'सात प्रहसन' आदि अनेक एकांकी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जगदीशचन्द्र माथुर को अपने एकांकी 'भोर का तारा' पर काफी ख्याति मिली। 'खण्डहर', 'रीढ़ की हड्डी', 'ओ मेरे सपने' आदि आपके सफलतम एकांकी हैं जिनमें सामाजिक और ऐतिहासिक प्रश्नों को उठाया गया है। ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों को लेकर सेठ गोविन्ददास ने अनेक एकांकी लिखे हैं; 'बुद्ध की एक शिष्या', प्रायश्चित, स्पर्द्धा, शाप का वर आदि चर्चित एकांकी हैं। 'सप्त रश्मि', 'एकादशी', 'पंचभूत', 'चतुरापथ' आदि एकांकी संग्रह हैं। गांधीवादी आदर्श की पृष्ठभूमि पर जीवन के यथार्थ संघर्ष को, मानवीयता के प्रति सहज आस्था को, संवेदना को नयी दिशा देते हुए विष्णु प्रभाकर के अनेक एकांकी संग्रह प्रकाशित हुए हैं, यथा—'ये रेखाएं ये दायरे', 'प्रकाश और परछाईं', 'इंसान', 'बारह एकांकी', 'क्या वह दोषी था', 'दस बजे रात', एवं 'ऊँचा पर्वत गहरा सागर' आदि।

रंगमंच का भरपूर उपयोग करते हुए डा० लक्ष्मीनारायण लाल के प्रसिद्ध एकांकी संग्रह हैं—'अशोक वन', 'एक दिन', 'प्रलय के पंख', 'माटी के रंग' आदि।

आज का एकांकी ऐसी सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है जिसका भंडार नित-नूतन रचनाओं से समृद्ध हो रहा है। आज के चर्चित एकांकीकारों में प्रमुख हैं—भगवतीचरण वर्मा, जैनेन्द्र कुमार, हरिकृष्ण प्रेमी, सत्येन्द्र, सद्गुरु शरण अवस्थी, पृथ्वीनाथ शर्मा, सूर्यनारायण पारीक, एस० पी० खत्री, धर्मवीर भारती, भारतभूषण अग्रवाल, सिद्धनाथ कुमार, अमृतलाल नागर, विनोद रस्तोगी, लक्ष्मी कान्त वर्मा, नरेश मेहता, मुद्राराक्षस, विपिन अग्रवाल, सत्येन्द्र शरत्, चिरंजीत, देवराज दिनेश, कणादऋषि भटनागर, देवेन्द्रनाथ शर्मा, देवतीशरण शर्मा, सुरेन्द्र वर्मा आदि।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज का एकांकी साहित्य जीवन की समस्याओं को, संघर्ष-अन्तर्द्वन्द्व को, सफलता-विफलता को अनेक कोणों में विश्लेषित कर रहा है; जीवन का, समाज का कोई अंग अछूता नहीं बचा है। लेखक की सूक्ष्म भेदी दृष्टि सब ओर गमन कर कुछ नया, कुछ समुन्नत प्रस्तुत करने में व्यग्र है; सभी अपने-अपने तरीकों से साहित्य की श्रीवृद्धि कर रहे हैं।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रचनाकार और रचना

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी (धर्म की आड़)

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी का जन्म इलाहाबाद में सन् 1890 ई० में कायस्थ परिवार में हुआ। पिता श्री मुंशी जयनारायण ग्वालियर रियासत में मुंगावली नगर के एंग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल के मुख्याध्यापक थे। प्रारम्भिक छात्र जीवन मुंगावली स्कूल से शुरू किया, 1905 ई० भेलसा से अंग्रेजी मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की, 1907 में एंट्रेंस पास करने के बाद इलाहाबाद कायस्थ पाठशाला में अध्ययन हेतु चले गए। यहीं आपको साप्ताहिक 'कर्मयोगी' नामक पत्र में काम करने का अवसर मिला; यहीं से आपके पत्रकार जीवन की शुरुआत हुई। पत्रकारिता को जीवन का लक्ष्य बनाकर चलनेवाले विद्यार्थीजी में स्वतन्त्र चिन्तन-मनन का बीज तो अंकुरित हो ही चुका था, इसी बीच सन् 1908 में कानपुर के करेंसी कार्यालय में तीस रुपये महावार की नौकरी मिल गई लेकिन अंग्रेज अधिकारी के साथ स्वतन्त्रचेता विद्यार्थी जी की ज्यादा नहीं पट पाई, 1910 ई० में नौकरी छोड़कर आप वहीं पृथ्वीनाथ हाई स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगे।

अध्यापन कार्य करते हुए भी पत्रकारिता के प्रति आपका झुकाव और लगाव बना रहा; अन्दर का चिन्तनशील मन और अभिव्यक्ति को आकुल भाव जगत निरन्तर कुछ करने के लिए कुलबुलाता रहा। सन् 1911 ई० का वर्ष विद्यार्थी जी के जीवन में एक नया सन्देशा लेकर आया; सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ आप 'सरस्वती' में सहायक नियुक्त हो गए; आचार्य द्विवेदी जैसे व्यक्तित्व के सान्निध्य में आपके पत्रकार व्य-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को इच्छित कार्य क्षेत्र मिल गया, आपकी प्रतिभा में निखार आने लगा। कुछ समय तक 'अभ्युदय' के सम्पादकीय विभाग में कार्य करने के बाद आपने कानपुर से अपना साप्ताहिक पत्र 'प्रताप' प्रकाशित करना शुरू कर दिया। देश-समाज की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक स्थितियों पर आपने खूब जमकर लिखा। धीरे-धीरे 'प्रताप' लोकप्रिय बनता चला गया। सफल पत्रकार के रूप में विद्यार्थी जी का सर्वत्र गुणगान होने लगा। सात वर्ष तक साप्ताहिक के रूप में चलने के बाद 'प्रताप' सन् 1938 में दैनिक रूप में प्रकाशित होने लगा।

विद्यार्थी जी जितने बड़े समाज सुधारक पत्रकार थे उतने ही निर्भीक, स्पष्टवक्ता देशभक्त भी थे। 'प्रताप' में प्रकाशित इनके सम्पादकीय लेखों से अंग्रेज सरकार तिलमिला उठती थी, इसलिए आपको कई बार जेलयात्रा भी करनी पड़ी। जेलयात्राओं में आपने विक्टर ह्यूगों के 'ला मिजरे बिल्स' और 'नाइंटी थ्री' नामक उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद दिया।

25 मार्च 1931 ई० को कानपुर में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे; देश का, पत्रकार जगत का दुर्भाग्य, साम्प्रदायिकता की आग में एक सच्चा देशभक्त, प्रतिभाशाली सम्पादक, देश-समाज की कुरीतियों को अपनी कलम की तलवार से काटनेवाला मसीहा जल गया; पता नहीं क्यों समाज-देश को कुरीति-आडम्बर, पराधीनता से निकालकर सुख-वैभव-सम्पन्नता की दिशाओं में ले जानेवाला अग्रदूत इतनी जल्दी भारत से छिन जाता है! सच, उस दिन भारत का एक वीर सपूत सो क्या गया, सब ओर सूनापन और रिक्तता छोड़ गया।

विद्यार्थीजी ने सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, नैतिक आदि अनेक विषयों पर लेख लिखे। 'गणेशशंकर विद्यार्थी के श्रेष्ठ निबन्ध' नाम से आपके लेखों का संग्रह प्रकाशित हो चुका है। 'राष्ट्र की आशा', 'धर्म की आड़', 'राष्ट्रीयता', 'मानव स्वत्व', कर्मक्षेत्र, 'सार्वजनिक सदाचार', 'पत्रकार का दायित्व', 'हमारे जातीय जीवन के दोष' आदि निबन्ध विषयवस्तु, भाव, कथ्य और भाषा की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। सरल, मुहावरेदार और चुभती शैली में महीन मार करती भाषा, जीवन-जगत के संघर्षों-द्वन्द्वों को नए आयाम प्रदान करते भाव और कथ्य, स्पष्ट बयानी, प्रवाहपूर्ण शैली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपके निबन्धों की अप्रतिभ विशेषताएँ हैं।

अपने थोड़े से जीवनकाल में गणेशशंकर विद्यार्थी ने जो किया, जितना लिखा, जैसा लिखा वह इतना अप्रतिभ और संग्रहणीय है, काश ! वे कुछ और जीते तो पता नहीं मां भारती का भंडार कितने अनूठे ग्रंथों से भरा होता।

धर्म कीआड़—प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने धर्म, ईमान और उसके नाम पर अपना स्वार्थ पूरा करने वाले लोगों की घृणित प्रवृत्ति पर बड़ी सूक्ष्मता से विचार किया है। लेखक मानता है कि चन्द पढ़े-लिखे चालाक लोग साधारण जनों की अंधी धार्मिक भावनाओं को उभारकर अपना नेतृत्व और बड़प्पन रखना चाहते हैं। धर्म और ईमान की रक्षा के नाम पर प्राण देने को वाजिब मानने वाले साधारण जनों के विश्वास के आधार पर लोग दुनिया भर के दंगे फसाद करवाते हैं; अपनी हीन स्वार्थ सिद्धि के लिए करोड़ों आदमियों की शक्ति का दुरुपयोग करते हैं; धन की मार के साथ-साथ बुद्धि की मार भी करते हैं।

लेखक कहता है कि धर्म-ईमान के नाम पर होने वाले इस भीषण अत्याचार को दृढ़ता से रोकने पर ही साम्प्रदायिक दंगे कम हो सकते हैं। धर्म-ईमान मन का सौदा है, कोई किसी भी तरीके से ईश्वर-खुदा की पूजा-अर्चना करे; कोई किसी की स्वतन्त्रता में टांग क्यों अड़ाए ? देश के स्वाधीनता संग्राम में मुल्ला-मौलवी या धर्माचार्यों को प्रमुख स्थान देने से ही आज मजहबी पागलपन का फल हम भोग रहे हैं।

लेखक महात्मा गांधी के धर्म के स्वरूप को स्पष्ट करता हुआ कहता है कि गांधी जी का धर्म शुद्धाचार और सदाचार पर टिका है। दो घंटे पूजा और पांच वक्त की नमाज पढ़कर भी बेईमानी, पाप, हिंसा आदि करते हैं तो आनेवाला समय माफ नहीं करेगा। शुद्ध आचरण ही धर्म है। धर्म-ईमान सबका कल्याण करने वाला हो। धर्म-ईमान को मानने वाले ही अगर साम्प्रदायिक दंगे-फसाद कराते हैं तो नास्तिक उनसे अच्छे हैं। लेखक कहता है कि ईश्वर को मानने या न मानने से उसका ईश्वरत्व कम नहीं होता; सच्चे रूप में ईश्वर को मानना है तो दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस लेख में लेखक धर्म-ईमान के नाम पर दंगे-फसाद, आडम्बर आदि को छोड़कर सच्ची मनुष्यता को स्वीकारने का आग्रह करता है।

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन (धन और उसका सदुपयोग)

राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास टंडन का जन्म सन् 1882 ई० में इलाहाबाद के अहियापुर क्षेत्र में हुआ। वकालत पास करने के बाद सन् 1917 ई० में आप नाभा राज्य के दीवान हो गए पर नाभा नरेश से मतभेद हो जाने के कारण नौकरी छोड़कर इलाहाबाद लौट आए और उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। उस समय समूचा देश आजादी के संघर्ष में प्राण-प्रण से जुटा हुआ था। भला देशभक्ति में उफनते ज्वार को पुरुषोत्तम जैसा संवेदनशील, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति अनदेखा कैसे कर सकता था! आप भी पूरी निष्ठा के साथ स्वतन्त्रता संग्राम में उतर पड़े और शीघ्र ही राष्ट्र के प्रमुख नेताओं के सम्पर्क में आकर स्वतन्त्रता के अग्रणी योद्धाओं में शामिल हो गए। अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद को आपने सुशोभित किया। आप आजीवन देश और हिन्दी की सेवा में विरत रहे। देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़कर भी आपके मन में हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम बना रहा। हिन्दी भाषा और साहित्य की प्रगति को ध्यान में रखते हुए आपने अपने आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से जोड़ लिया और जीवन के अन्तिम क्षणों तक आप सम्मेलन के प्रमुख प्रेरणा केन्द्र बने रहे। उत्तर प्रदेश राज्य सभा के अध्यक्ष रहे, इस काल में आपके प्रयासों से हिन्दी ने प्रभूत उन्नति की। राष्ट्रभाषा को लेकर उठे विवादों में आपने सदैव हिन्दी का समर्थन किया, इस मामले में किसी प्रकार का समझौता उन्होंने नहीं किया। वस्तुत: राजर्षि टंडन राजनीति की भाषा और प्रकृति को हिन्दी की ओर मोड़ने वाले ऐसे महापुरुष हैं जिनका नाम हिन्दी साहित्याकाश में अनन्तकाल तक स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। आप हिन्दी के जीवन प्रतीक थे। सन् 1962 ई० में आपका देहावसान हुआ, हिन्दी भाषा और साहित्य का देदीप्यमान एक सूरज कहीं दिशाओं में खो गया लेकिन उसकी किरणें शाश्वत भाव से हिन्दी के राजपथ को आलोकित करती रहेंगी—यह आश्वासन ही हिन्दी का भाग्य है।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजनीति में रहकर तो टंडन जी ने हिन्दी के महारथ को राष्ट्रभाषा के पद तक पहुंचाया ही, स्वयं साहित्य सृजन कर मां सरस्वती के भंडार में अतिशय वृद्धि की। पं० बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित 'हिन्दी प्रदीप' में आपके अनेक निबन्ध अनेक विषयों पर प्रकाशित हुए। कवि की प्रतिभा, स्वतन्त्रता, दशहरे की भेंट, देश की अवनति, बहस करने के जुदे-जुदे ढंग, करतूती कहि देत आप कहिये नहिं साईं, काहिलों की जिन्दगी और उनकी दिनचर्या, बन्दर सभा, महाकाव्य आदि निबन्ध विशेष उल्लेखनीय हैं। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक विषयों पर आपने प्रवाहपूर्ण भाषा और सहज, सरल शैली में निबन्ध लिखे हैं। विषय का प्रतिपादन इतना सहज और गम्भीर होता है कि पाठक को उनसे सहमत होना ही पड़ता है।

धन और उसका सदुपयोग —वर्णनात्मक और तथ्यपरक शैली में लिखे इस निबन्ध में टंडनजी ने धन की सही व्याख्या करते हुए उसकी सुखपूर्ण उपयोगिता पर गम्भीर विचार प्रकट किए हैं। 'धन' की व्याख्या करता लेखक कहता है कि धन का अर्थ केवल रुपया, पैसा, सोना, चाँदी, हीरा, मोती आदि ही नहीं होता; धन का अर्थ है वह पदार्थ जिसके बदले में हम कोई मनोवांछित वस्तु खरीद सकें। धन रूपी मंत्र को सिद्ध कर मनुष्य दूसरों की शक्ति को अपने बस में कर लेता है। अगर मंत्र की सिद्धि करके भी उससे काम न लिया जाये तो वह व्यर्थ है, उसी प्रकार धनोपार्जन करके भी उससे काम न लिया जाए तो वह व्यर्थ हो जाता है। लेखक कहता है कि सोना-चाँदी आदि पदार्थों को मनुष्य ने वह शक्ति दे दी है कि कहीं भी जाकर उससे मनोवांछित पदार्थ प्राप्त किए जा सकते हैं। अर्थात् सोना-चांदी, रुपया-पैसा आदि विनिमय के साधन मात्र हैं। पुराने समय में 'गोवंश' से भी सोना-चांदी के समान विनिमय का काम लिया जाता था। प्राचीनकाल में गाय, भैंस, बैल, बकरी आदि 'धन' ही माने जाते थे और उन्हीं को देकर दूसरी वस्तुएँ प्राप्त कर ली जाती थीं।

अपने जीवन को अधिक से अधिक सुखी बनाने के लिए मनुष्य धन का उपयोग किस प्रकार करे, इस पर विचार करता हुआ लेखक कहता है कि मनुष्य की सबसे पहली आवश्यकता भोजन है; भोजन के लिए अन्न चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धन की पहली उपयोगिता है। शरीर की मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करने वाले भोजन पर व्यय करना धन का सदुपयोग है, भोजन केवल जीभ के स्वाद के लिए नहीं, शरीर-मन को हृष्ट-पुष्ट करने के लिए हो।

धन की दूसरी उपयोगिता आवश्यकतानुसार उपयुक्त वस्त्र पहनने में है। मनुष्य की अपनी तीसरी आवश्यकता कुछ ऐसे व्यवसाय सीखने आदि की है जो उसके लिए भोजन-वस्त्रादि के लिए धन जुटा सके; ऐसे उपयोगी व्यवसाय में धन लगाना उसकी उपयोगिता है।

ज्ञान की जिज्ञासा और उसकी पूर्ति करना मनुष्य की चौथी आवश्यकता है, इस जिज्ञासा की पूर्ति के लिए पुस्तकें आदि खरीदना, गुरु दक्षिणा आदि देना धन का सदुपयोग है।

शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम, आमोद-प्रमोद, पर्यटन आदि करना अच्छा है। मनोरंजन और ज्ञान प्राप्त कर मानसिक भोजन से जो सुख मिलता है वह भोजन आदि करके शारीरिक सुख से अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है, इस हेतु धन लगाना भी धन का सदुपयोग है। धन उपार्जन के साधनों में धन लगाना धन का उपयोग है; अपने लिए तथा कुटुम्ब के लिए धन इकट्ठा करना भी धन का सदुपयोग है। सुखपूर्वक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर बचे हुए धन को जोड़ना ही श्रेयस्कर है। लेखक कहता है कि बचे हुए धन को अपनी सुख-पूर्ति में लगाने के साथ-साथ अन्य मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति में भी लगाना चाहिए, इससे एक आत्मिक सुख प्राप्त होता है। धन की सातवीं उपयोगिता इसी में है कि वह दूसरों के सुख के लिए भी उसका उपयोग करे। लेखक कहना चाहता है कि वह दूसरों के लिए तो धन है ही, पर-सुख और परहित में किया धन का उपयोग ही सच्चा उपयोग है। दूसरों की सहायता करने, उन्हें सुखी बनाने में भी बड़ा आनन्द मिलता है।

बनारसोदास चतुर्वेदी (साबरमती आश्रम में महात्माजी)

पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रणी श्री बनारसीदास चतुर्वेदी का जन्म

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में सन् 1892 ई० में हुआ। फिरोजाबाद से शिक्षा ग्रहण करने के बाद आपने इन्दौर के डेली स्कूल में अध्यापक के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन शुरू किया।

चतुर्वेदीजी शुरू से ही साहित्यिक प्रतिभा के धनी रहे। अध्ययन कार्य करते हुए साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक विषयों पर निबन्ध लिखने आरम्भ किए। गम्भीर विषय विवेचन के कारण आप शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गए। प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को लेकर आपने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में खूब लिखा। स्वतन्त्र लेखन की ओर सहज झुकाव होने के कारण डेली स्कूल की अध्यापकी छोड़कर आप पूरी तरह लेखन में व्यस्त हो गए। प्रवासी भारतीयों को लेकर आपने जो लिखा उससे गांधीजी बहुत प्रभावित हुए, उन्होंने प्रवासी भारतीयों के लिए कार्य करने के उद्देश्य से आपको शान्ति-निकेतन से बुलाकर पहले तो बम्बई रखा और बाद में गुजरात विद्यापीठ में हिन्दी पढ़ाने के लिए साबरमती बुला लिया, यहाँ चार साल तक गांधीजी के सानिध्य में रहकर प्रवासी भारतीयों की समस्याओं पर सारे संसार का ध्यान आकर्षित किया। इन्हीं दिनों आपका सम्पर्क सी० एफ० ऐण्ड्रयूज, श्री पोलक जैसे लोगों से हुआ। शान्ति निकेतन में रहते हुए आप रवीन्द्रनाथ ठाकुर के भी निकट सम्पर्क में आए थे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में चतुर्वेदीजी का अन्यतम स्थान है। कलकत्ता से प्रकाशित 'विशाल भारत' के आप दस वर्ष तक सम्पादक रहे; टीकमगढ़ से प्रकाशित 'मधुकर' नामक पत्र का भी आपने सम्पादन किया। वैसे तो पत्रकार ही प्रायः समझौतावादी दृष्टिकोण नहीं अपनाते, जहाँ कहीं भी बुराई है, समाज राष्ट्र विरोधी है, सच्चे पत्रकार की कलम उसके लिए जरूर उठती है; इस दृष्टि से चतुर्वेदीजी आदर्श हैं। प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को आपने पत्रों के माध्यम से खूब उजागर किया। पत्रकार होने के साथ-साथ चतुर्वेदीजी सशक्त संस्मरण और रेखाचित्र साहित्य की संरचना करने वाले साहित्यकार हैं। सरल लेकिन तत्वदर्शिनी शैली में जीवन के विविध सुख-संघर्षमय पक्षों को उजागर करने में आपका जवाब नहीं है। राज्य सभा के सदस्य होकर आपने हिन्दी की भरपूर वकालत की वस्तुतः चतुर्वेदी

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे वरिष्ठ, कर्मठ साहित्य सेवियों के दम पर हिन्दी का महारथ घर-घराता हुआ नई-नई भाव-भूमियों का स्पर्श करता हुआ समृद्धि को प्राप्त कर रहा है।

साबरमती आश्रम में महात्माजी—गांधी जी कितने दूरदर्शी चिन्तक, तत्वान्वेषी एवं परिहास प्रिय थे, इसकी एक सूक्ष्म झाँकी इस संस्मरण में देखने को मिलती है; भाषा का सौन्दर्य और उपमानों का सही चयन कर तथ्यों को किस प्रकार सुग्राह्य बना दिया जाता है, यह लेख इसके लिए आदर्श है। गांधीजी के बारे में लेखक का कथन देखिए—

'महात्माजी में पर्वत श्रेष्ठ आल्पस और नगाधिराज हिमालय दोनों के गुण विद्यमान थे। वे निकट से भी उतने ही मनोहर थे, जितने दूर से।" प्रवासी भारतीयों के लिए कार्य करने के उद्देश्य से गांधीजी लेखक श्री चतुर्वेदी को शान्ति निकेतन से बुला लेते हैं, यहाँ लेखक को चार साल तक साबरमती में गांधीजी के साथ रहने का सुअवसर मिलता है। लेखक सरकार के साथ सहयोग नीति अपनाकर काम करते हैं, इसमें गांधीजी की भी सहमति थी।

26 जनवरी 1922 को बारडोली जाने से पूर्व गांधीजी ने अपने एक प्रवचन में कहा कि उन्होंने पहले से अधिक अपनी विषय-वासनाओं पर काबू पा लिया है। उन्होंने कहा कि पूर्ण सत्य, पूर्ण अहिंसा और पूर्ण ब्रह्मचर्य तो सिद्धान्त है, इसे आदर्श मानकर अधिक से अधिक उसकी ओर बढ़ें। पूर्ण ब्रह्मचारी बीमार नहीं पड़ता, बीमार होना किसी पाप का ही परिणाम है। लेखक आगे कहता है कि उस दिन गांधीजी एक घण्टे तक प्रवचन करते रहे, अंत में उन्होंने प्रोफेसर वासवानी की एक पुस्तक का उल्लेख करते हुए कहा कि राणा प्रताप को मरते समय यही चिन्ता थी कि उनके चले जाने के बाद लोग ऐश-आराम में पड़कर अपनी स्वाधीनता न खो दें।

गांधीजी ने राणा प्रताप का उदाहरण देते हुए समझाया कि राणा प्रताप जैसे देश भक्त संसार में बहुत कम हैं, पर हमारा उद्देश्य उनसे कुछ बड़ा और भिन्न है। राणा प्रताप राज्य की स्वाधीनता के लिए लड़ रहे थे, हम लोग तो सम्पूर्ण भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे हैं।

बारडोली जाते समय उन्होंने कहा कि मेरा यही [illegible] है,

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

हो सकता है मैं ब्रिटिश सरकार की गोली से मारा जाऊँ; यह बना-बनाया आश्रम तुम्हें सौंपता हूँ, संयमपूर्वक रहकर व्यक्तिगत और सामुदायिक उन्नति करें।

लेखक लिखता है कि एक दिन मैंने महात्माजी से पूछा कि यह आशा आप कैसे करते हैं कि अकेले बारडोली में संग्राम करके आप पूरे देश को स्वतन्त्र कर देंगे। गांधीजी ने सटीक उत्तर दिया कि हम तो सीली दियासलाई की तरह हैं, एक जल गयी तो सबसे आग जलाई जा सकती है।

गांधीजी सदा गम्भीर ही नहीं रहते थे, मजाक भी खूब किया करते थे। एक बार जब लेखक ने प्रवासी भारतीयों के लिए बहुत सारे पत्र लिख डाले तो गांधीजी ने चुटकी लेते हुए कहा कि लड़वैया का यही काम थोड़े ही है कि बराबर गोली चलाता रहे, कभी-कभी गोली बारूद का संग्रह भी करना चाहिए। गांधीजी कहना चाहते थे कि पत्र लिखने के साथ-साथ उसका पूरा-पूरा रिकार्ड भी रखना चाहिए।

इस प्रकार लेखक बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपने इस संस्मरण में गाँधीजी के जीवन के कई पहलुओं को उजागर किया है: साबरमती आश्रम से जुड़ी अपनी यादों का लेखक ने रोचक शैली में वर्णन किया है। गांधीजी के कथनों पर अपनी टिप्पणियां देते हुए लेखक ने उसे अधिक सम्प्रेषणीय, ग्राह्य और सहज बना दिया है। साहित्यिकता का पुट लिए भाषा सहज, सरल, प्रांजल और विषयानुरूप है। चतुर्वेदीजी का यह संस्मरण विधा की सभी विशेषताओं से युक्त है।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार (मास्टर साहब)

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार का जन्म सन् 1906 ई० में पंजाब (अब पाकिस्तान) के कोट अद्दू नामक स्थान पर हुआ; शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। वहीं से विद्यालंकार उपाधि प्राप्त की। शिक्षित परिवार का प्रभाव और गुरुकुल के साहित्यिक वातावरण ने इनके अन्दर भी साहित्यिकता के बीज बो दिये; कहानी, निबन्ध आदि लिखने प्रारम्भ किये। पहली कहानी 'विशाल भारत' में सन् 1928 में प्रकाशित हुई, तभी से लिखने और छपने

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का सिलसिला अनवरत रूप से चलता रहा है। 'आजकल' नामक मासिक पत्रिका का कई वर्षों तक सम्पादन किया।

स्वतन्त्रचेता विद्यालंकार जी ने अनेक विधाओं में लिखा है। 'अशोक,' 'रेवा', 'देव और दानव', 'कौस्मोपोलिट क्लब' आदि आपके प्रसिद्ध नाटक हैं; 'तीन दिन', 'चन्द्रकला', 'भय का राज्य', 'अमावस' आदि प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं तथा 'आजकल', 'कुछ प्रश्न', 'मानव जाति का संघर्ष और प्रगति' विविध विषयों पर लिखी ऐसी कृतियाँ हैं जिन्होंने आपके बहुआयामी लेखन को उजागर किया है। विद्यालंकारजी नाटककार, कहानीकार और निबन्धकार होने के साथ-साथ पत्रकार भी हैं, इसलिए मानव जीवन के दुख-द्वन्द्व, संघर्षों का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण तो आपकी रचनाओं में है ही, पत्रकारिता की बेबाक बयानी, वर्णनात्मकता और स्पष्टवादिता भी पूरी ईमानदारी से उनमें अनुस्यूत है।

आपकी अधिकांश कहानियों के कथानक यथार्थ जीवन की घटनाओं पर आधारित हैं; सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा मुख्य पात्रों के मानसिक संघर्षों, भावनाओं के उतार-चढ़ाव का आपने बखूबी चित्रण किया है; वर्णनात्मकता में प्रेमचन्द का प्रभाव अंकित किया जा सकता है। भाषा के आप कलाकार हैं। भावनाओं और घटना-प्रवाह के अनुसार आपकी भाषा भी अनेक तेवर ग्रहण करती चलती है। स्थिति को उभारने और प्रभुविष्णुता को गति देने में प्राकृतिक चित्रण की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी के अनुरूप भाषा कहीं तत्सम प्रधान है तो कहीं तद्भव प्रधान। कथानक की माँग के अनुरूप ही वातावरण निर्माण में आप पारंगत हैं।

मास्टर साहब—यह कहानी चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की प्रतिनिधि रचना है। इसमें लेखक ने देश विभाजन और उससे जुड़ी संवेदनाओं का बहुत मार्मिकता के साथ चित्रण किया है। साम्प्रदायिकता और मजहब की ऊँची भावनाओं का शिकार होकर आदमी दानव बन जाता है लेकिन भावना का हल्का-सा झोंका उसे मानवीयता के बहुत करीब ले जाता है। देश विभाजन के समय बूढ़े मास्टर रामरतन का सबकुछ स्वाहा हो जाता है: परिवार के बड़े और बच्चे अंधी मजहबी घृणा के शिकार हो जाते हैं। पडौसी गाँव के जमींदार गुलाम रसूल के नेतृत्व में मुसलमानों का एक बड़ा दल मास्टर

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
साहब के गाँव पर आक्रमण करता है; बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू-सिखों को मार देते हैं, नौजवान लड़कियों को अपने साथ ले जाते हैं। मास्टर रामरतन की पोती निम्मो भी इन लड़कियों में शामिल है। जो मर गये, वे तो मर गये पर पता नहीं उनकी पोती निम्मो पर क्या गुजर रही होगी, इस आकांक्षा में मास्टर रामरतन चिन्तित हो उठे। कई दिन की भाग-दौड़ के बाद उन्हें गुलाम रसूल का पता चला, प्राणों की बाजी लगाकर मास्टरजी गुलाम रसूल के पास जाते हैं। कहानी उस समय मार्मिक मोड़ ले लेती है जब गुलाम रसूल अपने मास्टर रामरतन को पहचान लेता है। वहीं उसे अपनी पोती निम्मो भी सुरक्षित मिल जाती है। यह संस्कार का प्रभाव ही है कि गुलाम रसूल का चार वर्षीय पुत्र निम्मो को अपनी बड़ी बहिन मान लेता है। भावनाओं के उद्रेक में रामरतन रो उठते हैं, भाववेश में गुलाम रसूल मास्टर को छाती से लगा लेता है। वह आश्वासन देता है। धीरज से काम लो, मास्टर साहब। तुम्हें कोई भय नहीं है। निम्मो के साथ मेरी हिफाजत में तुम चाहे जहाँ जा सकोगे।

कथ्य की दृष्टि से कहानी बहुत मार्मिक है। लेखक का उद्देश्य न तो हिन्दुस्तान-पाकिस्तान विभाजन की पीड़ा को उजागर करना है, और न साम्प्रदायिक विद्वेष को तूल देकर उभारना है। वह तो भारत-विभाजन के समय हुई पाश्विकता की कीचड़ से मानवता का कमल उगाना चाहता है लेखक कहना चाहता है कि परिस्थितियाँ व्यक्ति को जघन्य कृत्यों की ओर प्रेरित करती हैं लेकिन एक समय ऐसा भी आता है जब भावनाएँ परिस्थिति पर हावी हो जाती हैं, और वहीं से मानवता का अंकुर फूट पड़ता है। आततायी और आक्रमणकर्ता गुलाम रसूल का सारा अहं, सारी पाश्विकता मास्टर रामरतन के सामने पिघल जाती है, शिष्य के अन्दर अपने गुरु का आदर भाव जागृत हो जाता है। गुलाम रसूल काफिर होते हुए भी मास्टर रामरतन को छाती से लगा लेता है, उनका सारा भय और संत्रास-पीड़ा को हर लेता है।

कहानी का अन्त अप्रत्याशित भी है और मार्मिक भी। पाठक काफी देर तक बेबस-सा भावनाओं में डूबा रह जाता है। कहानी की भाषा वातावरण निर्माण करने में पूरी तरह समर्थ है। वातावरण के अनुसार भाषा

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं वर्णनात्मक शैली में है तो वही आत्म विवेचन परक शैली में साहित्य-कता, सहज प्रवाह, कोमलता भाषा के सहज गुण हैं।

रामविलास शर्मा (निराला : जीवन की सार्थकता का प्रश्न)

प्रगतिशील विचारक, अद्भुत प्रतिभासम्पन्न कवि-आलोचक डा० राम-विलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के 'ऊँच गाँव सानी' नामक गाँव में 10 अक्टूबर सन् 1910 ई० को हुआ। लखनऊ विश्व-विद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम० ए०, पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। सन् 1938 से 1942 तक लखनऊ विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक रहे, बाद में 1643 से 1974 ई० तक आगरा के बलवन्त राजपूत कालेज के अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक रहे। अंग्रेजी साहित्य में अध्येता होते हुए भी हिन्दी के प्रति आपका अगाध स्नेह रहा है; कवि और आलोचक के रूप में आप निरन्तर ख्याति प्राप्त करते चले गये हैं। 'तार सप्तक' में एक कवि के रूप में सामने आये, पर आपकी पहचान आलोचना क्षेत्र में अधिक रही है। परम्परागत कलावादी समालोचना पद्धति से हटकर मार्क्सवाद की यथार्थवादी समा लोचना पद्धति को हिन्दी में प्रस्थापित करने का आपको श्रेय जाता है. आज आप इस शैली के सर्व-श्रेष्ठ समालोचक माने जाते हैं। अपने विचारोत्तेजक निबन्धों द्वारा भी हिन्दी समीक्षा को नयी दिशाएँ प्रदान की हैं। सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों ही समीक्षा पद्धतियों से अपने विचारों को पुष्ट करने का स्तुत्य कार्य आपने किया है। 'हंस' के कविता विशेषांक का और आगरा से प्रकाशित 'समालोचना' नामक पत्रिका का सम्पादन बड़ी योग्यता और कुशलता से किया है।

आपकी अनेक समालोचनात्मक एवं अन्य कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा, प्रेमचन्द और उनका युग, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भाषा और समाज, महावीरप्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, भारत की भाषा समस्या, नयी कविता और अस्तित्ववाद, प्रगति और परम्परा, [illegible] सन् 57 की राज्यक्रान्ति (इतिहास) आस्था और सौंद

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(निबन्ध) चार दिन (उपन्यास), रूप तरंग (कविता संग्रह) आदि; यूँ तो डा० शर्मा की प्रत्येक कृति अपने आपमें महत्वपूर्ण है पर सबसे अधिक ख्याति आपको 'निराला की साहित्य साधना' (तीन भागों में) नामक आलोचना ग्रन्थ से मिली। इन ग्रन्थों में डा० शर्मा ने निराला को सही रूप और अर्थों में देखा, परखा और व्याख्यायित किया है : काश ! इतना समर्थ आलोचक निराला को उनके जीवनकाल में मिल गया होता तो निराला को इतनी उपेक्षा, अभाव, संत्रास और द्वन्द्व न भोगना-झेलना पड़ता : इस आलोचना कृति से निराला को फिर से देखने-समझने का मौका हिन्दी साहित्य को मिला है। डा० शर्मा के कारण निराला आज साहित्य क्षेत्र के टिमटिमाते लघु दीपक नहीं, विस्तृत गगन के प्रखरतम आभावाले भास्कर हैं जिसके उदय होने पर उडुग की चमक धुंधली किंवा लुप्तप्राय हो जाती है।

डा० शर्मा की भाषा विषयानुरूप सरल भी है, गम्भीर भी है, हास्य-व्यंग्यमयी है तो कवित्व की छटा बिखेरती भी है। बात की स्पष्टता और चिन्तन की गहराई सर्वत्र विद्यमान रहती है; विचारों की क्रमबद्धता के कारण आप पाठकों के हृदय में सीधे प्रवेश करते चले जाते हैं। छियत्तर वर्ष की आयु में भी आप निरन्तर माँ भारती के अनन्य पुजारी की तरह साधना-रत हैं; ईश्वर आपको शतायु करे।

निराला : जीवन की सार्थकता का प्रश्न—'निराला की साहित्य साधना' भाग-1 से लिये गये इस अंश में आशा-निराशा में इसने कवि के मानसिक द्वन्द्व का मार्मिक चित्रण किया है। पुत्री सरोज की मृत्यु के आघात से निराला विचलित हो उठे थे; जीवन की सार्थकता-निरर्थकता का प्रश्न उनके सामने आ खड़ा हुआ।। नौकरी छोड़कर साहित्य सेवा में पेट के लाले ही रहे, आलोचना और बदनामी अलग से। बिन माँ की बच्ची सरोज को निराला कुछ भी न दे सके, वही उनकी कविता का सौन्दर्य थी, कल्पना थी, वही सरोज तिल-तिल करके गल गई, जैसे निष्ठुर बाप निराला कुछ भी न कर सके—हाँ उनका जीवन पुत्री के बिना सूना और अर्थहीन हो गया था। उन्होंने मन के सारे उद्वेग, निराशा-आशा, भावनाओं को समेटकर लिखी एक कविता—'सरोज स्मृति'। कवि की सारी दुखगाथा 'सरोज स्मृति' में समा गई, उसे लिखकर निराला कुछ अश्रुतिरेक ही पाये थे। कुछ

© Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिखने को उनका मन हुआ। देश, हिन्दी, निराला—ये तीनों उनकी चेतना में घुस गये। अकर्मण्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए उद्बोधन गीत लिखे। धरती और गगन में ज्ञान-आनन्द की धारा बहाने के लिए कल्पना चित्र बनाये। निराला आस्था-विश्वास के गीत लिखने पर मन का संशय, असह्य वेदना और यथार्थ-बोध उनकी आस्था को तोड़ देते। निराला सोचते कि 'पद राग रंजित मरण' उन्हें त्राण देगा; इसी मृत्यु ने उन्हें जीने का संघर्ष और शक्ति दी। लांछन की अग्नि विकट प्रेरक शक्ति बनकर उनके जीवन में आई; आस्था-अनास्था के संघर्ष के बाद अन्तर की शक्ति बटोर कर निराला ने क्षुब्ध मन को शान्त किया।

साहित्यिक समारोहों में निराला अपनी धाक जमा देते थे। मोरावां के साहित्य समारोह में एक वक्ता ने लेख पढ़ते हुए कह दिया कि आधुनिक हिन्दी कविता में अच्छा प्रकृति चित्रण नहीं है; निराला ने चुनौती देते हुए 'जुही की कली' कविता सुनाई; बाद में उनके साथ आये कवि प्रदीप ने हल्दी घाटी की ओजपूर्ण रचना सुनाई। निराला की हँसी उड़ानेवाले कवियों का रंग फीका पड़ गया, श्रोताओं ने करतल ध्वनि से निराला की कविता का स्वागत किया।

सरोज की मृत्यु के बाद निराला ने दुलारे लाल भार्गव से अपने संबंध तोड़ लिए; निराला की प्रतिभा का उसने उचित मूल्य चुकाया होता तो सरोज की मृत्यु न होती। 'गीतिका' को उन्होंने भार्गव से लेकर बाद में लीडर प्रेस से छपवाया।

सन् 1935-36 में निराला ने कविता सुनाना बन्द कर दिया था। कवि पन्त और कालिदास की चर्चा करते; पन्त की कविताओं की समालोचना करते। वे हिन्दी आलोचकों को 'उजबक' मानते थे।

डा० रामविलास शर्मा द्वारा लिखे इस व्यक्तित्व बोधक निबन्ध में निराला के व्याकुल मन का हृदयस्पर्शी चित्रण हुआ है; सरोज की मृत्यु के बाद निराला के सूने मन की व्यथा को आँसुओं में डुबोकर लेखक ने लिखा है। दुख और लाँछना ने किस प्रकार कवि को संजीवी की शक्ति से भर दिया था—इसका कवित्वमय [illegible] मन को छू लेता है। संघर्षों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में तपकर ही यशस्वी कृतिकार अमर रचना करता है—निराला इसके मूर्तिमन्त प्रतीक हैं।

लेखक के संस्मरणात्मक शैली में निराला के जीवन-संघर्ष की एक-एक पर्त को उजागर किया है। डा० शर्मा स्वयं कवि हैं इसलिए कवि की पीड़ा को उन्होंने बहुत करीब से देखा-परखा और महसूस किया है। निराला जैसे समर्थ व्यक्तित्वमय हो गई है—यह सुखद प्रसंग है। भाषा कवित्वमय है पर कहीं भी क्लिष्टता के बोझ तले दबकर विवश नहीं हुई है, सहज प्रवाह और अभिव्यंजना कौशल से परिपूर्ण भाषा बहुत गहरे तक पाठक को प्रभावित करती है।

विष्णु प्रभाकर (संस्कार और भावना)

प्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून सन् 1912 ई० में मुजफ्फर नगर (उ० प्र०) जिले के मीरपुर गाँव में हुआ। 'प्रभाकर' एवं बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आप पंजाब सरकार के कृषि विभाग में कार्य करने लगे। साहित्य के प्रति प्रारम्भ से ही झुकाव रहा; नौकरी के दौरान ही नाटक, कहानी आदि लिखने लगे थे। सन् 1944 तक सरकारी सेवा में रहकर आप दिल्ली आ गये और स्वतन्त्र भाव से साहित्य सेवा में जुट गये। सन् 1955 में आकाशवाणी दिल्ली में एक ऊँचे पद पर कार्य करने के बाद उसे छोड़ दिया। सम्भवत: आपका स्वतन्त्रता व्यक्तित्व बन्धनों को कभी स्वीकार नहीं कर पाया; मानव मूल्यों के प्रति सदैव सजग रहते हुए आपने परिस्थितियों से कभी समझौता नहीं किया, इसीलिए आज के विशुद्ध व्यावसायिक दौर में भी आपका स्वतन्त्र लेखन व्यावसायिकता से कभी नहीं जुड़ पाया, लेखन आत्मा का स्फुरण, 'स्व' का विकास और समष्टि का कल्याण बनकर आपमें अवतरित हुआ है।

विष्णुजी की साहित्य यात्रा सन् 1931 से प्रारम्भ होती है। 1939 में 'हंस' में पहला नाटक 'हत्या के बाद' प्रकाशित हुआ। तब से आज तक अनेक नाटक, एकांकी, रेडियो नाटक, कहानी, उपन्यासों का प्रणयन आप कर चुके हैं। शरत् चन्द्र की जीवनी पर आधारित 'आवारा मसीहा' नामक रचना का [illegible] जीवनी साहित्य को [illegible] है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनके प्रसिद्ध एकांकी संग्रह हैं—प्रकाश और परछाइँ, इन्सान, बारह एकांकी क्या वह दोषी था, ऊँचा पर्वत गहरा सागर, दस बजे रात, ये रेखाएँ ये दायरे, अशोक, दूर और पास तथा राष्ट्रभाषा रत्न नाटकों में 'डाक्टर', 'नवप्रभात', 'टूटते परिवेश', 'कुहासा और किरण', 'अब और नहीं' आदि ने विशेष ख्याति प्राप्त की है।

उपन्यास, कहानी, संस्मरण, जीवनी आदि विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी का जौहर दिखानेवाले विष्णु प्रभाकर को एकांकी लेखन में सर्वाधिक सफलता मिली है। गाँधीवादी आदर्शवाद की पृष्ठभूमि में जीवन के यथार्थ सत्य को, सूक्ष्म मानवीय संवेदना को, मनुष्यता के प्रति सहज आस्था और विश्वास को उजागर करते हुए आपने एकांकी साहित्य को नये आयाम प्रदान किये हैं। भारतीय मध्यवर्गीय परिवार परम्परा और सामाजिक दायित्व बोध से कुछ इस हद तक जुड़ा हुआ है कि कई बार परिस्थितियाँ कुण्ठा एवं संत्रास की सीमाओं को भी लांघ जाती है; प्राण-प्रण से विरोध करते हुए भी कई बार हमें स्थितियों से समझौता करना पड़ता है। विष्णुजी संवेदनशील भावुक चितेरे हैं, इसीलिए उन्होंने यथार्थमानव कृत्तियों का विश्लेषण कर उन्हें दिशाहीन भटकने के लिए नहीं छोड़ा है वरन् आदर्श समाज की कल्पना के अनुरूप एक सुनिश्चित और कलामय आदर्श की ओर प्रेरित किया है; यहाँ एक बात और द्रष्टव्य है—विष्णुजी का आदर्श उपदेशात्मकता के खोखले धरातल पर नहीं यथार्थ के कठोर धरातल से उभरकर आया है, उन्होंने यथार्थ में से ही कल्याण का रास्ता खोज निकाला है—यह उनके गाँधीवादी सिद्धान्तों और आदर्शों का कलात्मक प्रतिफलन है। भाव के ही नहीं भाषा के भी विष्णुजी कुशल चितेरे हैं। गम्भीर से गम्भीर-गहन विषयों को सीधी-सरल भाषा में इस सफाई से प्रस्तुत कर जाते हैं कि पाठक एकबारगी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

संस्कार और भावना—नामक एकांकी विष्णु प्रभाकर की बहुप्रशंसित ऐसी रचना है जिसमें परम्पराओं में जकड़े एक मध्यवर्गीय परिवार के यथार्थ को विष्णुजी ने आदर्श में गूंथकर कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि कुंठा और संत्रास खुशियों में बदल जाता है। जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं, एक समय ऐसा आता है कि हम उसे खुशी-खुशी

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वीकार कर लेते हैं; विरोध करना यथार्थ है लेकिन स्थितियों को स्वीकार कर लेना आदर्श है।

इस नाटक में लेखक ने एक ताना-बाना बुना है। मध्यवर्गीय पर संस्कारों में जकड़ी माँ नीच जाति की विजातीय लड़की को अपनी बहू स्वीकार नहीं कर पाती लेकिन माँ के ममतामय हृदय में पुत्र के लिए जो स्नेह है उससे वह विवश भी है। अविनाश हैजे से ग्रस्त होकर मरणासन्न होता है तो उसकी नीच कुल की विजातीय पत्नी प्राण-प्रण से सेवा कर उसे बचा लेती है, अविनाश स्वयं तो ठीक हो जाता है पर उसकी पत्नी बीमार हो जाती है, उसके बचने की कोई आशा नहीं रहती। उमा, अतुल आदि अविनाश के यहाँ समय-समय पर जाते रहते हैं केवल संस्कारों के बोझ तले दबी लेकिन ममतालु माँ नहीं जा पाती लेकिन जब माँ सुनती है कि अविनाश की प्राण-प्रण से सेवा करनेवाली उसकी विजातीय पत्नी मरणासन्न है तो वह सारे परम्परागत संस्कारों को, ऊंच-नीच के बन्धनों को तोड़कर अविनाश और उसकी पत्नी को अपनाने को तैयार हो जाती है।

नाटक सीधा-सादा पारिवारिक वातावरण से उठाया गया है। गाँधीजी ने ऊँच-नीच के, जाति-पाँति के बन्धनों को तोड़ समभाव से, एक रूप होकर जीने का सन्देश दिया था। विष्णुजी ने इस आदर्श की मार्मिक धरातल पर व्याख्या की है; लेखक कहना चाहता है कि संस्कारों की, जाति-पाति और धर्म की 'दासता' मानवता की सबसे बड़ी शत्रु हैं और जब तक समाज इस शत्रु के चंगुल से मुक्त नहीं होगा तब तक सामाजिक और पारिवारिक जीवन सुन्दर, सुखद और प्रेममय नहीं बनेगा। घुटन भरे माहौल मे उमा, अतुल और माँ सभी व्याकुल हैं, उधर अविनाश अपने आदर्शों पर प्राण-प्रण से दृढ़ है; जीवन-भर संस्कारों में जकड़ी माँ अन्ततः भावना को अपना लेती है; यही सुखद और आदर्श स्थिति भी है। लेखक अपने उद्देश्य को व्याख्यायित और स्थापित करने में पूरी तरह सफल हुआ है। घुटन भरा, आंसुओं, निर्ममता, भावना में डूबा वातावरण, तीन प्रमुख पात्र, चुस्त एवं प्रभावशाली संवाद, सहज सम्प्रेषणयुक्त भाषा और सबसे अधिक आदर्शमय उद्देश्य —इन सब विशेषताओं से युक्त यह एकांकी लेखक की अन्यतम कृति है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋषभचरण जैन (प्रेमचन्द स्मृति)

प्रेमचन्द युग के समर्थ एवं प्रतिभावान कथाशिल्पी श्री ऋषभचरण जैन का जन्म 1 जनवरी सन् 1911 ई० को सराय सदर (वर्तमान नोएड़ा) के प्रतिष्ठित दिगम्बर जैन परिवार में हुआ। 11 वर्ष की आयु में दिल्ली के विख्यात बैरिस्टर व रईस श्री चम्पतरायजी द्वारा पौत्र रूप में दत्तक ग्रहण किए गए। 35 वर्ष की आयु तक आते-आते आप 35 पुस्तकों की रचना के अतिरिक्त प्रकाशक, मुद्रक और सम्पादक के रूप में अपार ख्याति प्राप्त कर चुके थे।

जिस समय आपने लेखन और प्रकाशन शुरू किया, उस समय दिल्ली हिन्दी की दृष्टि से उजाड़ थी, साहित्य रचना और प्रकाशन का तो प्रश्न ही नहीं था; वस्तुतः सर्वप्रथम आपने ही दिल्ली में साहित्य रचना करके, प्रकाशन शुरू करके हिन्दी के महारथ को आगे बढ़ाने का कार्य किया; आज दिल्ली साहित्य रचना और प्रकाशन दोनों ही दृष्टियों से जितनी समर्थ है, उसका पूरा-पूरा श्रेय श्री ऋषभचरण जैन को जाता है। इतना ही नहीं, फिल्म व्यवसाय के माध्यम से भी आपने हिन्दी को बहुत आगे तक विकसित और प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। लेकिन इसे हम दुर्भाग्य ही कहेंगे--- पर किनका ? कि फिल्म व्यवसाय में अपार हानि उठाने के कारण जीवन के अन्तिम 36 वर्षों तक आप मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं रह पाए; 7 अगस्त सन 1985 में आप पार्थिव शरीर त्याग अनन्त में समा गए; मैं कई बार सोचता हूँ, काश ! ऋषभजी स्वस्थ रहते तो साहित्य की कितनी अपार सेवा करते; पता नहीं ऐसा क्यों होता है कि जब भी कोई साहित्यकार अपनी पूरी निष्ठा, आस्था और प्रतिभा के साथ माँ सरस्वती के मन्दिर में हिन्दी की आरती उतारने लगता है, काल का भैरवी चक्र डोलने लगता है और पुजारी के आरती के स्वर कहीं डूबने पर विलीन होने लगते हैं, काश ! पूरे जीवन काल में ऋषभजी स्वस्थ भाव से सृजन के स्वर गुनगुना पाते तो हिन्दी की बुलन्दियां आज कुछ और ही होतीं।

श्री जैनेन्द्र कुमार कहते हैं कि "ऋषभजी अत्यन्त प्रतिभाशाली थे। 'प्रतिभाशाली' कहना नहीं है अत्यन्त भी लगाना पड़ता है; मैं तो हिन्दी के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरे ही चित्र से परिचित हूँ, मेरा परिचय लगभग सभी से है —कह सकता हूँ कि इतना प्रतिभाशाली व्यक्ति कोई दूसरा मुझे नहीं मिला। ऋषभजी के सम्बन्ध में अत्यन्त इसलिए कहना पड़ता है क्योंकि वे सीमाओं को स्वीकार नहीं करते थे, चाहे वे सामाजिक नैतिकता की हों, प्रशासनिक और कानूनी हों या और प्रकार की हों। ऐसा मालूम होता है कि सीमाओं का जहाँ भी पता चले सफलताओं की भी सीमाओं का भी पता चले, उनका अतिक्रमण करने की उनकी इच्छा होती थी।"

ऋषभजी ने बहुत लिखा है, सब लिखा है—खूब लिखा है; लेकिन लिखना ही काफी नहीं है, सामाजिक असंगतियों, कुरीतियों, बीभत्स दृश्यों आदि के निरूपण में निडरता होना, अश्लील यथार्थ को भी सामाजिक आदर्श की ओर मोड़ देना बड़ी बात है, ऋषभजी की कहानियों ने, उपन्यासों ने, निबन्धों और संस्मरणों ने यही काम किया है। यह ठीक है कि आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से साहित्य रचना शुरू कर आप कहीं-कहीं अश्लीलता को भी छू गए हैं पर उसकी दृष्टि शीलत्व की ओर ही गतिमान रही है।

कथा साहित्य के सृजन की उनकी अपनी विशिष्टता रही है। कथा का प्रारम्भ वर्णन या शब्द चित्र के द्वारा करके एक ही प्रसंग से पात्रों की मनोवृत्तियों पर बड़ी सफलता के साथ प्रकाश डालते हैं और दो-चार उल्टी-सीधी रेखाओं से ही अपने पात्रों के व्यक्तित्व को अभिव्यंजित कर देते हैं। इनकी शैली व्यंग्यात्मकता, नाटकीयता, चित्रात्मकता आदि को विशेष महत्व देती है। भाषा की अभिव्यंजना शक्ति-सराहनीय है उसमें लाक्षणिक प्रयोगों, मुहावरों, उत्प्रेक्षाओं, व्यंग्य वाणों आदि का सौष्ठव दर्शनीय होता है।

प्रेमचन्द-स्मृति—अमर कथाकार मुंशी प्रेमचन्द की स्मृति में प्रकाशित ग्रंथ 'प्रेमचन्द स्मृति' में प्रकाशित यह संस्मरण अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। ऋषभजी प्रेमचन्द के समकालीन थे, समानधर्मा थे, एक-दूसरे से प्रेरित और प्रभावित थे, खूबियों और कमियों से भी भरपूर परिचित थे, इसलिए यह संस्मरणात्मक रचना संस्मरण भी है, कहानी भी है, और एक लेखक की रचना-प्रक्रिया, चिन्तन प्रक्रिया, साहित्य-धर्मिता का ऐतिहासिक-प्रामाणिक दस्तावेज भी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुपया-पैसा, बाहरी तड़क-भड़क, पद, डिग्रियों आदि न होने पर भी प्रेमचन्द बड़े आदमी थे। जीवन सख्तियों में कटा, न बचपन में खेल और न जवानी में रोमांस, हमेशा मोटा खाया, मोटा पहना। गरीब बाप के बेटे ने गरीबी की डरावनी छाया में जब तक बी०ए० किया, जीवन की ताजगी जा चुकी थी। गांधी की आँधी ने प्रेमचन्द को भी हिलाया, सरकारी नौकरी छोड़कर स्वतन्त्रता की आंधी में शामिल हो गए।

लेखक कहता है कि मैं प्रेमचन्द से जब मिला, तब तक मैंने थोड़ा-बहुत लिखना शुरू कर दिया था। मेरा 'मास्टर साहब' उपन्यास छप चुका था पर इस डर से प्रेमचन्द को नहीं दिखाया कि कहीं नापसन्दी की मोहर न लगा दें, पर चर्चा चलने पर उन्होंने 'मास्टर साहब' की प्रशंसा की।

गाढ़े की कमीज-धोती पहने, किसान जैसे चेहरेवाले प्रेमचन्द पक्के 'आइडियलिस्ट' थे। मैं कथा-कहानियों को जिन्दगी की तस्वीर मानता हूँ, उसकी कमजोरियों को दिखाना लेखक का फर्ज है। प्रेमचन्द के अनुसार कहानी लिखी जाती है दिलचस्पी के लिए और शिक्षा के लिए। लेखक मानता है कि शिक्षा के लिए प्रेमचन्द की कहानियों की आज बहुत जरूरत है, आदर्श के मामले में प्रेमचन्द की बहुत-सी कहानियाँ धर्म मन्दिरों तक में पढ़ी जाने लायक हैं। प्रेमचन्द हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि कहानीकार हैं। लेखक को प्रेमचन्द का 'रंगभूमि' उपन्यास बहुत पसन्द आया। उसमें कहानी काव्य, फिलौसफी, मनोविज्ञान, नीति, धर्म, सोशलिज्म सभी कुछ है, वह जिन्दगी का खाका है।

प्रेमचन्द 'प्रोपेगण्डा' से दूर रहते; सबके प्रति उनके मन में हमदर्दी रहती; न सरकार से अनावश्यक नफरत, न हिन्दू-मुसमान-ईसाई के लिए मन में विचार-भेद; वे आदमी थे और आदमियों के प्रतिनिधि थे। स्वभाव हंसमुख, बातचीत में चुस्त-दुरुस्त, दिल कच्चे दूध-सा मधुर और स्वच्छ।

लेखक कहते हैं कि एक बार प्रेमचन्द दिल्ली आए, मैं, जैनेन्द्र और प्रेमचन्द कुतुबमीनार देखने गए। पूड़ियाँ खाने बैठे तो बीच में पानी कौन लाए, जो लाएगा घाटे में रहेगा; अन्त में प्रेमचन्द ने कहा—'मैं जाता हूँ, मैं बूढ़ा हूँ, आप लोग मेरा ख्याल जरूर रखेंगे।' प्रेमचन्द ने इस प्रकार खूब [illegible]। इसी प्रकार फोटो खिंचवाया; अपना फोटो देखकर लिखा—मुंह

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टेढ़ा आया है, क्या करें, नसीब ही टेढ़ा है।

लेखक कहता है कि प्रेमचन्द चले गए हैं, एक छोटे से लेख में उनकी महानता का वर्णन नहीं हो सकता। मैं लोगों का ध्यान इस तरफ दिलाना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के इतने बड़े आदमी के जीते-जी हम उसके साथ इन्साफ न कर सके।

इस प्रकार इस संस्मरण में ऋषभजी ने प्रेमचन्द के अन्तरंग प्रसंगों को बहुत करीब से छुआ और चित्रित किया है।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धर्म की आड़

गणेश शंकर विद्यार्थी

इस समय देश में धर्म की धूम है। उत्पात किये जाते हैं, तो धर्म और ईमान के नाम पर। और जिद की जाती है, तो धर्म और ईमान के नाम पर। रमुआ पासी और बुद्धू मियाँ धर्म और ईमान को जानें, या न जानें, परन्तु उसके नाम पर उबल पड़ते हैं, और जान लेने और जान देने के लिए तैयार हो जाते हैं। देश के सभी शहरों का यही हाल है। उबल पड़नेवाले साधारण आदमी का इसमें केवल इतना ही दोष है कि वह कुछ भी नहीं समझता-बूझता, और दूसरे लोग उसे जिधर जोत देते हैं उधर जुत जाता है। यथार्थ दोष है, कुछ चलते पुरजे पढ़े-लिखे लोगों का, जो मूर्ख लोगों की शक्तियों और उत्साह का दुरुपयोग इसलिए कर रहे हैं कि इस प्रकार जाहिलों के बल के आधार पर उनका नेतृत्व और बड़प्पन कायम रहे। इसके लिए धर्म और ईमान की बुराइयों से काम लेना उन्हें सबसे सुगम मालूम पड़ता है। सुगम है भी। साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह बैठी हुई है कि धर्म और ईमान की रक्षा के लिए प्राण तक दे देना वाजिब है। बेचारा साधारण आदमी धर्म के तत्वों को क्या जाने? लकीर पीटते रहना ही वह अपना धर्म समझता है। उसकी इस अवस्था से चालाक लोग इस समय बहुत बेजा फायदा उठा रहे हैं। पाश्चात्य देशों में धनी लोग गरीब मजदूरों के परिश्रम से बेजा लाभ उठाते हैं। उसी परिश्रम की बदौलत लोग गरीब मजदूर की झोंपड़ी का मजाक उड़ाती हुई उनकी अट्टालिकाएँ आकाश से बात करती हैं। गरीबों की कमाई ही से वे मोटे पड़ते हैं, और उसी के बल से, वे सदा इस बात का प्रयत्न करते हैं कि गरीब सदा चूसे जाते रहें। यह भयंकर व्यवस्था है। इसी के कारण साम्यवाद, बोल्शेविज्म आदि का जन्म हुआ।

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे देश में इस समय धनपतियों का इतना जोर नहीं है। यहां धर्म के नाम पर, कुछ इने-गिने आदमी अपने हीन स्वार्थों की सिद्धि के लिए, करोड़ों आदमियों की शक्ति का दुरुपयोग किया करते हैं। गरीबों का धनाढ्यों द्वारा चूसा जाना इतना बुरा नहीं है, जितना बुरा यह है धन की मार, यह है बुद्धि पर मार। यहाँ धन दिखाकर करोड़ों को वश में किया जाता है, और फिर मन-माना धन पैदा करने के लिए जोत दिया जाता है। यहाँ है बुद्धि पर परदा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए लेना, और फिर, धर्म, ईमान, ईश्वर और आत्मा के नाम पर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए लोगों को लड़ाना-भिड़ाना। मूर्ख बेचारे धर्म की दुहाइयाँ देते और दीन-दीन चिल्लाते हैं। अपने प्राणों की बाजियाँ खेलते और थोड़े से अनियन्त्रित और धूर्त आदमियों का आसन ऊँचा करते और उनका बल बढ़ाते हैं।

धर्म और ईमान के नाम पर किये जानेवाले इस भीषण व्यापार को रोकने के लिए, साहस और दृढ़ता के साथ, उद्योग होना चाहिए, जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक भारतवर्ष में नित्यप्रति बढ़ते जानेवाले झगड़े कम न होंगे। धर्म की उपासना के मार्ग में कोई भी रुकावट न हो। जिसका मन जिस प्रकार चाहे, उसी प्रकार धर्म की भावना को अपने मन में जगावे। धर्म और ईमान, मन का सौदा हो, ईश्वर और आत्मा के बीच का सम्बन्ध हो, आत्मा को शुद्ध करने और ऊँचे उठाने का साधन हो! वह, किसी दशा में भी, किसी दूसरे व्यक्ति की स्वाधीनता के छीनने या कुचलने का साधन न बने। आपका मन चाहे, उस तरह का धर्म आप मानें, और दूसरे का मन चाहे, उस प्रकार का धर्म वह माने। दो भिन्न धर्मों के माननेवालों के टकरा जाने के लिए कोई भी स्थान न हो। यदि किसी धर्म के माननेवाले कहीं जबरदस्ती टाँग अड़ाते हों, तो उनका इस प्रकार का कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाये। देश की स्वाधीनता के लिए जो उद्योग किया जा रहा था, उसका वह दिन निस्सन्देह अत्यन्त बुरा था, जिस दिन स्वाधीनता के क्षेत्र में, खिलाफत, मुल्ला, मौलवियों और धर्माचार्यों को स्थान दिया जाना आवश्यक समझा गया। एक प्रकार से उस दिन हमने स्वाधीनता के क्षेत्र में, एक कदम पीछे हटकर रखा था। अपने उसी पाप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का फल आज हमें भोगना पड़ रहा है। देश की स्वाधीनता के संग्राम ही ने मौलाना अब्दुलबारी और शंकराचार्य को देश के सामने दूसरे रूप में पेश किया, उन्हें अधिक शक्तिशाली बना दिया, और हमारे इस काम का फल यह हुआ कि इस समय, हमारे हाथों ही से बढ़ाई इनकी और इनके से लोगों की शक्तियाँ हमारी जड़ उखाड़ने और देश में मजहबी पागलपन, प्रपंच और उत्पात का राज्य स्थापित कर रही हैं।

महात्मा गाँधी धर्म को सर्वत्र स्थान देते हैं। वे एक पग भी धर्म के बिना चलने के लिए तैयार नहीं। परन्तु उनकी बात ले उड़ने के पहले, प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है कि भली-भाँति समझ ले कि महात्मा जी के धर्म का स्वरूप क्या है? धर्म से महात्मा जी का मतलब धर्म के ऊँचे और उदार तत्वों ही का हुआ करता है। उनके मानने में किसे एतराज हो सकता है। अजाँ देने, शंख बजाने, नाक दबाने, नमाज पढ़ने का नाम धर्म नहीं है। शुद्धाचरण और सदाचार ही धर्म के स्पष्ट चिह्न हैं। दो घण्टे तक बैठकर पूजा कीजिए और पंच-वक्ता नमाज़ भी अदा कीजिए, परन्तु ईश्वर को इस प्रकार की रिश्वत के दे चुकने के पश्चात् यदि आप अपने को दिन-भर बेईमानी करने और दूसरों को तकलीफ पहुँचाने के लिए, आजाद समझते हैं तो, इस धर्म को, अब आगे आनेवाला समय कदापि नहीं टिकने देगा। अब तो, आपका पूजा-पाठ न देखा जायेगा, आपकी भलमनसाहत की कसौटी केवल आपका आचरण होगा। सबके कल्याण की दृष्टि से, आपको अपने आचरण को सुधारना पड़ेगा, और यदि आप अपने आचरण को नहीं सुधारेंगे तो नमाज और रोजे, पूजा और गायत्री आपको देश के अन्य लोगों की आजादी को रौंदने और देश-भर में उत्पातों का कीचड़ उछालने के लिए आजाद न छोड़ सकेगी। ऐसे धार्मिक और दीनदार आदमियों से तो, वे ला-मजहब और नास्तिक आदमी कहीं अधिक अच्छे और ऊँचे हैं, जिनका आचरण अच्छा है, जो दूसरों के सुख-दुख का खयाल रखते हैं और जो मूर्खों को किसी स्वार्थ-सिद्धि के लिए उकसाना बहुत बुरा समझते हैं।

ईश्वर इन नास्तिकों और ला-मजहब लोगों को अधिक प्यार करेगा, और वह अपने पवित्र नाम पर अपवित्र काम करनेवालों से यही कहना पसन्द करेगा, मुझे मानो या न मानो, तुम्हारे मानने ही से मेरा ईश्वरत्व कायम नहीं रहेगा, दया करके, मनुष्यत्व को मानो, पशु बनना छोड़ो और आदमी बनो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धन और उसका उपयोग

पुरुषोत्तम दास टंडन

विचार यह उठता है कि 'धन है क्या वस्तु ?' किसी साधारण मनुष्य से पूछिए तो वह यही उत्तर देगा कि धन के अर्थ हैं—रुपया, पैसा, मोहर, सोना, चाँदी, हीरा, मोती इत्यादि। फिर उससे पूछा जाय कि क्यों जी ! इन्हीं पदार्थों को धन क्यों कहते हैं ? क्या तुम्हारे घर की और वस्तुएँ धन नहीं हैं ? तो कदाचित् वह यह कहेगा कि "हाँ ! इस प्रकार से वे भी धन हैं परन्तु विशेषकर धन इन्हीं पदार्थों को कहते हैं। क्योंकि साधारण रीति से इनके ही द्वारा हम अन्य वस्तुओं को ले सकते हैं।" यद्यपि सम्पत्ति शास्त्र के अनुसार युक्तिपूर्वक धन की परिभाषा वह मनुष्य न दे सके तथापि वह यह जानता है कि धन उसी को कहते हैं, जिसको देकर उसके बदले कोई पदार्थ मिल सके। वास्तव में धन व सम्पत्ति के अर्थ बहुत बड़े हैं और इन शब्दों से उन समग्र पदार्थों का बोध होता है जिनसे मनुष्य की इच्छाओं का साधन होता है और जिसके बदले में मनुष्य अन्य पदार्थों को दूसरे से पा सकता है अर्थात् 'धन' से उन सब पदार्थों का बोध होता है जिसके द्वारा मनुष्य औरों की शक्ति को या उनकी शक्ति के फल को अपने काम में ला सके। परन्तु साधारण बोलचाल में 'धन' और 'धन' की माप के पदार्थ व सिक्कों में भी अन्तर नहीं किया जाता। मनुष्य धन की इच्छा केवल इस प्रयोजन से करता है कि वह ऐसा मन्त्र है जिसको सिद्ध कर अपने पास देखने से मनुष्य औरों की शक्ति अपने इच्छा के अनुसार वश कर सकता है, और जिस प्रकार मन्त्र की सिद्धि यदि उससे काम न लिया जाये तो व्यर्थ है, उसी प्रकार धन का उपार्जन करना व्यर्थ है यदि उसके द्वारा काम न लिया जाये। वास्तव में सोना या चांदी में स्वयं मनुष्य की इच्छाओं के पूरा करने की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामर्थ्य नहीं है; वे केवल अन्य पदार्थों के समान पाँच भौतिक पदार्थ हैं और उन पदार्थ में से भी उस श्रेणी के नहीं हैं जो मनुष्य के लिए सबसे अधिक आवश्यक और लाभदायक हैं। किन्तु जिस प्रकार से मेसमेरिजिम करने-वाला (अर्थात् अपने चैतन्य पर प्रभाव डालनेवाला) एक अज्ञान बालक में अपनी शक्ति के द्वारा वह शक्ति उत्पन्न कर देता है जो स्वयं उस मनुष्य में नहीं है और ऐसी अद्‌भुत बातें कहला देता है जो वह स्वयं नहीं कह सकता, इसी प्रकार बहुत काल से मनुष्य मात्र की एकत्रित शक्ति ने मिलकर इन धातुओं में वह शक्ति प्रदान कर दी है जो वास्तव मे उन धातुओं में नहीं है और मनुष्य उससे वह काम करा लेता है जो वह साधारण दशा में स्वयं नहीं कर सकता। जिस प्रकार से मेसमेरिजिम के लिए कोई बालक व पुरुष औरों की अपेक्षा विशेष उपयुक्त होते हैं। उसी प्रकार सोना, चांदी, हीरा-मोती इत्यादि पदार्थों में विशेष कारणों से मनुष्य ने यह शक्ति दे दी है कि वे जहाँ जाते हैं उन्हें सब कोई चाहता है और उनके बदले में सब प्रकार के पदार्थ मिल सकते हैं और व्यावहारिक काम हो सकते हैं अर्थात् उन धातुओं में कुछ गुण ऐसे हैं जिनके कारण मनुष्य को यह सुविधा पड़ती है कि उन्हें अपने व्यवहार द्वारा बना लें।

हमारी प्राचीन पुस्तकों से यह स्पष्ट है कि भारतवर्ष में प्राचीन काल में 'गोवंश' से वह काम लिया जाता था जो आजकल सोना और चाँदी कर रहे हैं ? अर्थात् मनुष्य की सम्पत्ति की माप 'गोवंश' के संकेत से की जाती थी। अब भी भारतवर्ष के उन कोनों और कन्दराओं में जहाँ उस सभ्यता का असर नहीं है जिसमें हम और आप रह रहे हैं और कुछ अंश तक हमारे सब ही ग्रामों में मनुष्य के धन की गणना उसके 'ढोर' (गाय, भैंस इत्यादि) से की जाती है; और अन्य पदार्थों का मूल्य गाय और भैंस की तुलना से किया जाता है। योरप के देशों में भी उस समय के पश्चात् जब केवल मनुष्य आखेट से निर्वाह करता था, जब लोगों ने कृषि-कार्य सीखा तब वहाँ बैल गाय, बकरी इत्यादि पशुगण ही 'धन' समझे जाते थे। यूनानी कवि होमर के काव्य से स्पष्ट जान पड़ता है कि उनके समय में अन्य पदार्थों का मूल्य 'गोवंश' की तुलना से किया जाता था और जैसे वीरों के शस्त्रों का मूल्य 9 बैल, 20 बैल और 100 बैल इस प्रकार से बतलाए गये हैं, एक दासी का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-GRANT

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्य 4 बैल कहा गया है इत्यादि। पारसियों के पवित्र ग्रन्थ 'जेन्द अवेसत' से भी इसी परिपाटी का प्रमाण मिलता है।

कहीं-कहीं जहाँ दासों का व्यवहार होता है और उनके साथ पशुओं का-सा व्यवहार किया जाता है। उसकी संख्या से अन्य पदार्थों के मूल्य की गणना की जाती है। इसी प्रकार वे पदार्थ भी जिन्हें मनुष्य ने शोभा की वस्तु समझा है, सदा से धन का काम देते आये हैं। हमारे यहाँ 'कौड़ी' की गणना अब भी प्रचलित है। फीजी टापू के रहनेवालों में ह्वेल के दाँतों से यही काम लिया जाता था। तेल, तमाखू, नमक, अन्न और इसी प्रकार के बहुत से पदार्थों ने भिन्न-भिन्न देशों में और भिन्न-भिन्न समय में वही काम किया जो आजकल हम चांदी-सोने से ले रहे हैं। ऐसा भी सन्देह होता है कि कभी कहीं-कहीं लकड़ी के सिक्के चले हैं।

थोड़ा बहुत विचार प्रत्येक मनुष्य को इस बात का रहता है कि वह अपने धन से अधिक-से-अधिक लाभ किस प्रकार उठावे और जितना ही अधिक विचार इस विषय पर मनुष्य करता है। उतना ही अधिक वह अपने धन से सुख उठाता है तो विचार इस समय यही है कि मनुष्य मात्र किस प्रकार से अपने धन का उपयोग करे जिससे अधिक-से-अधिक सुख होने की सम्भावना हो। इस विचार में भी दो शाखाएँ उपस्थित होती हैं—एक तो प्रत्येक मनुष्य के लिए अपने अधिक-से-अधिक सुख की सम्भावना और दूसरे मनुष्य-जाति के लिए अधिक-से-अधिक सुख की सम्भावना। दूसरा विचार बहुत सूक्ष्म है।

एक मनुष्य के कामों का असर दूसरे पर किस प्रकार पड़ता है, एक मनुष्य के थोड़े सुख में दूसरे मनुष्यों का कितना असीम सुख नाश होता है। एक मनुष्य के थोड़े से सुख छोड़ने से संसार में उसे थोड़े सुख की अपेक्षा कितना गुना सुख उत्पन्न होता है। यह बहुत ही रोचक और विचार-योग्य विषय है परन्तु इतना सूक्ष्म है कि उसको यहाँ पर नहीं उठायेंगे। यहाँ केवल इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया चाहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को अपने ही अधिक-से-अधिक सुख के लिए या उनके सुख के लिए जिनका सुख वह चाहता है किस प्रकार धन का उपयोग करना उचित है।

सबसे पहली आवश्यकता मनुष्य को भोजन की है जो आदि काल से लेकर

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज तक सबसे पहला उद्योग मनुष्य को इसी के लिए करना पड़ता है। क्या उस काल में जब मनुष्य केवल अखेट के सहारे रहता था, क्या उस समय जब वह केवल खेती, फल और पशुओं के दूध के ऊपर निर्भर रहता था, क्या आजकल जब वह इन कामों के साथ ही सहस्रों प्रकार के काम करता है, सबसे पहला ध्यान उसका अपने शरीर के पालन की ओर रहता है? यह इच्छा छोटे बच्चे से बूढ़े तक में प्रकृति की ही प्रविष्ट की हुई है और सृष्टि की स्थिति इसी के ऊपर निर्भर है। इसी से सबसे पहला सुख जो मनुष्य मात्र अनुभव करता है इसी आवश्यकता के पूरी करने में होता है और इस कारण धन का पहला उपयोग प्रत्येक मनुष्य के लिए इसी कार्य के निमित्त उचित है। परन्तु यहाँ इतना स्मरण रखना चाहिए कि धन की उपयोगिता उसी भोजन के लिए व्यय होने में है जिससे शरीर का पालन और उसकी पुष्टि हो, क्योंकि शारीरिक सुख इसी में है कि शरीर हृष्ट-पुष्ट रहे। वह भोजन जो प्रायः केवल जिह्वा के स्वाद के लिए अथवा इन्द्रियों के प्रबल करने के लिए किया जाता है, वास्तव में सुखदायी नहीं है; उसमें क्षण-मात्र का सुख हो परन्तु उससे यदि शरीर या बुद्धि को हानि पहुँची, तो प्रत्यक्ष है कि वह सुखदायी नहीं हो सकता। इससे भोजन के निमित्त धन की अधिक-से-अधिक उपयोगिता उसी में है जिससे शरीर का पालन हो, शारीरिक और मानसिक शक्ति बढ़े। इसमें सन्देह नहीं कि प्रत्येक का भोजन उसके कर्म के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। आध्यात्मिक शक्तियों को जगाने वाले योगियों का भोजन वही नहीं हो सकता जो अपने देश की रक्षा करने वाले और संग्राम में लड़ने वाले सिपाही का। परन्तु यह सिद्धान्त अवश्य प्रत्येक मनुष्य के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि उसके भोजन की अधिक-से-अधिक उपयोगिता उस प्रकार के खाद्य पदार्थों में है जो उसके उस कर्म में सहायक हों, जो उसका उद्देश्य है।

दूसरी आवश्यकता मनुष्य को व्यवहार के अनुसार कपड़े पहनने की होती है। वस्त्र के सम्बन्ध में इस बात का कोई नियम नहीं बाँधा जा सकता कि किस मनुष्य को किस वस्त्र में धन लगाने से अधिक सुख मिलता है। प्रत्येक मनुष्य को अपनी दशा के अनुसार कपड़े पहनने पड़ते हैं। परन्तु वह
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-G
अधिक-से-अधिक सुख लेने के लिए कहाँ तक वस्त्रों में लग सकता है इसकी

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमा अवश्य होती है, और सीमा मेरे विचार में यह है कि वस्त्रों से शरीर स्वस्थ रहे और उन्हें देखकर चित्त में प्रसन्नता हो, उनके कारण चित्त में कभी ग्लानि न उत्पन्न हो और उस मण्डली के लोग जिसमें वह मनुष्य रहता है पहनने वाले के वस्त्र पर आपेक्ष कर उसके चित्तको मलिन न करें। इसमें सन्देह नहीं कि इस सीमा के परे होकर भी मनुष्य धन के द्वारा सुख उठा सकता है। परन्तु वह धन का सबसे अच्छा उपयोग नहीं होगा, क्योंकि वही धन उसी मनुष्य के और कामों में लगकर अधिक सुख उत्पन्न कर सकता है।

तीसरी आवश्यकता मनुष्य की यह है कि वह कोई ऐसी कारीगरी, हुनर अथवा व्यवसाय सीखे और करे, जिससे भोजन और वस्त्र की आवश्यकताएँ और वे अन्य स्वाभाविक इच्छाएँ, जिनका आगे वर्जन है, पूरी हो सकें, अर्थात् जिसके द्वारा आवश्यकतानुसार धनोपार्जन हो। इस लिए यह प्रत्यक्ष है कि इस व्यवस्था के सीखने और उस की सामग्री इकट्ठा करने में धन का लगना बहुत ही उपयोगी और सुख का बढ़ाने वाला है।

पूर्वोक्त शारीरिक इच्छाओं में और इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए धन पैदा करने के यत्न में धन लगाने के पीछे मानसिक इच्छाओं के पूरा करने की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य और पशु में यही समानता और अन्तर है कि कुछ दूर तक तो दोनों के कर्म एक ही हैं, अर्थात् सबसे पहले दोनों की शारीरिक इच्छाओं के पूरा करने की आवश्यकता रहती है। इन इच्छाओं के पूरा करने में ही पशुओं की तृप्ति और उनका सुख है। परन्तु मनुष्य की (अर्थात् साधारण मनुष्य की और उनकी नहीं, जिनमें और पशुओं में केवल सूरत का ही भेद है) तृप्ति शारीरिक इच्छाओं को पूरा करके नहीं होती। मनुष्य प्रकृति की अद्‌भुत कारीगरी को देखता है और स्वभाव से उसके चित्त में प्रश्न उठते हैं "यह क्या है? यह किस प्रकार होता है?" ज्ञान की जिज्ञासा मनुष्य-मात्र का लक्षण है और इस जिज्ञासा के पूरा करने में जो आनन्द होता है, वह शारीरिक सुख की अपेक्षा अधिक तीव्र और स्थायी होता है। इसलिए इस जिज्ञासा को पुस्तकों अथवा गुरुशिक्षा अथवा अपनी विचार-शक्ति द्वारा पूरी करना मनुष्य का चौथा कर्म है। और उसमें धन लगाना धन की चौथी उपयोगिता है।

शरीर का अच्छा स्वास्थ्य रखने के लिए भोजन और कपड़े के अति-

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिक्त उसके प्रत्येक अंग को काम में लगाने की, व्यायाम की आवश्यकता पड़ती है, और इस कारण से कि शरीर और मन का घनिष्ट संबंध है और अब तक उसका शरीर के ऊपर भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता, ऐसे शारीरिक आमोद-प्रमोद में धन लगाना पड़ता है जिससे शरीर को लाभ हो और मन को भी प्रसन्नता हो। जिस प्रकार से केवल भोजन और कपड़े से शारीरिक आवश्यकता समाप्त नहीं होती बरंच और आनन्द देने वाले खेलों की खोज होती है, इसी प्रकार ज्ञान प्राप्त करने के अतिरिक्त भी मानसिक खेलों की आवश्यकता पड़ती है अर्थात् जिसमें कुछ बुद्धि का काम हो परन्तु बुद्धि को अधिक कष्ट करने की आवश्यकता न पड़े। कभी-कभी शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्वास्थ्य के लिए एक ही कर्म उपयोगी होता है। जैसे पहाड़ पर अथवा नदी-किनारे पर्यटन करना, इसमें शरीर को लाभ होता है, परन्तु उसके साथ ही मन में भी अनेक कल्पनाएँ उठती हैं और उनमें मग्न होकर मन को आनन्द मिलता है और कठिन मानसिक परिश्रम से जो मानसिक थकावट होती है, वह दूर होती है। परन्तु बहुत से ऐसी मानसिक आनन्द की वस्तुएँ होती हैं जिनका विशेष सम्बन्ध मन और बुद्धि से है, जैसे —संगीत, कविता, चित्रकारी इत्यादि। इन मानसिक स्वास्थ्य के पदार्थों में जो सुख मिलता है, वह शारीरिक स्वास्थ्य के द्वारा जो सुख मिलता है, उससे कहीं अधिक बढ़कर और स्थायी होता है, उसी प्रकार जैसे मानसिक भोजन अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने से (जिसको हमने चौथी आवश्यकता बतलाया है) जो आनन्द मिलता है, वह उस आनन्द से बढ़कर और स्थायी होता है, जो शरीर की रक्षा के निमित्त भोजन करने में होता है।

उपर्युक्त धन के उपयोगों में सब ऐसे हैं जिनमें धन नष्ट (बुरे अर्थ में नहीं किन्तु केवल काम में आकर न रह जाने के अर्थ में) होता है और जैसा हम ऊपर दिखा आए हैं धन इसीलिए है और उसका सुख इसी में है कि वह 'नष्ट' यानी खर्च या व्यय किया जाए परन्तु धन खर्च होने के लिए धन की स्थिति चाहिए—अर्थात् धन का उपार्जन चाहिए। इसी कारण धन के उपार्जन में धन लगाने को हमने धन का तीसरा उपयोग बतलाया है। यदि मनुष्य अपनी इच्छनुसार अपना स्वास्थ्य और अपनी स्थिति रख सकता तो

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

पूर्वोक्त तीसरी उपयोगिता में एक बार धन लगाकर कदाचित् यह निश्चिन्त

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो जाता और आवश्यकता के अनुसार धन पैदा कर अपने काम किया करता परन्तु वास्तव में मनुष्य के स्वास्थ्य और उसकी आयु के सम्बन्ध में स्थिरता नहीं है। आज मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा है और वह शक्तिवान् है तो धन उपार्जन के लिए परिश्रम कर सकता है। कल रोगग्रस्त है, बुढ़ापा आ गया, कठिन परिश्रम की शक्ति नहीं रह गयी, परन्तु आवश्यकताएँ वैसी ही हैं। अपने लिए और कुटुम्ब के लिए धन अवश्य चाहिए। इस कारण जिस समय मनुष्य परिश्रम कर धनोपार्जन कर सकता है, उसके धन का छठवां उपयोग धन का इकट्ठा करना है। ऊपर कहे हुए पाँचों उपयोगों का सम्बन्ध न केवल अपने डील से है, वरन् उनसे भी है जिनके सुख से मनुष्य सुखी होता है और जिनका पालन वह अपना धर्म समझता है।

सारांश यह कि धन का ऐसा उपयोग कि जिसमें आवश्यकता पड़ने पर उसकी अनुपस्थिति से दुःख न हो; सुख का बढ़ाने वाला है और कुछ अंश तक आवश्यक है, परन्तु जिस प्रकार से अन्य आवश्यकताओं में धन की उपयोगिता की प्रत्येक मनुष्य के लिए अवस्था-भेदानुसार सीमा है। उसी प्रकार धन इकट्ठा करने में अथवा इस नीयत से उसको कहीं लगाने में जिसमें आवश्यकता के समय वह मिल जाए; धन की उपयोगिता की सीमा है।

तो अब देखना है कि इस सीमा तक धन इकट्ठा कर मनुष्य किस प्रकार से अपनी आवश्यकताओं से बचने वाले धन को लगावे जिसमें उसको सबसे अधिक सुख हो, जब कोई मनुष्य धन इकट्ठा करने की इस अवस्था में पहुँच जाता है तब प्रायः यह देखा जाएगा कि वह आगे अपने पास बचनेवाले धन के कुछ अंश को उपर्युक्त आवश्यकताओं में से ऐसों में लगावेगा जो बिना हानिकारक हुए और सुख पहुँचाते हुए बढ़ाई जा सकती हैं; जैसे विद्या के उपार्जन में; परन्तु बचने वाले धन का बहुत थोड़ा अंश प्रायः इस प्रकार लगा सकेगा। शेष की उपयोगिता इसी में होगी कि वह अन्य मनुष्यों की आवश्यकताओं के पूरी करने में लगाया जाए। इस प्रकार धन लगाने में एक ऐसा अकथनीय आनन्द होता है जिसका स्वाद, साधारण रीति से प्रायः सब ही मनुष्य जानते हैं किन्तु अच्छे प्रकार से सहृदय पुरुष ही उसका सुख उठा सकते हैं। वास्तव में मनुष्य की सातवीं आवश्यकता यह है कि वह अन्य लोगों के सुख के लिए यत्न करे और धन की भी बहुत बड़ी उपयोगिता

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रत्येक मनुष्य के लिए इसी में है कि वह एक सीमा से परे, दूसरों के लाभ और सुख के लिए अपना धन लगावे और इस प्रकार स्वयं धन के द्वारा सुख प्राप्त करे।

यहाँ पर मैंने जो कुछ लिखा है वह केवल स्वार्थ अर्थात् अपने सुख के भाव से है—धर्म और पुण्य के विचार से उसका सम्बन्ध नहीं। और न महान् पुरुषों की शैली की मैंने व्याख्या की है क्योंकि ऐसे पुरुषों के हृदय में 'अपने' सुख का हिसाब नहीं लगता। वहाँ धन की अधिक-से-अधिक उपयोगिता देश व संसार के सुख के भाव से देखी जाती है। और मैं पहले लिख चुका हूँ कि उस विषय पर मुझे यहाँ लिखना नहीं है। महान् पुरुषों के हृदय दूसरों के दुख को देख ही नहीं सकते। यदि उनके पास दूसरों के दुःख को दूर करने की कोई शक्ति है तो वे 'अपना' आगा पीछा नहीं देखते, वे 'अपनी' आवश्यकताओं का व्यौरा नहीं फैलाते। उनको आनन्द इसी में आता है कि वे दूसरों की सहायता कर सकें और औरों को सुखी देखने ही में उनका सुख है। साधारण लोग भी थोड़ा-बहुत इस सुख का कभी-कभी अनुभव करते हैं।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साबरमती आश्रम में महात्माजी

बनारसीदास चतुर्वेदी

सुना है, आल्प्स पर्वत-श्रेणी का सर्वोत्तम दृश्य स्विटजरलैंड से ट्रियथ नामक बन्दरगाह की ओर आते हुए दीख पड़ता है। यह आल्प्स निकटस्थ होने के कारण अपने प्रचंड महत्त्व से दर्शक पर बड़ा भारी प्रभाव डालता है और हिमालय का दृश्य दूर से देखने में अपनी अनन्तता से विचित्रता पूर्ण और अत्यन्त रमणीक प्रतीत होता है।

महात्मा जी में पर्वत-श्रेष्ठ आल्प्स और नगाधिराज हिमालय दोनों के गुण विद्यमान थे वे निकट से भी उतने ही मनोहर थे, जितने दूर से।

इन पंक्तियों के लेखक को साबरमती आश्रम में लगभग चार वर्ष तक रहने का सुअवसर मिला था। उस समय की मधुर स्मृतियों को एक छोटे लेख में नहीं लिखा जा सकता। महात्मा जी ने खासतौर पर प्रवासी भारतीयों के लिए कार्य करने के उद्देश्य से मुझे शांति निकेतन से बुलाकर बम्बई रखा था और तत्पश्चात् गुजरात-विद्यापीठ में हिन्दी पढ़ाने के लिए साबरमती बुला लिया था। यद्यपि उन दिनों असहयोग आन्दोलन बहुत जोरों पर था, तथापि मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं था। महात्मा जी पूर्ण स्वाधीनता देने में विश्वास रखते थे और आश्रम में रहते हुए भी मैं सरकार से प्रवासी भारतीयों के विषय पर निरन्तर सहयोग करता रहा।

महात्मा जी का आदेश था—

"जैसा तुम्हारी अन्तरात्मा समझे, वही करो। इतना ख्याल रहे कि तुम्हें ईमानदारी के साथ प्रवासी भारतीयों की सेवा करनी है। रुपये का प्रबन्ध मैं कर दूंगा। कार्य की नीति तुम स्वयं निश्चित करो और जब मुझ से सलाह लेना जरूरी समझो, पूछ सकते हो।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चूंकि प्रवासी भारतीयों का विषय ही ऐसा था कि उसमें सरकार से सहयोग करना जरूरी था, मैंने सहयोग नीति से ही काम लिया। इस प्रकार जिस स्वाधीनता का उपभोग मैं कवीन्द्र श्री रवीन्द्र ठाकुर के शान्ति-निकेतन में करता रहा था, वही मुझे महात्मा जी के साबरमती आश्रम में प्राप्त हुई। यद्यपि तत्कालीन राजनीतिक विचारधारा के विपरीत जाना मेरे जैसे अत्यन्त क्षुद्र कार्यकर्ता के लिए असम्भव था, पर महात्मा जी का वरद-हस्त निरन्तर सिर पर रहा और चित्त में कोई उद्विग्नता नहीं हुई।

जिस किसी को उन दिनों महात्मा जी के आश्रम में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा, वह उस पुण्यसलिला साबरमती के तट और उसके तपस्वी को कैसे भूल सकता है। वह प्रातःकालीन प्रार्थना का दृश्य अब भी आंखों के सामने घूम जाता है। ऊपर आकाश में सुन्दर तारागण, सामने शीतल मन्द-वाहिनी साबरमती, चारों ओर स्वच्छ वायु, सुनने के लिए गायनाचार्य शास्त्री खरे का मधुर स्वर और दर्शन के लिए संयममूर्ति गांधी जी।

यद्यपि महात्मा जी नित्यप्रति प्रार्थना के बाद कुछ-न-कुछ कहते थे और उनके प्रत्येक प्रवचन में दीर्घकालीन अनुभवों के कारण अनेक स्मरणीय बातें रहा करती थीं, तथापि उस समय उन प्रवचनों को विधिवत् लिपिबद्ध करने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था।

26 जनवरी 1922 को महात्मा जी बारडोली जाने वाले थे, इसलिए उस दिन प्रवचन के और भी महत्वपूर्ण होने की सम्भावना थी। प्रार्थना के बाद महात्मा जी ने गम्भीर स्वर में कहा—"आप लोगों में मैंने आपके अनुभव कल पूछे थे। उस समय आपने मेरे अनुभव भी जानने की इच्छा प्रकट की थी। मैं आपसे अभी कहूंगा सो पहले की अपेक्षा विषय-वासनाओं पर मैंने अधिक काबू कर लिया है। और मैं अपने दोषों को भी अच्छी तरह देखने लगा हूं। उन दोषों को स्वीकार करने की शक्ति भी मुझमें आ गई है।

" 'पूर्ण सत्य' पूर्ण अहिंसा और पूर्ण ब्रह्मचर्य तो सिद्धांत में ही पाया जा सकता है। लेकिन उसे हम अपना आदर्श बनाकर उसकी ओर बराबर आगे बढ़ सकते हैं। मेरा तो ऐसा विश्वास है कि आदर्शनीय वस्तु को देखना भी

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

ब्रह्मचर्य को खंडित करना है, न सुनने योग्य वस्तु को सुनना भी ब्रह्मचर्य-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्खलन है और न खाने योग्य वस्तु को खाना भी वही है। पूर्ण ब्रह्मचारी कभी बीमार पड़ ही नहीं सकता। बीमार होना तो किसी पाप का परिणाम है। मुझे याद है कि एक जहाज पर बीमार होने पर मि० एंड्र्यूज ने मजाक में लिखा था—

"मैं बीमार हो गया हूं। आपके सिद्धान्तानुसार तो मैंने कोई-न-कोई पाप किया होगा।

"मैंने उन्हें लिखा था कि जरूर, लेकिन यहां आपके पाप की व्याख्या व्यापक रीति से करनी चाहिए।"

इस प्रकार एक घण्टे तक महात्मा जी बोलते रहे। प्रत्येक बात उनकी आत्मा के गम्भीरतम प्रदेश से निकल रही थी और उस समय के शांतिपूर्ण वायुमंडल में उनके शब्द विचित्र शक्ति के साथ धाराप्रवाह रूप में चले आ रहे थे। अन्त में उन्होंने कहा—

"कल मैं प्रोफेसर वासवानी जी की एक पुस्तक पढ़ रहा था। उसमें एक दृष्टांत आया है। जिस समय महाराणा प्रताप अपनी मृत्युशय्या पर लेटे हुए थे, उस समय उनका चेहरा बड़ा रंजीदा और चिन्तापूर्ण था। उनके सरदारों ने पूछा—'महाराज आपको क्या चिन्ता है।'

"महाराणा ने कहा—'मुझे चिन्ता यही है कि आप लोग मेरे पीछे कहीं ऐश-आराम में न पड़ जाएं और अपनी स्वाधीनता को न खो बैठें!' राजपूतों ने महाराणा प्रताप को विश्वास दिलाया कि नहीं, हम लोग भोग-विलास में नहीं पड़ेंगे। जब महाराणा को यह आश्वासन मिला, तब वह शान्त हुए और उनके मुख पर वही प्रसन्नता और तेज झलकने लगा। महाराणा की मृत्यु के बाद राजपूत लोग अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ नहीं रह सके। कोई परलोक की बात नहीं जानता, पर यदि कोई जानता तो वह कह सकता था कि महाराणा प्रताप की आत्मा स्वर्ग में अवश्य पूर्ण आनन्द न पाती होगी।

"महाराणा प्रताप तो ऐसे वीर हो गए हैं कि संसार में उनके समान देश-भक्त बहुत कम हुए हैं, लेकिन उनके उद्देश्य से इस समय हम लोगों का उद्देश्य बड़ा है। वह एक राज्य की स्वाधीनता के लिए लड़ रहे थे, पर हम लोग तो सम्पूर्ण भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे हैं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मैं आज बारडोली जाऊंगा । पहले तो जब कभी मैं जाता था, महीने-डेढ़ महीने बाद लौट आता था । लेकिन इस बार मैं अपने काम को समाप्त किए बिना नहीं लौटना चाहता । वैसे तो कौन जानता है कि मुझे कब यहां लौटना पड़े; क्योंकि मालवीय जी अभी राउंडटेबिल कांफ्रेंस का प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु मेरी इच्छा यही है कि जिस काम को करने के लिए मैं बारडोली जा रहा हूं; उसे खत्म करके ही लौटूं । महादेव ने जेल से लिखा था कि "जब ब्रिटिश सरकार ने जगलुल पाशा को मिस्र से देशनिकाला दे दिया, तब सम्भव है कि भारत सरकार आपको भी देश-निकाला दे दे । मुझे तो विश्वास नहीं होता कि सरकार ऐसा करेगी, यदि ऐसा करे भी, अथवा मैं बारडोली में गोली से मारा जाऊं, तो मुझे वहाँ पर अन्तिम समय में यह सन्तोष होना चाहिए कि आप लोग—आश्रम निवासी—अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं । एक छोटी-सी चीज से बढ़ाकर यह बना-बनाया आश्रम मैं आपको सौंपता हूं । आप लोग संयमपूर्वक रहकर इसकी उन्नति करें—व्यक्तिगत उन्नति और सामुदायिक उन्नति ।"

चूंकि मेरा गुजराती का ज्ञान बहुत साधारण-सा था । इसलिए मैं महात्माजी के प्रवचन का सारांश ही ले सका । पर मैं इतना जानता हूं कि वह प्राय: प्रामाणिक ही है ।

जिस समय महात्माजी ने अपना प्रवचन समाप्त किया, उस समय प्रात:काल के 5 बजे होंगे । चारों ओर बिल्कुल सन्नाटा था मानो साबरमती का जल मंदगति से बहते हुए धीरे-धीरे 'संयम-संयम' कह रहा था; चिड़ियों की चहचहाट भी मानो 'संयत' के उपदेश से परिपूर्ण थी और उस स्तब्ध वातावरण में भी वही शब्द 'संयम' गूंज रहा था ।

कल्पना कीजिए कि यदि दिल्ली में शहीद होने के पहले महात्मा जी का कोई प्रवचन होता तो क्या वे यही शब्द न कहते—

"यह स्वाधीनता मैं आपको सौंपता हूं । आप लोग संयमपूर्वक रहकर इसकी उन्नति करें—व्यक्तिगत उन्नति और सामुदायिक उन्नति" ।

एक दिन घूमते-घूमते मैं महात्मा जी के कमरे की ओर निकल गया । यद्यपि विवादग्रस्त राजनीति से मेरा कोई वास्ता नहीं था, तथापि कभी-कभी अपने मन की आशंका को दूर करने के लिए मैं महात्मा जी से एक-

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आध राजनीतिक प्रश्न भी पूछ बैठता था। एक बार मैंने कहा—महात्मा जी, आप यह कैसे आशा करते हैं कि अकेले बारडोली में संग्राम करके आप समस्त देश को स्वतंत्र कर देंगे ?

महात्मा जी ने उत्तर दिया—

"हम लोग सीली हुई दियासलाई की तरह हैं। यदि एक प्रज्वलित हुई तो सबसे आग जलाई जा सकती है।"

इस उत्तर से मैं अवाक्-सा रह गया।

पर महात्मा जी सदा गम्भीर ही नहीं रहा करते थे। वे मजाक भी खूब करते थे।

किसी आश्रमवासी के सिर में बड़ा दर्द होता था। प्रार्थना के बाद गांधी जी ने पूछा—"अब तबियत कैसी है ?" उन्होंने उत्तर दिया—"अब तो कुछ-कुछ ठीक है।" महात्मा जी ने पूछा—"खाने के लिए वैद्य ने क्या बताया था ?" उन्होंने कहा—"बादाम।"

महात्मा जी ने हंसकर कहा—"बादाम, तब तो ठीक ! बादाम का क्या कहना ?"

मेरे पास एक बड़ी मजबूत हाकी स्टिक थी। एक दिन उसे हाथ में लिये घूम रहा था कि महात्मा जी मिल गये। बड़े ध्यान से उसकी ओर देखकर और मुस्कराकर बोले—

"हां, लाठी तो आपने बड़ी मजबूत रखी है।" मैंने कहा, "इसका नाम माखनलाल चतुर्वेदी ने 'मस्तक भंजन' रखा है।"

महात्मा जी खूब हंसे और बोले—

"सचमुच यह 'मस्तक भंजन' ही है; और सत्याग्रह आश्रम में तो 'मस्तक-भंजन' रखना ही चाहिए।"

उन दिनों दीनबंधु मिस्टर एंड्रयूज और प्रवासी भारतीयों के पुराने कार्यकर्ता मि० पोलक साबरमती में ही विद्यमान थे। ऐसे अवसर से लाभ उठाने के लिए मैंने महात्माजी से निवेदन किया—"आज प्रातःकालीन वायु सेवन का समय मुझे दीजिए। आप, मि० एंड्रयूज, मि० पोलक—ये तीनों प्रवासी भारतीयों के प्रश्नों के आचार्य हैं। ऐसा मौका फिर कब मिल सकता है। प्रवासी भारतीयों के बारे में मुझे कुछ सवाल पूछने भी हैं।" महात्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जी राजी हो गये और उस दिन टहलते समय प्रवासी भारतीयों के विषय पर ही वार्तालाप हुआ। दुर्भाग्यवश उस वार्तालाप के नोट मैंने रखे नहीं और अब वह स्मृति के गर्भ में विलीन हो चुके हैं। केवल एक बात मुझे याद है, वह यह कि मैंने प्रस्ताव किया था कि पूर्वी अफ्रीका के 'नीग्रो' लोगों की सेवा के लिए कांग्रेस की ओर से एक मिशन जाना चाहिए। मि० पोलक ने इस प्रस्ताव का विरोध किया था। उनका कहना था कि यह काम तो आर्यसमाज जैसी धार्मिक संस्था को अपने ऊपर लेना चाहिए। यह कांग्रेस जैसी राजनीतिक संस्था का कर्तव्य नहीं है। प्रवासी भारतीयों के लिए एक विशेष पत्र निकालने की चर्चा शायद हुई थी। उस पर महात्माजी ने कहा था—"मौजूदा पत्रों में से ही किसी का प्रवासी विशेषांक निकाल सकते हो। अलग अखबार चल नहीं सकेगा।"

महात्मा जी मेरी प्रचार प्रवृत्ति से भलीभाँति परिचित थे। एक बार जब मैंने कई लेख पत्रों को भेज डाले और परामर्शों के लिए बार-बार उन्हें तंग किया तो महात्मा जी हंसकर बोले "लड़वैया का यही काम थोड़े ही है कि बराबर गोली चलाता रहे। कभी-कभी उसे गोला-बारूद का संग्रह भी तो करना चाहिए।" उनका अभिप्राय यही था कि भिन्न-भिन्न प्रदेशों के प्रवासी भाइयों की दशा के विषय में पूरा-पूरा रेकार्ड तैयार करना चाहिए।

इस समय आश्रम-जीवन की न जाने कितनी बातें याद आती रही हैं, पर इस छोटे से लेख में उनके लिए स्थान नहीं हैं।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मास्टर साहब

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

न जाने क्यों बूढ़े मास्टर रामरतन को कुछ अजीब तरह की थकान-सी अनुभव हुई और सन्ध्या-प्रार्थना समाप्त कर वे खेतों के बीचोंबीच बने उस छोटे-से चबूतरे पर बिछी एक चटाई पर ही लेट रहे। सन् 1947 के अगस्त मास की एक चाँदनी रात अभी-अभी शुरू हुई थी। मास्टर साहब ने जब सन्ध्या-प्रार्थना शुरू की थी तो आकाश पर छितराये बादलों में अभी गहरी लाली विद्यमान थी; परन्तु सन्ध्या समाप्त कर जब उन्होंने अपनी आँखें खोलीं तो सब तरफ चाँदनी व्याप्त हो चुकी थी और आकाश के एक भाग में छाये हल्के-हल्के बादल रुई के बंडलों की तरह सफेद दिखाई देने लगे थे। पिछले दिनों बहुत गर्मी रही थी—मौसम की भी और दिमाग की थी। मास्टर साहब का यह कस्बा जैसे दुनिया के किनारे पर है। नजदीक-से-नजदीक का रेलवे स्टेशन वहाँ से तीस मील की दूरी पर है। फिर भी पिछले कितने ही दिनों से कितनी अमंगलपूर्ण खबरें दिन-रात सुनने में आ रही हैं। सुना जाता है, मुसलमान, हिन्दुओं और सिक्खों के खून के प्यासे बन गये हैं। दुनिया तबाह हो रही है। घर-बार लूटे जा रहे हैं। सब तरफ मार-काट जारी है। मास्टर साहब के गाँव में अभी तक अमन-चैन है, फिर भी वहाँ के वातावरण में एक गहरा त्रास स्पष्ट रूप से छाया हुआ है।

चाँदनी रात की ठण्डी हवा और चारों तरफ गहरा सन्नाटा। मास्टर साहब को जैसे राहत-सी मिली। थके हुए दिमाग का बोझ उतर-सा गया। ऊंह, ये सब झूठी अफवाहें हैं! कभी ऐसा भी हो सकता है! भला जब मैंने किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ा, तो किसी को कुत्ते ने काटा है कि मेरे खून तक का प्यासा बन जाय। अपनी जिन्दगी के पैंसठ बरस मैंने यहाँ बिताये हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे शागिर्दों की संख्या हजारों में है। हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान—सभी को मैंने एक समान दिलचस्पी से पढ़ाया है। कोई एकाएक मेरा दुश्मन क्यों बन जायेगा। मगर यह पाकिस्तान। मास्टर साहब की दिमागी राहत को जैसे एकाएक ठोकर लग गयी। हूँ, यह पाकिस्तान तो अब सिर पर ही आनेवाला है। मास्टर साहब के शरीर-भर में एक कंपकंपी-सी छूट गयी।

माँ-प्रकृति ने जैसे अपने इस बूढ़े पुत्र को प्यार-भरी थपकी दी। हवा की ठंडक और भी बढ़ गयी। और चाँदनी का उजलापन भी चमक आया। मास्टर साहब को सहसा अनुभव हुआ, यह तो वही दुनिया है जिसे देखने का अभ्यास उन्हें बचपन से है। वही खेत हैं, उनके बाप-दादा उनके लिए छोड़ गये हैं। वही आसमान है, वही धरती है और वही सदैव ताजी बनकर बहने वाली हवा है। आखिर पाकिस्तान इन सबको तो नहीं बदल डालेगा। ये सब तो उसी तरह कायम रहेंगे। आखिर पाकिस्तान में भी इन्सान की मिल्कियत रहेगी, काम-धन्धे रहेंगे, जबान रहेगी, लिखना-पढ़ना रहेगा। फिर मेरे जैसा फारसीदाँ पाकिस्तान वालों को क्योंकर नागवार गुजरेगा? पाकिस्तान बनेगा तो यह सब कुछ बदल थोड़े ही जायेगा। आखिर कोई बाहर के लोग तो आकर पाकिस्तान को नहीं बसायेंगे। पाकिस्तान एक दिन बनना ही था। चलो, वह हमारी जिन्दगी में ही बन गया।

रात का सन्नाटा और भी गहरा हो गया और अपनी इस छोटी-सी जमींदारी के इस अत्यन्त सुरभित भाग पर लेटे-लेटे मास्टर साहब को नींद आ गयी। प्रभात की लाली आसमान पर दिखाई देने लगी ही थी कि मास्टर साहब की नींद टूट गयी। सहसा उन्होंने पाया कि वातावरण अभी तक एकदम नीरव है। यहाँ तक कि चिड़ियों की चहचहाहट भी उन्हें सुनाई नहीं दी। मास्टर उठ खड़े हुए और तेजी से गाँव की ओर चल पड़े।

एक खास तरह की मनहूसियत जैसे उन्हें चारों ओर फैली हुई दिखाई दे रही थी। राह में कितने ही मुसलमान किसानों के कच्चे कोठे हैं। उन कोठों के आसपास कितने ही बच्चों और औरतों को उन्होंने देखा। उनमें से अधिकांश से वे परिचित थे, परन्तु आज सभी उन्हें कुछ बदले हुए से प्रतीत हो रहे थे। एक गहरी चुप्पी जैसे पुकार-पुकार कर उन्हें चेतावनी दे रही थी कि महाकाल की बेला सिर पर है। राह के किसानों के चेहरे जरूर

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गम्भीर थे, परन्तु मास्टर साहब से किसी ने कुछ भी नहीं कहा। वह तेजी से गाँव की ओर बढ़ते चले गये।

यह दूर पर क्या दिखाई दे रहा है? मास्टर रामरतन सहसा चौंक पड़े। जिस तरफ उनका गाँव है, उधर ही सुदूर क्षितिज पर बहुत बड़े पैमाने पर यह काला-काला क्या दिखाई दे रहा है? ये बादल हर्गिज नहीं हैं; क्योंकि बादल नीचे से ऊपर को नहीं जाया करते। मास्टर साहब की चाल और भी तेज हो गयी। अब उन्हें सुदूर क्षितिज पर लाली भी दिखाई देने लगी। सुबह-सुबह पश्चिम में दिखाई देनेवाली यह लाली स्पष्टतः किसी बहुत बड़े अमंगल की सूचक थी। बूढ़ा मास्टर अपने परमात्मा से प्रार्थना करने लगा, और चाहे जो कुछ हो, यह अग्निकांड उसके गाँव में न हुआ हो। मगर यह तो स्पष्ट ही है कि उनका गाँव जल रहा है। बूढ़े मास्टर ने अपनी प्रार्थना की माँग और भी कम कर दी—चाहे उनका सारा गाँव जल-जलकर भस्म हो जाय, उनके गाँव के सभी निवासी सही-सलामत बच जायें।

मास्टर साहब अब दौड़ने लगे। बहुत जल्द वह पसीना-पसीना हो गये, पर उनकी दौड़ जारी रही। कुछ दूर पहुँचकर एक अत्यन्त त्रासदायक महा-नाद-सा भी उन्हें सुनाई देने लगा, जैसे सैकड़ों नर-नारी एक साथ हाहाकार कर रहे हों।

बूढ़े मास्टर ने अपनी प्रार्थना की माँग और भी कम कर दी। चाहे कितने ही लोग कत्ल भी क्यों न हो जायें उनके गाँव की किसी लड़की का अपमान न होने पाये।

और अभी तक सहसा चिन्ता के एक बड़े तूफान ने उनके हृदय को एक सिरे से दूसरे सिरे तक झकझोर कर रख दिया। ओह, उनके परिवार की सब स्त्रियाँ और बच्चे गाँव में ही थे। और उनकी लाड़ली पोती निर्मला, जिसकी पन्द्रहवीं वर्षगाँठ अभी पाँच ही दिन हुए बीती है।

मास्टर साहब के हृदय की सम्पूर्ण सदभिलषाएँ खुद-ब-खुद अपनी लाड़ली पोती निम्मो के चारों ओर केन्द्रित हो गयीं : ओ मेरे परमात्मा, ओ मेरे देवता, यह तेरी अपनी लज्जा का सवाल है। मेरी निम्मो को तू अपने पास भले ही बुला ले, उसकी बेइज्जती मत होने देना।

पूरब दिशा में अग्नि का पुंज सूरज निकल आया। मास्टर साहब अब

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने गाँव के काफी नजदीक पहुँच गये थे। अब वह अकेले भी नहीं थे। उनके गाँव के कितने ही हिन्दू और सिक्ख खेतों में छिपे या गाँव की ओर से भाग के आते हुए उन्हें दिखाई दिए। मास्टर साहब पसीने से तर-ब-तर हो गये थे। राह की धूल उस पसीने से लगकर वहीं द्रवीभूत होने लगी थी। इस बहती मिट्टी से उनका मुँह, कपड़े और बाल बुरी तरह भर गये। फिर भी जिस किसी तरह वह दौड़ते चले गये और अपने गाँव की सीमा में आ पहुँचे।

मास्टर साहब ने आवाज दी: "नत्थूसिंह, मेरे घर का क्या हाल है?"

नत्थूसिंह उनका पड़ोसी था। वह इतना उदास दिखाई दे रहा था, जैसे उसकी निर्जीव देह-मात्र चल-फिर रही हो। नत्थूसिंह ने मुँह से कुछ नहीं कहा; सिर्फ इस तरह सिर हिला दिया जिससे उसकी असमर्थता प्रकट होती थी। मास्टर साहब ने कितने ही लोगों को पुकारा, पर जवाब कहीं से नहीं मिला। कुछ ही क्षणों के बाद मास्टर साहब अपने मोहल्ले के सामने विद्यमान थे। राह-भर में कितनी लाशों को लाँघकर मास्टर साहब इस जगह तक पहुँच पाये।

मास्टर साहब का मोहल्ला पक्के मकानों का था। इससे आग वहाँ बहुत फैलने नहीं पायी थी। किनारे के कुछ मकान जरूर जल गये थे और अब उनमें से गहरा नीला-काला धुँआ उठ रहा था। पर मास्टर साहब का मकान जरा भी नहीं जलने पाया था और न अब उधर आग बढ़ने का खतरा ही था। मास्टर साहब लपककर घर के सामने पहुँचे। गली-भर में एक भी आदमी उन्हें दिखाई नहीं दिया। सब तरफ सन्नाटा था—मौत का गहरा सन्नाटा। कुत्ता, बिल्ली या कोई जिन्दा प्राणी गली में नही था। आसमान में परिन्दे तक नहीं थे। सिर्फ दूर पर जल रहे मकानों की ज्वालाएँ एक भयोत्पादक आवाज उत्पन्न कर रही थीं।

क्षण-भर को मास्टर साहब ठिठक गये। जो कुछ भी बीता है, उसका आभास उन्हें मिल भी गया था। फिर भी यह उम्मीद तो थी कि घर के लोग शायद बच गये हों। अगर यही उम्मीद कायम रह सकती तो! क्षण-भर के बाद मास्टर साहब ने सहमे-सहमे से आवाज दी, "निम्मो!"

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई जवाब नहीं आया।

मास्टर साहब ने पुकारा, "निम्मो की दादी ! बेटी सत्ती ! बेटा प्रकाश ! बेटी सतवन्ती !"

कोई जवाब नहीं आया।

मास्टर साहब धीरे-धीरे घर के भीतर प्रविष्ट हुए। घर के सब दरवाजे चौपट खुले पड़े थे। अन्दर जैसे कोई झाड़ू-सा दे गया था। कहीं कोई चीज नहीं थी। गुण्डे सभी कुछ उठा ले गये थे। भीतर जाते ही एक तरफ बैठक है। सब खाली। उसके बाद एक खुला सेहन है। इस सेहन के दाहिनी ओर दो कमरे हैं जो सर्दियों में परिवार के सोने के काम में आते हैं। दोनों कमरे एकदम खाली पड़े हैं। सेहन की बायीं ओर एक दरवाजा है, उसमें से होकर एक और छोटे सेहन में जाना होता है, जहाँ घर के जानवर बाँधे जाते हैं—एक बरामदा, एक कमरा जानवरों के लिए। इस वक्त सब खाली हैं। कमरे के पिछवाड़े में जरा-सी जगह खाली है, जिसके चारों ओर ऊँची दीवारें हैं। यहाँ मास्टर साहब की बूढ़ी घरवाली ने तुलसी के कुछ घने झाड़ बो रखे हैं और उनके पास एक चबूतरे पर वह नियमित रूप से भगवान की पूजा करती है। धड़कते दिल से मास्टर साहब इस झाड़ तक आ पहुँचे।

ओह, मेरे भगवान ! यह सब क्या सच है ? तुलसी के झाड़ के नीचे नन्हें, सत्ती और नन्हें प्रकाश के क्षत-विक्षत निष्प्राण देह पड़े हैं, मानो अनजान शिशु डरकर माँ तुलसी की गोद में आसरा पाने आये हों। उधर चबूतरे पर माँ-बेटी।

मास्टर साहब की जीवन-संगिनी अपनी बड़ी लड़की से चिपटकर पड़ रही है। निस्पंद !

क्षण-भर के लिए मास्टर साहब को प्रतीत हुआ, जैसे वे स्वयं निष्प्राण हो गये हैं, उनके हृदय की सम्पूर्ण अनुभूति सन्न होकर एकदम निष्क्रिय बन गयी है। परन्तु अभी तो मास्टर साहब ने सभी कुछ नहीं देखा। उनकी लड़की निम्मो कहाँ है ?

बूढ़े मास्टर की बेहोश होती हुई चेतना खुद-ब-खुद लौट आई। वे अत्यन्त करुण स्वर में चीख उठे, "निम्मो, निम्मो, निम्मो !"

कहीं से कोई जवाब नहीं मिला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके बाद घण्टों की मेहनत से मास्टर रामरतन रात के महाप्रलय के सम्बन्ध में जो कुछ जान पाये, उसका सार इतना ही था कि चाँद डूबने से घण्टा-भर पहले मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या ने गाँव के उस भाग पर हमला कर दिया, जिसमें हिन्दू और सिक्ख रहते थे। यह हमला इतना अचानक और इतने जोर से हुआ कि उसका मुकाबला किया ही नहीं जा सका। आक्रमणकारी लोगों में बहुत बड़ी संख्या आसपास के तथा दूर से आये मुसलमान किसानों की थी, परन्तु यह कह सकना कठिन है कि गाँव के मुसलमान भी उसमें शामिल थे या नहीं। भयंकर मार-काट और लूट-मार के बाद गुण्डे लोग गाड़ियों में भरकर लूटा हुआ माल अपने साथ ले गये हैं। गाँव की बीसों जवान लड़कियों को भी वे अपने साथ ले गये हैं। वे लोग ही बच पाये, जो रात के वक्त घरों से भागकर खेतों में जा छिपे या दूर भाग गये। वे सब लोग अब एक जगह इकट्ठे कर लिये गये हैं और उन्हें नये हिन्दुस्तान में भेजने का इन्तजाम किया जा रहा है। मास्टर साहब के एक पड़ोसी ने इतना ही बताया कि जब उनके घर के सामने से होकर भागा जा रहा था तो घर के भीतर से भयंकर हाहाकार सुनाई दे रहा था। निम्मो के सम्बन्ध में सभी का यह खयाल था कि गुण्डे जरूर उसे अपने साथ उठा ले गये हैं।

बूढे मास्टर की परेशानी की सीमा न रही। जन्म-भर के उस अत्यन्त ईश्वर-परायण वृद्ध की अन्तरात्मा ने अपने उस अज्ञात आराध्यदेव से पूछा —"मेरे किस अपराध की सजा इस छोटी-सी, मासूम-सी बच्ची को मिली है, ओ मेरे देवता ?"

अपनी जीवन-संगिनी, वड़ी विधवा पुत्री और दोनों पोतों को एक साथ खोकर बूढ़े मास्टर के लिए जिन्दगी में क्या दिलचस्पी बाकी रह सकती थी ? अच्छा होता कि वह भी साथ मर जाते। पर मास्टर अब ये बात सोच भी नहीं सकते थे। उनकी लाड़ली पोती निम्मो जिन्दा है और वह गुण्डों के हाथ में है।

अपना जीवन-ध्येय चुनने में मास्टर साहब को सोचने की आवश्यकता नहीं पड़ी। वह तो जैसे आसमान पर लिखा हुआ था, उनके सामने आ गया। बूढ़े मास्टर ने निश्चय किया कि वह जिस किसी तरह निम्मो की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तलाश करेंगे, किसी-न-किसी तरह उसके पास पहुँच जायेंगे और—? साफ़ था कि बूढ़ा उसे बचा नहीं सकेगा—तब ? निम्मो के पास पहुँचकर बूढ़ा दादा अपने हाथों अपनी पोती की हत्या करेगा और उसके बाद खुद भी मर जाएगा।

सांझ तक गांव के भले मुसलमानों की मेहनत से वे सब हिन्दू और सिक्ख एक धर्मशाला में एकत्र कर दिये गये, जो प्रभात के महाप्रलय में बाकी बच रहे थे। थाने से दो-चार सिपाही भी उनकी देख-भाल के लिए आ पहुंचे और उन्हें जिले की ओर ले जाने का प्रबन्ध किया जाने लगा। परन्तु मास्टर रामरतन इन लोगों में नहीं थे। न जाने वह किस वक्त चुपचाप गाँव से खिसक गये।

गाँव छोड़ने के तीन दिनों के भीतर ही मास्टर रामरतन का जैसे काया कल्प हो गया ! मुँह की झुर्रियाँ और भी गहरी हो गयीं, आँखें एक तरह से गढ़े में चली गयीं और उनके नीचे कालिमा-सी पुत गयी। ये तीन डरावने दिन उनकी पैंसठ साल की जिन्दगी पर जैसे पूरी तरह छा गये। मास्टर साहब का चेहरा गमगीन और इतना गम्भीर दिखाई देने लगा, जैसे वे अपनी जिन्दगी में कभी न हँसे हों और न मुस्कराये ही हों।

किसी अपरिचित के लिए यह पहचान सकना अब आसान नहीं था कि मास्टर हिन्दू हैं या मुसलमान। बेतरतीबी से बढ़े हुए और बेपरवाही से बिखरे हुए उनके धूलि-धूसरित बालों ने उनकी आकृति पर फ़कीरी की छाया डाल दी थी—एक फ़कीर जो न हिन्दू होता है और न मुसलमान। वह फ़कीर बन ही तभी सकता है, जब वह इस दुई को, इस भेद-भाव को एकदम भूल जाय।

आसपास की कितनी ही बस्तियों और गांवों की खाक छानते-छानते मास्टर साहब को यह मालूम हो गया कि उनके गाँव पर आक्रमण करने वालों का मुखिया एक दूसरे गांव का जमींदार गुलामरसूल था और यह भी कि वह कितनी ही हिन्दू लड़कियों को अपने साथ घर ले गया है।

राह की एक सुनसान पगडण्डी पर चलते-चलते सहसा बूढ़े मास्टर को अनुभूति हुई कि वह अपने लक्ष्य के बहुत नजदीक आ पहुंचे हैं। इस अनुभूति के साथ-ही-साथ उनका हाथ जैसे खुद-ब खुद जेब में पहुंच गया, जहाँ एक
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चाकू संभालकर रखा गया था। बूढ़े मास्टर ने चारों ओर एक खोजती निगाह डाली और जब दूर तक उन्हें और कोई मानव-आकृति नहीं दिखाई दी, तो कांपते हाथों से उन्होंने वह चाकू जेब से बाहर निकाल लिया। चलते-चलते बायें हाथ में चाकू जकड़कर दाहिने हाथ से उसे खोला और बिना रुके ही दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली से उसकी धार की परीक्षा की। बूढ़े का हाथ बुरी तरह काँप रहा था। इससे उंगली की मोटी चमड़ी जरा सी कट गयी और उस पर खून चमक आया। चार दिनों में पहली बार मास्टर को उत्साह की अनुभूति हुई। एक अजीब तरह की उत्तेजना उनके थके हुए मन पर छा गयी। हाँ ! मैं अपना काम बखूबी कर सकूगा, इस तेज चाकू से एक हत्या और उसके बाद आत्महत्या। चाकू बन्द करके उन्होने जेब में डाल दिया और डगमगाते पैरों की गति स्वयमेव तेज हो गयी।

गुलामरसूल का घर तलाश करने में मास्टर साहब को देर नहीं लगी। कुल मिलाकर पच्चीस-तीस मकान थे और उनमें सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा मकान जमीदार का था। उन्होंने मकान के दरवाजे पर दस्तक दी। क्षण-भर में मकान के सेहन का दरवाजा खुल गया और एक बच्चे ने आकर पूछा, "क्या चाहिए ?"

मास्टर साहब चौंक गये। बच्चे की उमर उनके चार साल की सत्ती से अधिक नही थी। तो अभी तक दुनिया में मासूम बच्चे मौजूद हैं। इस महान हत्यारे के घर उनका स्वागत एक बच्चा करेगा इसकी उम्मीद कदापि नहीं थी। मास्टर साहब के झिझक-भरे मौन पर वह बच्चा चकित होने वाला ही था कि उन्होंने कहा, "मियां गुलामरसूल घर पर हैं ?"

"कौन, अब्बा ?"

"हां तुम्हारे अब्बा !"

इसी वक्त भीतर से एक नारी-कण्ठ सुनाई दिया, "कौन आया है बेटा हमीद ?"

बच्चे ने जवाब दिया, "कोई फ़कीर है, अम्मी। अब्बा को पूछता है।"

बड़े दरवाजे के दाहिनी ओर घर की बैठक थी क्षण-भर बाद बैठक का
0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G
दरवाजा खुल गया और बड़ी उम्र के एक अन्य लड़के ने मास्टर भीतर चलने

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को कहा। बैठक में कुछ मोढे रखे थे। एक तरफ एक पलंग पड़ा हुआ था। मास्टर साहब चुपचाप एक मोढ़े पर जा बैठे।

वह लड़का बड़ी हैरानी से मास्टर साहब की ओर देख रहा था। उनके बैठ जाने पर उसने पूछा, "चचा से क्या कह दूं ? वह साथ के मकान में गये हैं। मैं अभी जाकर उन्हें बुला लाता हूँ।"

मास्टर साहब इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं थे। फिर भी उनके दिमाग ने उन्हें धोखा नहीं दिया। मास्टर साहब आज सुबह नूरपुर से इस गाँव की ओर चले थे। उन्होंने कह दिया, "चचा से कहना नूरपुर से पैग़ाम आया है।"

लड़का चला गया और मास्टर साहब को जैसे जरा सोच सकने की फुरसत मिली। यहां तक तो सब ठीक। अब आगे क्या होगा ? गुलामरसूल अभी आता होगा। परन्तु वह अपनी निम्मो को उससे मांग किस तरह सकेंगे ? कोई बहाना तलाश करने से शायद काम बन जाय। यह तो साफ़ ही है कि सब लोग उन्हें मुसलमान समझने लगे हैं। क्यों न वह इसी बात का फायदा उठावें। वह कह सकते हैं कि नूरपुर का जमींदार कुछ लड़कियाँ चाहता है और वह उनके लिए अच्छी कीमत भी देने को तैयार है। बहाने से वह सब लड़कियों को देखने की इच्छा प्रकट कर सकते हैं। और जहाँ तक भेद खुलने का सवाल है, उन्हें उसकी चिन्ता ही क्या है। आखिर वह तो अपनी जान देने ही यहाँ आये हैं। अगर उसकी चाल असफल हो गयी, तो वह गुलामरसूल पर तेज़ चाकू से हमला कर ही सकते हैं। जो कुछ हो जाय, उतना ही सही। निकट भविष्य में उन्हें क्या करना होगा, इसका निश्चय उन्होंने अनायास ही कर लिया।

और यह निश्चय कर लेने के साथ-ही-साथ उन्हें ध्यान आया कि उनका अन्त समय सिर पर है। कुछ ही क्षणों के भीतर वह अपने परिवार से जा मिलेंगे, अपने भगवान के चरणों में जा पहुँचेंगे। मास्टर साहब मन-ही-मन राम-नाम का जाप करने लगे।

और सहसा एक अत्यन्त अप्रत्याशित घटना घटित हो गयी। जो छोटा बच्चा पहले-पहल मास्टर साहब का स्वागत करने दरवाजे पर उपस्थित हुआ था, उसी हमीद का हाथ पकड़कर सहसा निम्मो बैठक के दरवाजे पर

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ उपस्थित हुई। बूढ़ा मास्टर सहसा चीख उठा, "निम्मो !"

दरवाजे पर ही से निम्मो चिल्लायी, "दद्दा !"

और उसी क्षण बूढ़े रामरतन ने अपनी पन्द्रह बरस की पोती को गोद में उठा लिया। न जाने इतनी शक्ति बूढ़े मास्टर में कहां से आ गयी। भावों का पहला तूफान निकल जाने के बाद भी मास्टर की यह समझ में नहीं आया कि वह इस हालात में क्या करें। जेब में मौजूद तेज चाकू की उपस्थिति का ज्ञान उन्हें अब भी था; परन्तु जैसे चाहते हुए भी वह चाकू निकाल नहीं पाये। बूढ़े के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उन्होंने पाया कि जैसे बच्चा हमीद निम्मो का साथ ही नहीं छोड़ना चाहता। मास्टर साहब के प्रेम का उफान देखकर वह सहम-सा गया है और तब भी उसका दाहिना हाथ निम्मो के बायें हाथ को पकड़े हुए है।

मास्टर साहब अभी तक सकते की-सी हालत में थे कि सहसा गली में शोर मच गया, "काफ़िर !" मास्टर साहब अभी तक अपनी जेब से चाकू निकाल तक नहीं पाये थे कि दो जवान मुसलमानों ने उन्हें जकड़कर पकड़ लिया। घर की एक बूढ़ी औरत ने घर में काफ़िर की मौजूदगी की सूचना बहुत शीघ्र मोहल्ले-भर को दे दी थी।

और उसी वक्त गालियाँ बकते हुए गुलामरसूल ने अपनी बैठक में प्रवेश किया। मुमकिन था कि अपने नये कैदी को देखते ही गुलामरसूल उसे मारना-पीटना शुरू कर देता; परन्तु कमरे में मौजूद सभी लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब बूढ़े मास्टर पर निगाह पड़ते ही वह जैसे अचम्भे में भरकर चिल्ला उठा, "ओ मास्टर साहब !"

जिन दो नौजवानों ने मास्टर को पकड़ रखा था, उनकी जकड़ यकायक कम हो गयी। गुलामरसूल क्षण-भर के अन्तर से फिर चिल्लाया, "ओ मास्टर साहब ! आप यहाँ कैसे ?"

और बूढ़ा मास्टर, जो इस अप्रत्याशित घटनाचक्र के प्रवाह में एकदम मूक और एकदम संज्ञाहीन-सा बन गया था, सहसा फफककर रो उठा। दोनों जवानों ने मास्टर को अपनी पकड़ से मुक्त कर दिया और निम्मो अपने दादा से जा चिपकी।

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

गुलामरसूल ने बूढ़े मास्टर को सांत्वना देने का प्रयत्न किया। उसने

कहा, "मास्टर साहब, बचपन में जब हम रोया करते थे तो आप हमें चुप कराया करते थे और आज···" कहते-कहते गुलामरसूल चुप हो गया। न जाने किस शक्ति ने उसे यह अनुभूति प्रदान कर दी कि उसे यह कहने का अधिकार नहीं रहा।

बात बदलने की गरज से गुलामरसूल ने कहा, "यह लड़की आपकी क्या लगती है मास्टर साहब?"

बूढ़े मास्टर ने सिसकते हुए कहा, "यह मेरी पोती है।"

गुलामरसूल ने कहा, "तभी!" और अब वह चुप हो रहा।

बूढ़ा मास्टर निम्मो को छाती से लगाकर अब भी धीरे-धीरे सिसक रहा था। उससे कोई सवाल नहीं किया। क्षण-भर बाद गुलामरसूल ने खुद ही कहा,···"शायद तभी चार ही दिनों में हमीद इसे अपनी सगी बहन समझने लगा है" और तब आसमान की ओर ताककर उसने कहा, "खुदा का शुक्र है।"

मानवीय सहानुभूति का हल्का-सा आसरा पाकर बूढ़े मास्टर के हृदय की सम्पूर्ण व्यथा आंखों की राह बह चली जैसे गर्मी पाकर वर्फ पिघलती है।

कुछ क्षणों तक गुलामरसूल चुपचाप मास्टर साहब की ओर देखता रहा और उसके बाद धीरे-धीरे आगे बढ़कर उसने बूढ़े मास्टर को छाती से लगा लिया। मास्टर साहब ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। गुलामरसूल ने बहुत धीमे शब्दों में कहा, "धीरज से काम लो, मास्टर साहब! तुम्हें कोई भय नहीं हैं। निम्मो के साथ मेरी हिफ़ाजत में तुम चाहे जहां चले जा सकोगे।"

□ □

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'निराला' : जीवन की सार्थकता का प्रश्न

रामविलास शर्मा

सरोज की मृत्यु ने निराला के सारे जीवन की सार्थकता और निरर्थकता का प्रश्न बड़े विकट रूप में उनके सामने प्रस्तुत कर दिया। जियें तो किसके लिए ? अब तक जीकर जो कुछ झेलते रहे, उसका फल क्या मिला ? महिषादल में नौकरी करते रहते तो बेटी की यह दुर्दशा न होती। सबकुछ छोड़ा साहित्य के लिए लेकिन साहित्य-सेवा से हमेशा पेट के लाले रहे। आलोचना सुनने से मालूम होता है कि हिन्दी में लिखकर निराला ने भारी अपराध किया है। नेकनामी कम बदनामी ज्यादा मिली।

सरोज की मौत के लिए कौन जिम्मेदार है ? निराला ! वह उसे पढ़ा-लिखा नहीं पाये; बिना माँ की बेटी को अपना प्यार-दुलार न दे सके; किसी खाते-पीते घर में उसका ब्याह न कर सके; पहले फोड़ा, फिर यह हड्डियों को फूंक देनेवाली बीमारी; गंगा के किनारे मठ में अन्तिम घड़ियाँ गिनती हुई सरोज; निराला ने क्या मदद की ? उनसे ज्यादा निकम्मा बाप कौन हो सकता है ? मनोहरा देवी की सजीव स्मृति मिट गई। मनोहरा की छवि सरोज में; मनोहरा का स्वर सरोज के कंठ में; निराला की कविता का सारा सौन्दर्य, सारी सुकुमारता सरोज में। जीवन निरर्थक, अब मृत्यु शेष है। गंगा किनारे बालू पर खिलखिलाती सरोज निराला की उंगली पकड़कर चलती थी; अब मृत्यु के अन्धकार मे पिता का हाथ पकड़कर वह उसे दूसरे लोक में ले जायेगी, दूर कहीं इस संसार से जहाँ निराला का कोई नहीं है।

सब भाग्य का खेल है। कर्मफल इसी को कहते हैं। निराला की आँखों में आँसुओं से भीगी सरोज की मुख-छवि, निराला पर चारों ओर से प्रहार पर प्रहार, विरोधियों का [illegible] कोलाहल। यदि साहित्य-सेवा का यही

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फल है तो इस कर्म पर वज्रपात हो। निराला हार गया? नहीं, हारा नहीं, हिन्दीवालों ने उसके गले में स्नेह का हार पहनाया है। निराला सरस्वती-पुत्र है। उसे कौन परास्त कर सकता है? वह लांछित है, अपमानित है पर सरस्वती की स्नेहदृष्टि उस पर और केवल उस पर है।

निराला ने आँसू नहीं गिराये। उनका दुख उनके अन्तस में कहीं जम गया। अब वह पहलेवाले निराला नहीं रह गये, अब वह पहले जैसे कभी नहीं हो सकते। खून में किसी ने जहर घोल दिया है और वह जल रहे हैं। निराला ने मन की सारी ताकत बटोरकर अपने को दुख से अलग किया; खुद ने अलग किया; खुद को देखा—दुखी, जर्जर निराश और अपना यह रूप देखकर उनका मन सजग हुआ। अन्तस में जमे हुए दुख को निराला ने सहेजना शुरू किया, उसे निहारते-समेटते निराला अनजाने ही उसे मूर्त रूप देने लगे। उन्होंने कविता लिखी—'सरोज-स्मृति।'

सीधे-सादे छन्द में, बड़ी समर्थ भाषा में, निराला ने अपना आवेग दृढ़ सीमाओं में बाँध दिया। सरोज के वे अनेक चित्र, बचपन से लेकर विवाह और उसके बाद तक जो समय-समय पर उन्होंने देखे थे, गढ़ाकोला और डलमऊ से सम्बद्ध अपने जीवन की स्मृतियाँ जो इस समय उभर आई थीं, वह सब निराला ने कविता में सहज तारतम्य से शब्दबद्ध कर दिया। मैं कवि हूँ, मैंने सरस्वती का प्रकाश देखा है—अपने मन को वह इस आस्था से बाँधे रहे; साथ ही इस आस्था पर व्यंग्य करता हुआ उनका शतशर-जर्जर, लांछित रूप भी सामने आया। उन्हें जब याद आया कि एक दिन उन्होंने कुण्डली में लिखे भाग्य-अंक मिटाने का फैसला किया था, दूसरा विवाह नहीं करेंगे यह तय किया था, तब अपने पुरुषार्थ पर उन्हें गर्व हुआ और उन्होंने लिखा—

खण्डित करने को भाग्य-अंक,
देखा भविष्य के प्रति अशंक

पर जैसे-जैसे वह कविता के अन्तिम चरण की ओर पहुँचे, उनका धैर्य टूट गया, प्रकाश देखनेवाले कवि का सपना चूर हो गया—

मुझ भाग्यहीन का तू सम्बल,
युग वर्ष बाद जब हुई विकल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर उसके बाद क्या हुआ, निराला में कहने की सामर्थ्य न रही। वाक्य विशृंखल हो गया—

दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो- नहीं कही।

निराला ने हिन्दी को, हिन्दी-साहित्य सेवा को, अपने को शाप दिया—

हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट गीत के-से शतदल !
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण !

कविता पढ़कर मैंने चुपचाप उसे एक तरफ़ रख दिया। उनकी तरफ़ देखने का साहस मुझमें न था। उन्होंने नहीं पूछा—कैसी है ? मैंने नहीं कहा—सुन्दर है।

लेकिन कविता लिख लेने के बाद निराला जैसे कुछ प्रकृतिस्थ हुए। उनकी साहित्य-साधना का महत्व उनकी आँखों के सामने स्पष्ट हो गया। पीड़ित, जर्जर, शोकाकुल निराला सरोज-स्मृति जैसी कविता लिख सकता है, जीवन की सार्थकता का यह सबसे बड़ा प्रमाण है। बंगाल से उनके मित्र मन्ना बाबू आ गये थे। होटल में ठहरे थे। निराला काफ़ी समय उनके साथ बिताते, कभी-कभी सवेरे के गये शाम को ही घर आते, पर हर समय, हर कहीं उनके मन में एक ही प्रश्न घुमड़ता रहता था—सरोज नहीं रही, शेष जीवन में अब आगे क्या ?

वर्षा के बादल छँट गये थे। शरद का नीला आसमान दमक उठा था। निराला ने धीरे-धीरे फिर काव्य-चर्चा शुरू की और उनका मन अपने को एक लक्ष्य बिन्दु से, देश के भविष्य और हिन्दी भाषा के भविष्य से बाँधने लगा। देश, हिन्दी, निराला—ये तीनों उनकी चेतना में घुल-मिलकर मानो एक हो गये। उन्होंने गीत लिखना शुरू किया—प्रायः हर रोज एक गीत लिखते। उनका स्वर मन की उस गहराई से उठा, जहाँ पहले कभी कोई हलचल न हुई थी। चेतना का कोई स्तर न रह गया था जिसे वेदना का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आघात न लगा हो।

उन्होंने मन को समझाया—अकर्मण्य होकर संसार-सागर की लहरें गिनना व्यर्थ है। बादल छँट गये हैं, पूर्व में उषा की लाली है, पवन अनुकूल है; संसार-सागर की लहरों पर जीवन की जय अवश्य होगी। उन्होंने अपने लिए उद्बोधन-गीत लिखा—जीवन की तरी खोल दे रे जग की उत्ताल तरंगों पर।

उन्होंने विप्लव के प्रिय संदेशवाहक बादल को याद किया। अब तक भौंरे कलियों का मधु पीकर गुजारते रहे; अब वज्रस्वर से मेघ फिर गरजेंगे, भूधर थर्रा उठेंगे, पल्लव-पल्लव पर नया जीवन बरसेगा।

उन्होंने सरस्वती की वन्दना की—इस धरती पर बड़ा दुख है, स्पर्धा से मनुष्य जर्जर हो गया है, मुरझाये हुए निर्गन्ध फूल की तरह।

उन्होंने भारतमाता का भव्य चित्र खींचा, चरण पखारता हुआ सागर, कमल-रूप में लंका, गले में गंगा का हार, माथे पर हिमाचल का शुभ किरीट, कण्ठ से निकलकर ओंकार की ध्वनि दिशाओं को गुँजारती हुई।

उन्होंने आशा व्यक्त की—कवि के रुँधे कण्ठ से सामगान फिर फूटेंगे। लोगों के मन से तृष्णा का अज्ञान दूर होगा।

उन्होंने संकल्प किया, कली के बन्धन टूटे, उनकी गन्ध चारों दिशाओं में छा जाय। जो धारा रुद्ध थी, वह निर्झर-सी शिखर के ऊपर से बहे, शून्य के सैकड़ों रन्ध्र मधुर कलरव से भर जायँ। उन्होंने कल्पना-चित्र बनाया—पृथ्वी और गगन में ज्ञान और आनन्द की एक ही धारा बह रही है।

जन्मभूमि और भाषा की एक साथ स्तुति की। ज्योति वसना देवी की छवि आकाश में; मानकण्ठों में स्वर की तरंगें।

पूर्व का रवि आकाश में उगा है, किसलयों पर किरणें हैं। दैन्यदल परास्त हुआ, विश्व में विजय गीत गूंज उठा। पुनः संकल्पः तृष्णा का विष बुझे; भाषा में अमृत के निर्झर झरें, पृथ्वी के स्वर ऊपर उठते हुए आकाश पर छा जायें।

निराला ने अपनी समस्त आस्थाओं, मान्यताओं को समेटा, रामकृष्ण परमहंस और रवीन्द्रनाथ से प्राप्त विचारों को कसौटी पर चढ़ाया, अपनी कवि-प्रतिभा को जगाया ! देश, भाषा कविता—तीनों पर विश्वास केन्द्रित

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करके निराश मन को उठाने के लिए उद्बोधन-गीत गाये, पर उन्हें संतोष न हो रहा था। कहीं भीतर से एक अस्पष्ट-सा भाव उठता था—यह सब प्रवंचना है। कहाँ है ओंकार, संसारव्यापी ज्ञान और आनंद का प्रकाश? देश का भविष्य? सम्भव है उज्ज्वल ही। पर वर्तमान कैसा है? निराला का वर्तमान? चारों ओर निराशा, मृत्यु, वेदना का अन्धकार। ज्योति में सांसारिकता की धूल नहीं लगती सही है: पर यह शरीर पर यह शरीर निशि दिन तन धूलि में मलिन, निराला का जीवन:

व्यर्थ हुआ जीवन यह भार,
देखा संसार, वस्तु
वस्तुतः असार।

ज्ञान का भरोसा है, उसी के सहारे रास्ता कटेगा। पर यह भी सही है कि शताब्दियाँ बीत गयीं, फिर भी देश नवजीवन प्राप्त न कर सका।

शक्तिहीन तन निश्चल,
रक्त से रहित रग रग।

यदि प्रकाश सत्य है तो अन्धकार क्या है? सूर्य डूब रहा है, सन्ध्या की आँखों में आँसू हैं। सघन अन्धकार स्तब्ध है; गन्ध से भरी हवा जैसे रुक गयी है। ध्यानमग्न आकाश ने अपने नीले कमल नेत्र बन्द कर लिये हैं। मृत्यु ही सत्य है; मृत्यु ही निराला को मुक्ति दे सकती है:

यही नील-ज्योति-वसन
पहन, नील-नयन-हसन।
आओ, छवि, मृत्यु-दशन,
करो दंग जीवन-फल।

निराला के मन का संशय, उनकी असह्य वेदना; उनका यथार्थ-बोध बार-बार आस्था के सपनों को तोड़ देता, आनन्द और आशा के गीतों में दुःख के विवादी स्वर आप ही फूट पड़ते। शरद का अन्त हो रहा था। निराला ने इस दौर का अन्तिम गीत लिखा:—

दे, मैं करूँ वरण
जननि, दुखहरण पद रागरंजित मरण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-GRANT
उन्होंने यथार्थ को स्वीकार किया, वहीं पद-रागरंजित-मरण निराला को

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्राण देगा। यह मृत्यु एक दिन आकर उन्हें संसार से उठा ले, इसकी प्रार्थना उन्होंने नहीं की। मृत्यु का वरण करके वह जीना चाहते थे, अपनी समस्त लाञ्छना, अपमान भावना, के साथ :

लाञ्छना इंधन हृदयतल जले अनल,
भक्ति नत नयन मैं चलूँ अविरत सबल।
पार कर जीवन प्रलोभन समुपकरण।

निराला का मन एक केन्द्रबिन्दु पर स्थिर हुआ। उन्हें जीना है, संघर्ष करना है, और इस जीने में प्रतिदिन मृत्यु की पीड़ा सहनी है, जो शक्ति रहस्य-वादियों के ज्ञान और प्रकाश से न मिली थी, वह उन्हें अपने मन में संचित अपमान से मिली। लांछना की अग्नि विकट प्रेरक शक्ति बनकर उन्हें आयु के शेष वर्षों के पार ले जायेगी। आस्था-अनास्था के भीषण संघर्ष के बाद निराला ने अन्त की समस्त शक्ति बटोरकर भ्रम और प्रवंचना से दूर अपने क्षुब्ध मन को शान्त किया।

मौरावां में साहित्य समारोह था। ब्रजमोहन तिवारी और युवक कवि प्रदीप के साथ निराला भी गये। कानपुर के एक अध्यापक कवि ने निबन्ध पढ़ा, साहित्य में प्रकृति चित्रण। उन्होंने पुराने कवियों की प्रशंसा करने के बाद कहा कि आधुनिक हिन्दी कविता में अच्छा प्रकृति चित्रण नहीं है। निराला कविता पाठ करने के लिए उठे और चुनौती देते हुए बोले—मैं उन महाशय का आह्वान करता हूँ कि जो कविताएं मैं सुनाता हूँ, जैसे कलापूर्ण वर्णन वे संस्कृत या अन्य किसी साहित्य से पेश करें।

निराला की उस उक्ति पर कानपुर की कविमण्डली देर तक और ज़ोर से हँसती रही। निराला ने उनके परिहास की चिन्ता न करके 'जुही की कली' तथा कुछ अन्य कविताएं सुनायी।

श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर कविताएँ सुनीं और जोरों की करतल ध्वनि से अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। इससे कानपुर के कवियों को लगा, निराला की धाक जम रही है और वे उखड़ रहे हैं। उन्होंने निराला को परास्त करने के लिए व्यंग्य का सहारा लिया। एक सज्जन ने आकर कविता पढ़ी—

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चले कवि जी कविता करने कलम तोड़ दी।
कहीं इंच भर कहीं डेढ़ फुट सतर जोड़ दी।
गरांडील शब्दों को लेकर पद में ठूंसा।
मानो पशु की मृतक खाल में भर दे भूसा।
छंद खड़े स्वछंद हैं और काफिया तंग है।
कविता का यह देखिए चला निराला ढंग है।

कवि-सम्मेलन का सभापतित्व सनेहीजी ने किया; कानपुर की मंडली के वह नेता थे। निराला से कुछ खिंचे-खिंचे रहे। प्रदीप ने हल्दीघाटी पर अपनी ओजपूर्ण रचना से श्रोताओं को मोह लिया। समस्यापूर्ति और कवित्त-सवैया वालों का रंग फीका हो गया। विजय निराला दल के हाथ रही।

जानकीवल्लभ शास्त्री ने निराला पर एक कविता लिखी, 'तुलसीदास' का छंद और संस्कृतगर्भित पदावली। निराला पर यह पहली कविता थी। निराला प्रसन्न हुए, कविता को अपने 'तुलसीदास' के समकक्ष बताकर उन्होंने जानकीवल्लभ द्वारा किये हुए सम्मान का ऋण चुकाया। कविता को अभी प्रकाशित न करने की सलाह देते हुए उन्हें लिखा, "आपकी काव्य-प्रतिभा 'निराला' की तारीफ़ में उसके 'तुलसीदास' के मुकाबले, न्यून नहीं, पर अभी इसे तारीख डालकर रक्खे रहिए। मेरी राय में प्रसिद्ध होकर यदि इच्छा हुई तो कहीं भेजिएगा।

इस प्रोत्साहन के साथ संस्कृतज्ञ युवक साहित्यकार के विकास के लिए वह अंग्रेजी व्याकरण के सहारे उचित शिक्षा भी देते जाते थे—लाना, पाना क्रियाएं औग्जिलियरी वर्ब के साथ में—वर्जित चलती हैं, प्रेजेंट परफेक्ट टेन्स में सकर्मक क्रिया के साथ हमेशा 'नहीं' का प्रयोग होगा। अंग्रेजी खूब पढ़ते जाइए, आप जब तक उर्दू न पढ़ें, उर्दू के किसी शब्द के नीचे बिन्दी न लगायें; आपने 'कवितात्व' लिखा है। कैसे सिद्ध होता है शब्द लिखिएगा इत्यादि।

सरोज की मृत्यु के बाद निराला के लिए गंगा पुस्तकमाला से संबंध बनाये रखना संभव न हुआ। उनकी समझ में इस भयानक घटना के लिए दुलारेलाल भार्गव कम जिम्मेदार न थे। यदि उन्होंने निराला की प्रतिभा

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE, 2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को पहचाना होता, उनके परिश्रम का उचित मूल्य चुकाया होता तो यह स्थिति न आती । 'गीतिका' प्रेस में जा चुकी थी। उन्होंने उसे वापस ले लिया । उसमें उधर जो नए गीत लिखे थे, शामिल किए; वाचस्पति पाठक के मार्फत लीडर प्रेस से सौदा पक्का किया और छपने के लिए पुस्तकें भेजीं । पर 'सरोज स्मृति' कविता 'सुधा' में ही प्रकाशित हुई ।

'तुलसीदास' लिखते समय निराला ने 'कालिदास' का मंथन काफी किया था । तुलसीदास को उन्होंने कालिदास के श्रृंगार-संसार पर विजयी होते दिखाया था। पर उनके युवक मित्र जानकीवल्लभ शास्त्री को कालिदास ही अधिक प्रिय थे । इन दिनों हिन्दी में यह चर्चा जोर पकड़ती जा रही थी कि साहित्य जनता के लिए लिखा जाना चाहिए, भाषा सरल होनी चाहिए । हिन्दी और उर्दू को अपना अरबी-फारसीपन तथा संस्कृत-वाली क्लिष्टता छोड़नी चाहिए । 'निराला' यह सब देख-सुन रहे थे और उनके मन में यह प्रश्न उठ रहा था कि आखिर कालिदास जातीय जीवन का प्रतिनिधित्व कहां तक करते हैं उधर सुमित्रानन्दनपन्त की कीर्तिकौमुदी दिन दूनी रात चौगुनी फैलती जा रही थी । 'पन्तजी और पल्लव' वाले लेख से उसमें कोई बट्टा न लगा था । लखनऊ में ही उनके किसी मित्र ने 'गुंजन' की एक कविता पर 'वैरी गुड' लिख रहा था । उन्हें अपने प्रति यह भारी अन्याय मालूम हुआ ।

सन् 35-36 के जाड़ों में निराला अक्सर कालिदास और पन्त की चर्चा करते आत्मविभोर होकर कविताएं सुनाना उन्होंने बन्द-सा कर दिया था । कविता का अर्थ कितने प्रकार से हो सकता है, कौन-सा अर्थ सुन्दर है कवि के बनाये चित्र में कहां पूर्णता है, कहां खामी है, इन प्रश्नों पर वह विचार करते । पन्त ने लिखा था ।

झर झर बिछते मृदु सुमन शयन ।
जिन पर छन कंपित पत्रों से ।।
लिखती कुछ ज्योत्स्ना जहां-तहां ।

निराला पूछते—ज्योत्स्ना कंपित पत्रों से लिखती है तो उसकी दवात कहां है ? पत्ते अगर निब हैं तो इतने निबों से एक साथ वह लिखेगी कैसे ?

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उमाशंकर वाजपेयी ने कहा—देखिये, कबीर ने कितना अच्छा कहा है—

लाली मेरे लाल की जित देखौं तित लाल।
लाली देखन मैं गयी, मैं भी हो गयी लाल।।

ऐसी सुन्दर उक्ति आधुनिक हिन्दी में एक भी नहीं है।

निराला ने तर्क किया—जब चारों तरफ लाली ही लाली है तब चलने की गुंजाइश कहां रही ? और उसे लाल से प्रेम है या लाली से ? वह लाल देखने आएगी या लाली ? वह कालिदास की पंक्तियों में श, क्ष, वर्णों का उच्चारण इस ढंग से करते मानो जीभ से अंगूर पिचका रहे हों और और उनका मुंह मीठे रस से भर गया हो :

तन्नी श्यामा शिखरिदशना पक्व बिम्बाधरोष्ठी।
मध्ये क्षामा चकित हरिणी प्रेक्षणा निम्ननाभिः।।

अथवा

मन्दं मन्दं नुदित पवनश्चानुकूलो यथा त्वां।
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।।

मिठास से जैसे वे ऊब उठे हों; वे कहते—मारे शपाशप के बुरा हाल है।

कला की बारीकियों को लोग समझते नहीं, हिन्दी आलोचक परले सिरे के उजबक। नंददुलारे वाजपेयी ने काव्य की वृहत्त्रयी जरूर कायम कर दी पर कहां निराला, कहां पंत ! विवेक से दोनों की कला का विश्लेषण किसी ने नहीं किया। दुलारेलाल भार्गव के यहाँ जब 'गीतिका' छप रही थी, उन्होंने उसकी टीका लिख देने को कहा था। अब वह लीडर प्रेस से प्रकाशित हो रही थी। गीतों का अर्थ लिखने का मसला फिर दरपेश था। 'निराला' को यह बात हास्यास्पद लगती थी कि कवि स्वयं अपनी रचनाओं का भाष्य लिखे। फिर भी लोगों को समझाना तो था ही कि उनके गीत सार्थक हैं, उनमें ऊँचे दर्जे की कला निर्वाह है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कार और भावना

विष्णु प्रभाकर

पात्र

मां : संक्रांति काल की एक हिंदू नारी।
अतुल : मां का छोटा पुत्र।
उमा : पुत्रवधू; अतुल की पत्नी।
नौकर और मिसरानी

[स्टेज पर एक मध्यवर्गीय परिवार के घर के आंगन का दृश्य। पूर्व की ओर दो कमरे हैं, जिनके द्वार बंद हैं। पश्चिम भाग का द्वार बाहर जाता है, वह बंद है। उत्तर भाग में रसोई के आगे बरामदा है। दक्षिण में बड़ा बरामदा है, जिसका एक द्वार बैठक में जाता है, दूसरा बाहर। जो कुछ दिखाई देता है, वह स्वच्छ, सुन्दर और उच्च स्थिति का प्रतीक है। बैठक में एक सोफे का एक अंश दृष्टि में आता है। रसोई के पास स्वच्छता है और आलमारी में उचित सामान व्यवस्थित रूप से रखा हुआ है। आंगन में एक ओर पलंग पड़ा है, दूसरी ओर दो कुर्सियां तथा एक छोटा टेबुल। टेबुल पर नाश्ते के खाली बरतन हैं। पलंग पर उमा लेटी है। वह युवती और रूपवती है। पर्दा उठते समय वह कोहनी पर भार टिकाये शून्य में ताकती दिखाई देती है। साड़ी अस्त-व्यस्त है। कुंडलाकार कर्णफूल केशों में होकर कपोल पर आ गया है। आगे एक खुली पुस्तक है। वह पढ़ते-पढ़ते सोचने लगी है। सहसा धीरे से फुसफुसाती है।]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उमा : [अपने से बातें करती-सी]—जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं, एक समय आता है, वे ही बातें हम चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं।

[फुसफुसाकर वह फिर पुस्तक देखती है; फिर शून्य में दृष्टि गड़ा देती है। उसकी आंखें गंभीर हैं, उसके मुख पर आनेवाली संध्या की रक्तिम आभा सौन्दर्य बखेर रही है। वह इतनी खोयी हुई है कि नौकर रसोई के बरामदे से आकर बरतन उठा ले जाता है, पर वह नहीं देखती। उसका सिर उसी तरह खुला रहता है और विदा की किरण कर्णफूल पर चमकती है। उसी चमक में केशों की स्निग्धता उभर आती है। तभी पश्चिम वाला बाहर का द्वार खुलता है। मां अंदर आती हैं। उनका मुख वेदना से पूर्ण है; आंखों में पीड़ा है और शरीर में थकान। उन्होंने साड़ी पर गर्म चादर ओढ़ी है। उनकी पगध्वनि सुनकर उमा चौंककर उठती और आंचल ठीक करती है। मां उसी के पास आकर धम्म से बैठ जाती हैं। बैठती-बैठती कहती है।]

मां : [भरीया स्वर] तूने सुना उमा?

उमा : [अचरज] क्या माता जी?

मां : पिछले महीने अविनाश बहुत बीमार रहा था।

उमा : सच?

मां : हां।

उमा : उन्होंने तो कुछ नहीं बताया।

मां : वह क्या बताता! वह क्या वहां जाता!

उमा : फिर भी सुना तो होता! आपसे किसने कहा?

मां : मैं कुमार के घर गयी थी। वहीं उसकी मिसरानी ने मुझे बताया। कहने लगी—तुम्हारा बड़ा बेटा तो बहुत बीमार रहा; मरकर बचा है। सुनकर मैं शर्म से गड़ गयी। मेरा बेटा बीमार रहे और मुझे पता भी न लगे। [आंसू भर आते हैं, स्वर लड़खड़ाता है] बचपन में उसे कभी-कभी खांसी हो जाती थी, तो मैं कई-कई दिन

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तक न खाती थी, न सोती थी। वे बहुतेरा समझाते थे, नाराज भी हो जाते थे पर जी नहीं मानता था; और अब···[आगे बोला नहीं जाता। फूट-फूटकर रो पड़ती है। उमा करुणा से द्रवित उनको सम्हालती है।]

उमा : [सांत्वना से भीगा स्वर] माताजी, माताजी! रोओ मत। न, इसमें आपका क्या अपराध है?

मां : [उसी तरह] अपराध और किसका है? सब मुझी को दोष देते हैं। मिसरानी कह रही थी—बहू कैसी भी हो, पर अपने प्राण देकर उसने पति को बचा लिया है। अकेली थी, पर किसी के आगे हाथ पसारने नहीं गयी। केवल एक-दो बार मिसरानी ने दवा ला दी थी, वरना स्वयं दवा लाती थी, घर का काम करती थी और फिर अविनाश को देखती थी···

उमा : [टोककर] पर माताजी! भाई साहब को क्या हुआ था?

मां : हैंजा।

उमा : [चौंकती है]···हैजा···बस···।

मां : मर कर बचा है, बेटी। दस दिन बीत गये, पर अभी तक दफ्तर नहीं जाता।

उमा : कैसा अचरज है, उन्हें पता भी नहीं लगा!

मां : पता लगा भी हो तो क्या वह बताने वाला है!

उमा : [चोट खाकर] पर माताजी, यह तो···

मां : [विद्रूप से] मैं जानती हूं। मेरे ही तो बेटे हैं। माया-ममता किसी को भी नहीं छू गयी है। हर बात में देश, धर्म और कर्तव्य की दुहाई देना उन्होंने सीखा है। आखिर इनका बाप भी तो ऐसा ही निर्मम था। मुझे याद है, जिस समय अतुल छोटा-सा लड़का रहा था, बचने की कोई आशा नहीं थी, उस समय वे शान्त मन उसको धरती पर लिटाने के लिए सामान हटा रहे थे। दुनिया ने दांतों तले उंगली दबाकर कहा था—ऐसा भी क्या बाप, जो अपने बेटे के लिए भी नहीं रोता। उसी बाप के ये बेटे हैं मुझे सदा उन्होंने

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माया-ममता में फंसी हुई कहकर कोसा है। सदा मेरी निन्दा की है।

[चोट पर चोट खाकर उमा तिलमिलाती है। उसके भाव पलटते हैं, करुणा पहले, खीज फिर हल्के रोष में बदल जाती है।]

उमा : लेकिन माताजी ! इसमें सब दोष भाभी का है।

मां : वह तो है ही, पर बहू···

उमा : [बात काटकर] मैं अच्छी तरह जानती हूं, वे देखने में बड़ी भोली लगती हैं परन्तु···

मां : [चौंककर] भोली···

उमा : हां, बहुत भोली, माताजी ! बहुत प्यारी। जो एक बार देख लेता है वह फिर उस रूप को नहीं भुला सकता। बार-बार देखने को मन करता है। बड़ी-बड़ी काली आंखें; उनमें शैशव की भोली मुस्कराहट, अनजान में ही लज्जा से लाल हुए कपोलों पर रहने वाली हंसी···

मां : [और भी अचरज] पर उमा ! तूने क्या अविनाश की बहू को देखा है ?

उमा : [सम्हलकर] हां, माताजी।

मां : कब ?

उमा : एक दिन जब आप उनसे गुस्सा होकर बहुत दुखी हो रही थीं तब मैं भाभी के पास गयी थी। दोपहर का समय था; आप सो गयी थीं। सच माताजी ! तब उनके रूप को देखकर मैं चौंक उठी थी। बंगाली इतने सुन्दर होते हैं। मुझे देखकर वे मुस्करायी, फिर गले में आंचल डालकर प्रणाम किया और जब मैंने अपना परिचय दिया तो गद्गद हो उठीं। मुझे छाती से लगा लिया···

मां : [वही विस्मय का स्वर] पर तूने तो मुझे कभी नहीं बताया।

उमा : बतलाना ही नहीं चाहती थी।

मां : क्यों ?

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

उमा : क्योंकि मैं उनसे लड़ने गयी थी।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां : [भौंचक] लड़ने गयी थी !···

उमा : जी हां ! मैं उनसे लड़ने गयी थी, क्योंकि वे आपके दुःख का कारण थीं। वे न होतीं तो बड़े भइया आपसे अलग कैसे होते। यही बात मैंने उससे भी कह दी थी।

मां : [उत्सुक] सच ?

उमा : जी हाँ।

मां : तब ?

उमा : तब पहले तो वे मेरी बात सुनकर मुस्करा दीं, फिर बोलीं—'इसमें मेरा क्या दोष है ? यह तो···।' मुझे तब क्रोध आ रहा था। बात काटकर मैंने कहा—'दोष तुम्हारा नहीं है तो किसका है ? तुम न चाहतीं तो बड़े भइया मां को कैसे छोड़ देते। तुम अब भी चाहो तो सब कुछ ठीक हो सकता है। तुम उन्हें छोड़ सकती हो। तुम··· तुम···'

मां : [चौंकती है] उमा, उमा ! यह कहा तुमने···?

उमा : [भावावेश] हां, मैंने स्पष्ट कहा था। मां को बेटे से अलग करना पाप है, मां का हृदय तोड़ना अत्याचार है। उस अत्याचार को दूर करने के लिए प्राण भी देने पड़ें तो कम हैं।

मां : [उत्सुकता] तो उसने क्या कहा ?

उमा : वह बोलीं—'बहिन, मैं जानती हूं मां-बेटे के संबंध से बढ़कर कोई संबंध नहीं है। पर पति से बढ़कर पत्नी के लिए भी और कुछ नहीं है; पति भी यह जिसके लिए उसने समाज की ही नही, वरन् अपने हृदय की साक्षी दी है; जिसे वह प्यार करती है। उसके कहने पर वह प्राण दे सकती है, परन्तु उसको दुःखी करके वह किसी को सुखी करने की कल्पना नहीं कर सकती। करेगी तो वह पापिन है। सोचो, तुम स्वयं पत्नी हो। यद्यपि तुमने मेरी तरह पति का वरण नहीं किया है, फिर भी तुम उन्हें प्यार करती हो···।' मुझे यह बात बुरी लगी, मैंने कहा—'सब पत्नियां अपने पतियों को प्यार करती हैं, मैं भी करती हूं, प्राणों से अधिक प्यार करती हूं।' सुनकर वे घबरायी नहीं, चौंकी भी नहीं, बोली—

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबकी बात मैं नहीं कहती; इतना अधिकार मेरा नहीं है, पर यह तो जानती हूं, तुम अपने पति को प्यार करती हो, तभी तो यहां आयी हो। मैं अतुल को भी जानती हूं, उनका भाई है वह भी। कई बार मेरे पास आया है।'

मां : [हठात् चौंककर] अतुल वहां गया है।

उमा : हां, माताजी, उन्होंने यही कहा था। मुझे भी अचरज हुआ था। मैंने पूछा—'वे यहां आते हैं?' तो हंसकर बोलीं—'डरो नहीं। वे भाई के पास नहीं आते; दफ्तर के काम से आते हैं। तुम्हारी बाते उन्होंने ही मुझे बतायी हैं। मैं जानती हूं, तुम उन्हें प्यार करती हो। सोचो तो, कोई तुमसे कहे, तुम अतुल को छोड़ दो, क्योंकि उनकी माँ या उनका परिवार इस विवाह से नाराज है तो क्या तुम···।'

मैं आगे न सुन सकी। मैंने चिल्लाकर कहा—'भाभी बस करो···' पर उन्होंने बात पूरी करके दम लिया, बोलीं—'तो क्या तुम उन्हें छोड़ दोगी? बोलो···'

तब मैंने त्रस्त होकर कहा था—'नहीं भाभी! मैं नहीं छोड़ सकूंगी! चाहूं तब भी नहीं।' सुनकर वे मुस्करायीं, कहने लगीं—'अच्छा! अब छोड़ो इन बातों को। अभी तो आयी हो और अभी ले बैठी ये पचड़े। आओ अंदर चलें।' पर माताजी! मुझे न जाने क्या हो रहा था। मेरा अंतर्मन कांपने लगा था; मैं उन्हें देखती थी तो जैसे मोहिनी-सी छा जाती थी। मैं थी भी और नहीं भी थी! मोह-ग्रस्त आदमी होता भी है और नहीं भी होता। पर हुआ यही मैं वहां न ठहर सकी। वह पुकारती ही रह गयीं।

मां : [स्वप्न से जागकर] तो तुम चली आयीं?

उमा : हां।

मां : [गंभीर वेदना का स्वर] उमा! पर तुम वहां हो तो आयीं। अतुल भी जाता है; तुम सब जाते हो; तुम जो निर्मम हो और मैं जो मोह-ममता में फंसी हुई हूं, उसकी सूरत को तरसती हूं। कैसी उल्टी बात है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उमा : [क्षमा याचना का स्वर] पर माताजी ! हम क्या उनसे मिलने गये थे ? हम तो···

मां : [बीच में टोककर] कहते हैं, चेतन से अचेतन अधिक शक्तिशाली है। उसमें अधिक आकर्षण है । इसीलिए तुम एक-दूसरे के प्रति खिंचे। चाहे वह प्रेम था, चाहे घृणा थी, पर असल बात रक्त के खिंचाव की थी, वह होकर रही। काश कि···[स्वर डूबता है] काश कि मैं निर्मम हो सकती; काश कि मैं संस्कारों की दासता से मुक्त हो सकती। हो पाती तो कुल, धर्म और जाति का भूत मुझे तंग न करता और मैं अपने बेटे से न बिछड़ती। स्वयं उसने मुझसे कहा था––'संस्कारों की दासता सबसे भयंकर शत्रु है।'

उमा : यह बड़े भइया ने कहा था ?

माँ : हाँ, उसी ने कहा था। मैंने उसे बहुत समझाया, अपने प्रेम की दुहाई दी, पर वह सदा यही कहता—'माँ ! सन्तान का पालन माँ-बाप का नैतिक कर्त्तव्य है। वे किसी पर कोई अहसान नहीं करते, केवल राष्ट्र का ऋण चुकाते हैं। वे ऋण मुक्त हों, यही उनका परितोष है। इससे अधिक मोह है, इसीलिए पाप है, पर मैं क्या करूँ। मैं जो इससे अधिक है, उसी को पाने को आतुर हूँ। मैं ही क्यों, सभी माता-पिता यही चाहते हैं। तभी मैं समझती हूँ उस डाकिन ने मेरे बेटे को मुझसे छीना है। पर वास्तव में दोष उसका नहीं है।

उमा : माताजी ! लगता तो मुझे भी ऐसा ही है।

[अतुल का प्रवेश ।स्वस्थ युवक; साँवला रंग, मुख पर दृढ़ता और आँखों में सौम्यता। उसे देखकर उमा उठती है। क्षण-भर उसे देखती है। वह सदा की तरह शान्त है। फिर रसोई की ओर चली जाती है। अतुल सीधे आकर कुर्सी पर बैठ जाता है और माँ को देखकर कहता है।]

अ० : क्या बन रहा है, माताजी ?

माँ : (अनसुना करके) तूने सुना रे ?

अ० : क्या ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां : अविनाश बहुत बीमार था।

[स्वर भीग जाता है।]

मां : (अचरज) तू जानता था !

अ० : हां।

मां : तूने मुझसे कहा तक नहीं।

अ० : तुमसे कहता, क्यों ?

मां : क्यों, क्या मैं उसकी मां नहीं थी ?

अ० : (मुस्कराता है) मां तो हो, पर सुनकर क्या करतीं ? क्या उसके पास जातीं ?

[मां सहसा जवाब नहीं देती। अतुल फिर कहता है।]

अ० : मैं जानता था, तुम वहां नहीं जा सकोगी और जाने से भी क्या होता है। जब तक तुम उस नीची श्रेणी की विजातीय भाभी को घर नहीं ला सकतीं, तब तक प्रेम और ममता की दुहाई व्यर्थ है। तुम सब निर्मम हो निर्मम···

मां : (बीच में रोककर) मैं निर्मम हूं ?

अ० : निर्मम ही नहीं, कायर भी। जिन संस्कारों में तुम पली हो, उन्हें तोड़ने की शक्ति तुममें नहीं है मां !

[उमा फिर प्रवेश करती है! उसके हाथ में चाय की ट्रे है, जिसे वह कमरे में ले जा रही है, पर बात सुनकर रुकती है। कहती है :]

उमा : लेकिन आप में तो है; आप तो वहां गये होंगे ?

अ० : मुझे वहां जाने के लिए कोई काम नहीं था, इसलिए नहीं गया।

उमा : } एक साथ — आप भी नहीं गये ! (प्याले झनझनाते हैं)

मां : } एक साथ — हैं, तू भी नहीं गया !

अ० ; जाकर क्या करता ?

उमा : (विद्रूप से) भाई के मरने का समाचार सुनकर भी आपका हृदय नहीं पसीजता ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

अ० : (शांत स्वर) उमा, यदि तुम भाई साहब को जानती होतीं तो ऐसी

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बात नहीं कहतीं। मुझे तो क्या, वे मेरे डाक्टर को भी अपने पास नहीं आने देते।

उमा : लेकिन फिर भी आप उनके भाई थे, आपको देखकर उन्हें शान्ति मिलती। वे···

अ० : (उठता है और नौकर को पुकारता है) रामसिंह, पानी ले आओ।

[शीघ्रता से कोई चलता है। आवाज आती है।]

अ० : लाया, सरकार।

अ० : (उमा की ओर मुड़कर) देखो ऊमा, भाभी से बढ़कर भइया का और नहीं है, यह कटु सत्य हमें स्वीकार करना ही चाहिए। इसलिए उनके होते हमें कुछ भी करने का अधिकार नहीं था और न है।

[उमा त्रस्त होकर चली जाती है। माँ भी उठती है। नौकर पानी ले आया है। अतुल हाथ-मुँह धोने लगता है। कई क्षण केवल पानी गिरने का शब्द होता रहता है। फिर बाहर का द्वार खुलता है। मिसरानी प्रवेश करती है। प्रौढ़ा है और एक फटी हुई ऊनी चादर ओढ़े है। सिमटी-सी अतुल को देखती हुई अन्दर चली जाती है। अतुल उसे देखकर भी नहीं देखता। फिर अन्दर से बातें करने का स्वर उठता है, शीघ्र ही वह तीव्र हो जाता है। सूर्य की किरणें धीरे-धीरे विदा होती हैं। सन्ध्या विश्व के रंगमंच पर प्रवेश करती है, थके विश्व को सहलाने के लिए। तभी माँ कमरे से बाहर आती है। वे अब और भी उद्विग्न हैं। उनके पैर डगमगाते हैं। वाणी रुँध जाती है।]

माँ : अतुल! तूने और भी सुना?

अ० : क्या माँ?

माँ : अब अविनाश अच्छा हुआ तो उसकी बहू बीमार पड़ गयी। कहते हैं, उसके बचने की कोई आशा नहीं है।

अ० : हाँ, सुना तो है।

[उमा का प्रवेश]

उमा : क्या सुना है?

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अ० : यही कि भाभी मरणासन्न है ।

उमा : (चकित) क्या—?

माँ : तो मुझे यह भी पता है ?

अ० : हाँ माताजी, मुझे पता है और यह भी पता है कि अपने प्राण खपाकर भाभी ने भइया को तो बचा लिया था, परन्तु भइया के पास भाभी को बचाने के लिए प्राण नहीं हैं ।

माँ : (अनसुना करके) अतुल, तो अविनाश की बहू मर जायेगी ?

अ० : सुना तो ऐसा ही है ।

[उमा अचरज से माँ को देखती है, फिर पति को]

उमा : आप क्या कह रहे हैं ? आप वहाँ क्यों नहीं गये ? नहीं नहीं, आप वहाँ जाइये ।

अ० : (उसी तरह शान्त) कोई लाभ नहीं होगा उमा ! भइया में एक दोष है वे जो कहते हैं, करना जानते हैं । उनके पास पैसा नहीं है, परन्तु उसके लिए वे किसी के आगे हाथ नहीं पसारेंगे । वे फौलाद के समान हैं, जो टूट जाता है पर झुकता नहीं ।

उमा : (काँपकर) लेकिन भाभी को कुछ हो गया तो···?

अ० : (गम्भीर) भाभी को कुछ हो गया तो···तो क्या होगा ? (सहसा काँपकर) नहीं उमा । इससे आगे सोचने का अधिकार मुझे नहीं है ।

[सहसा माँ आगे बढ़ जाती है ।]

माँ : लेकिन मुझे तो है ।

अ० : (उसी तरह) अधिकार तो तुम्हें भी नहीं है माँ । पर तुम सोचो तो तुम्हें कोई रोक भी नहीं सकता ।

माँ : (उद्विग्न) तो मैं सोचती हूँ, अविनाश की बहू को कुछ हो गया तो ···तो शायद अविनाश भी···

[आगे शब्द नहीं निकलते । वाणी फट पड़ती है । उमा अवाक् उन्हें देखती है ।]

उमा : (चकित दुखित)—माताजी, माताजी !

माँ : हां बेटी ! मैं उसे जानती हूँ, वह नहीं बचेगा, नहीं बचेगा ।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

उमा : (कम्पित स्वर) माताजी, आप क्या कह रही हैं ?

अ० : (गम्भीर) माँ ! तुम इतना जानती हो ?

माँ : हाँ उमा, अतुल ! मैं ठीक कह रही हूँ। वह नहीं बचेगा। उसे बचाने की शक्ति केवल मुझी में है, केवल मुझी में···

[फिर अचरज]

उमा :
एक साथ माँ···
अ० :

माँ : (उसी तरह) अतुल, इसीलिए कहती हूँ, तू एक बार मुझे उसके पास ले चल। वह निर्मम है, पर मैं माँ हूँ। मुझे निर्मम नहीं होना चाहिए। मैं उसके पास चलूंगी।

[उमा हर्ष से काँपती है। अतुल उसी तरह गम्भीर है।]

माँ : माँ, तुम कितनी अच्छी हो !

अ० : (गम्भीर) अभी चलो माँ; पर चलने से पहले एक बात सोच लो। यदि तुम उस नीच कुल की विजातीय भाभी को इस घर में नहीं ला सकीं तो जाने से कुछ नहीं होगा।

माँ : (अपेक्षाकृत शान्त) जानती हूँ अतुल ! इसीलिए तो जा रही हूँ।

अ० : (हर्षित स्वर) ऐसी बात है तो चलो माँ, अभी चलो। (पुकारकर) रामसिंह ! ताँगा लाओ, अभी इसी वक्त। और उमा, तुम भी चलो, शीघ्र उमा···

[कहता हुआ बड़े कमरे से होकर बाहर जाता है। उसकी आँखें भर आयी हैं माँ और उमा कई क्षण तक शून्य में ताकती रहती हैं। वातावरण में शान्ति और स्निग्धता है। सहसा उमा को पुस्तक के वाक्य याद आ जाते हैं वह फुसफुसाती है।]

उमा : जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं, एक समय आता है, तब चाहे किसी कारण से भी हों, हम उन्हीं बातों को चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं।

[उसका मुख प्रकाश से मुखरित हो उठता है। नौकर ने पीछे से खिंच दबा दिया है। यहीं पर परदा गिर जाता है।]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमचन्द स्मृति

ऋषभचरण जैन

मुझे प्रेमचन्द को पास से देखने और समझने का कुछ मौका मिला था और मेरी राय है कि वह सचमुच बहुत बड़े आदमी थे। यों 'बड़ा आदमी' उसे भी कहा जाता है जिसके पास बहुत-सा रुपया हो, और उसे भी जो बहुत लिखा-पढ़ा हो या जिसने अपनी आत्मा को ऊपर उठा पाया हो। लेकिन इन सभी तरह के बड़े आदमियों के बड़प्पन का पता हमें उनकी बाहरी तड़क-भड़क देखकर या धुआँधार स्पीच या फिर आत्म-ज्ञान के लम्बे लेक्चर सुनकर ही होता है। प्रेमचन्द एक ऐसे आदमी थे जिनके पास रुपया खुदा का नाम ही था, किसी खास तरह की डिग्री भी नहीं थी, जिसके सहारे उनकी गिनती दुनिया के बड़े भारी पढ़े-लिखों में की जा सकती। फिर भी वह एक बहुत बड़े आदमी थे।

प्रेमचन्द का जीवन सख्तियों और मुसीबतों की एक किताब है। उन्हें न बचपन में गेंद बल्ला खेलना नसीब हुआ, न जवानी में इश्कबाजी का मौका मिला; अधेड़ होने पर भी दिल, दिमाग और तन के लिए वह चीजें हासिल न हुई, जिनके सहारे आज के साहूकार बुढ़ापे में जवान बने रहते हैं। उन्होंने हमेशा मोटा खाया और मोटा पहना। वह गरीब बाप के बेटे थे और गरीबी की डरावनी छाया में उन्होंने स्कूल और कॉलिज की सीढ़ियाँ पार कीं। जिस वक्त वह बी० ए० पास करके एक स्कूल के मास्टर हुए, तो उनके जीवन की ताजगी जा चुकी थी, वह अब जवानी और बुढ़ापे की चौखट पर खड़े थे। उनके मिजाज का रंग फीका पड़ गया था, और दुनिया की तरफ उनकी तबीयत का रुख अजीब बन गया था। यही वह जमाना था, जब हिन्दुस्तान में गांधी की आँधी चल रही थी और लोग सूखे तिनकों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरह उसमें उड़े जा रहे थे। लोग मुल्क पर कुर्बान हो जाने के लिए पागल हो रहे थे। तभी ही आंधी के एक झोंके ने प्रेमचन्द को भी हिला दिया और उन्होंने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

फिर उनका कानपुर के मारवाड़ी स्कूल में हेडमास्टर बनना, एक विधवा से विवाह करना, पहले नवाबराय और फिर प्रेमचन्द के नाम से उर्दू और हिन्दी में लिखना—यह ऐसी बातें हैं जिन्हें आप में से शायद सभी जानते होंगे या हाल ही में अखबारों में उनके बारे में निकले हुए लेखों में आपने पढ़ लिया होगा। मैं यहाँ ऐसी कुछ बातें बताना चाहता हूँ, जो बहुत ही कम लोगों को मालूम है और जिनसे उनके जीवन के इस-उस पहलू पर रोशनी पड़ती है।

प्रेमचन्द से मैं जब पहले-पहल मिला तो मैं थोड़ा-बहुत लिखना शुरू कर चुका था। लेकिन यह वह स्टेज था, जब आदमी खुद नहीं जानता कि बड़े लोग उसकी चीजों के बारे में क्या सोचते हैं। मेरा एक नावल 'मास्टर साहब' तभी छप चुका था और उस वक्त मुझे उस पर कुछ इतना नाज था कि मैंने इस डर से प्रेमचन्द के पास उसकी कापी न भेजी कि कहीं वह उस पर नापसन्दी की मुहर न लगा दें। इस वक्त वह 'माधुरी' में थे। मैं चाहता था, खुद मिलने पर अगर उनके साथ तबीयत की मीजान खा सकी तो 'मास्टर साहब' उन्हें दिखाऊँगा। लेकिन मेरे अचरज की हद न रही, जब उन्होंने खुद ही 'मास्टर साहब' का जिक्र छेड़ा और बताया कि उसे उन्होंने पढ़ा है और वह उन्हें पसन्द आया है।

तब तो उनसे बातचीत का लम्बा सिलसिला छिड़ा। वह एक निहायत सीधी-सादी बैठक में निवार के नंगे पलंग पर बैठे थे जहाँ न गद्दा था, न गालीचों की बहार थी और न झाड़-फानूस ही दिखाई देते थे। बदन पर शायद गाढ़े की एक घटिया सिलाई की कमीज और धोती थी; और अधपके बाल और किसान जैसा चेहरा लिए उस हिन्दी के उपन्यास-सम्राट से ऐसी बातें हुईं, जिन्हें सुनकर मुझे अनेक बार चमकना पड़ा।

तभी प्रेमचन्द के विचार जानने का वास्ता पड़ा।

वह पक्के 'आइडियलिस्ट' थे। अपने उपन्यास-कहानियों में उन्होंने शायद [illegible] की 'सत्याग्रह' और कुछ दूसरी कहानियों को छोड़-

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर हमेशा 'आइडियलिज्म' का पल्ला पकड़ रक्खा। मेरा उनसे इस मामले में विरोध था। मैं कहता था कि उपन्यास-कहानी के मामले में हमें सन्त, महन्त, लेक्चरर या धर्म-गुरु बनने की जरूरत नहीं; कहानियाँ जिन्दगी की तस्वीरें हैं और जिन्दगी कमजोरियों का मजमुआ है। उनका कहना था कि कहानी लिखी जाती है दिलचस्पी के लिए और शिक्षा के लिए। मेरा कहना था कहानी दिलचस्पी के लिए जरूर लिखी जाती है, लेकिन दिल की भूख मिटाना कहानी का सबसे पहला काम है। हो सकता है कि आपकी भूख सदाचार का लेक्चर देनेवाली कहानी से मिटती हो, लेकिन मेरी भूख, गीद मोपासाँ, एण्टन चेखव, वाशिंगटन इर्विंग और रवीन्द्र की कहानियों से मिटती है; या खुद अपनी कहानियों से भी मिटती है। लेकिन इन सब बातों के जवाब में उन्होंने एक मार्के की दलील दी थी जिसका मतलब था कि, हिन्दुस्तान को फिलहाल प्रेमचन्द की कहानियों की जरूरत है, गीद मोपासाँ और एण्टन चेखव की नहीं।

सच, हिन्दुस्तान को आज भी प्रेमचन्द की कहानियों की ही सबसे ज्यादा जरूरत है। क्या उनके 'सप्त-सरोज' की सातों कहानियाँ ऐसी चीजें नहीं, जिसे हजारों बरस तक एक ऋषि वाणी समझकर हमारे बच्चे पढ़ें? क्या उनकी चार सौ के करीब कहानियाँ हमें हिन्दुस्तान के कल, आज और आनेवाली कल की चमका देनेवाली झाँकी नहीं देतीं? प्रेमचन्द की बहुत-सी कहानियाँ हमारी राय में धर्म मन्दिरों तक में पढ़ी जाने लायक हैं।

उसूल का मतभेद दूसरी बात है, लेकिन मैं सच्चे दिल से प्रेमचन्द को हिन्दुस्तान का प्रतिनिधि कहानीकार (Representative story-writer) मानता हूँ। खेत, किसान, गाँव, ढोर, खलिहान—हिन्दुस्तान की बपौती है और इन चीजों के इर्द-गिर्द घूमती हुई जितनी कहानियाँ प्रेमचन्द ने लिखी हैं, उतनी और किसी ने नहीं। इसीलिए मैंने प्रेमचन्द को हिन्दुस्तान का (Representative story-writer) कहा है और जहाँ तक मैं समझता हूँ —ठीक कहा है।

लेकिन जब एक बार मैंने उनसे पूछा कि हिन्दी में आपकी सबसे अच्छी कहानी कौन-सी है, तो उन्होंने सीधे-साधे ढंग से जवाब दिया कि उनकी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

सबसे अच्छी कहानी अभी छपी ही नहीं है। कितना अजीब जवाब था! सच

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो यह है कि इसी जवाब में उनकी महानता का भेद छिपा हुआ था।

मैंने प्रेमचन्द का हरेक उपन्यास पढ़ा है। यों तो उनके सभी उपन्यास लोगों ने पसन्द किये हैं, लेकिन, 'रंगभूमि' मेरी राय में उन्हीं का नहीं हिन्दुस्तान का सबसे अच्छा उपन्यास है। 'रंगभूमि' में कहानी है, काव्य (Poetry) है, फिलौसफी है, मनोविज्ञान (Psychology) है और ढूँढ़ने पर नीति, धर्म और सोशलिज्म का भी बहुत-सा मसाला मिल जायगा। 'रंगभूमि' हमारी जिन्दगी का खाका है, जिनके जोड़ की कल्पना थैकरे के 'वैनिटी-फेयर' में और मेरी कॉरेली के 'वेण्डेट्टा' में जरा-जरा मिल जाय तो मिल जाय, वरना दुनियाँ में और कहीं नहीं मिलेगी।

'रंगभूमि' में तो हमारी आत्मा की जीती-जागती तस्वीर खड़ी दिखाई देती है, जहाँ हम अपने घर का, अपनी सोसाइटी का, अपने देश का सीधा और सच्चा खाका देख पाते हैं।

'प्रेमाश्रम' और 'सेवासदन' भी प्रेमचन्द की जानी हुई चीजें हैं। लेकिन इन चीजों को सिर्फ उपन्यास कहना उनके साथ बेइन्साफी करना है। मैं तो दोनों चीजों को बीसवीं सदी के 'रामायण', 'महाभारत', समझता हूँ, जिसमें उन्होंने हिन्दुस्तान को सोसाइटी के असल रूप की बढ़िया (Allegory) (अलंकृति—रूपक) की है।

प्रेमचन्द के दूसरे उपन्यास 'प्रतिज्ञा', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' अपने-अपने ढँग की अच्छी चीजें हैं और, ऊपर लिखे तीनों उपन्यासों की लाइन में एक के बाद दूसरी का अपना-अपना अच्छा स्थान है।

प्रेमचन्द की आदत में 'प्रोपेगण्डा' की जगह न थी। उन्होंने इतनी किताबें लिखीं, लेकिन एक छोटी-सी कहानी 'समर-यात्रा' को छोड़कर कभी उनकी कोई चीज जब्त न हुई। उनकी निगाह हर किसी की तरफ हमदर्दी से भरी थी। वह आदमी की कमजोरियों को भूल ही नहीं जाते थे, उनमें दिलचस्पी लेते थे और उनकी इज्जत करते थे। उनका भाव न सरकार के लिए नफ़रत-भरा था, न हिन्दू-मुसलमान, ईसाई के लिए उनके मन के विचारों में भेद था। वह आदमी थे और आदमियों के ही प्रतिनिधि

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(Representative) थे, और उन्होंने कभी अपने आपको विचलित न होने दिया।

प्रेमचन्द का स्वभाव बहुत ही हँसमुख और दिल्लगीबाज था। बात का जवाब ऐसा बावन तोले पाव रत्ती देते थे, कि सुननेवाले दंग रह जावें। चीजों के बारे में उनका भाव बहुत ही आनन्द-भरा रहता था। उनकी कलम में और सूरत में जो सिधाई हम देखते हैं, उनकी बातों से ऐसा न लगता था। वह एक मिठास-भरे आदमी थे, जिनके चेहरे-मोहरे पर चाहे वक्त की सख्ती असर कर गई हो; लेकिन दिल ज्यों-का-त्यों, कच्चे दूध की तरह मधुर और स्वच्छ था। पाँच बरस पहले जब वह दिल्ली आये थे, तो मैं, जैनेन्द्र और वह कुतब मीनार की सैर को गये। साथ में थोड़ी-सी पूड़ियाँ थीं। खाने बैठे तो सवाल हुआ कि पानी कौन लावे। मैंने कहा, जो जायेगा, वह घाटे में रहेगा; क्योंकि पूरियाँ कम हैं। जैनेन्द्र की राय थी कि मुझे ही यह खतरा लेना चाहिए। लेकिन प्रेमचन्द ने कहा—मैं बूढ़ा आदमी हूँ, मैं जाता हूँ, मुझ पर आप लोग जरूर ही रहम करेंगे। पानी तो उन्हें न लाने दिया गया, लेकिन उनकी बात ने हमें खूब हँसाया। जब मैंने कहा कि कुतुब की लाट पर चढ़ा जाये; तो हजरत जवाब देते हैं कि नीचे खड़े हुए इस लाट का बड़प्पन हमारे दिलों पर है, ऊपर चढ़ने पर वह कम हो जायगा; इसलिए ऊपर चढ़ना मुनासिब नहीं। इसी मौके पर हमने एक फोटो खिचवाया। जब इस फोटो की कापी प्रेमचन्द को भेजी गयी, तो उन्होंने लिखा—'फोटो मिला; मेरा मुँह टेढ़ा आया है, क्या करें, नसीब ही टेढ़ा है।' इसी मरतबा एक और घटना भी हो गई थी। उस मौके पर दिल्ली की हिन्दी-प्राचारिणी-सभा ने उन्हें मान-पत्र देने का निश्चय किया। प्रेमचन्द शायद उसी रात को चले जानेवाले थे। लेकिन अकस्मात् एक पंजाबी सज्जन ने खड़े होकर कहा—'साहबो, मैं प्रेमचन्दजी को न जाने दूंगा। बरसों पहले की बात है; मेरे बुरे दिन आ गये। मैं लाहौर का निवासी हूँ, लेकिन बुरे वक्त में अपना शहर छोड़कर रोजगार की तलाश में कलकत्ता पहुँचा। उस समय मेरी जेब में सिर्फ 1) था। इत्तफ़ाक से स्टाल पर एक उर्दू का रिसाला बिक रहा था, जिसमें मुन्शी प्रेमचन्द की एक 'मन्त्र' नाम की कहानी छपी थी। साहबो, मैंने जेब के उस आखिरी रुपए का मोह छोड़-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर रिसाला खरीद लिया और इस कहानी ने मेरे जीवन में ऐसा 'मन्त्र' फूंका कि आज मेरा जीवन एक दम बदल गया।' यह महाशय अब दिल्ली में ठेकेदारी का व्यापार करते हैं और सम्पन्न है। उन्होंने प्रेमचन्द को जाने न दिया और दूसरे दिन लोगों को अपने यहाँ आमन्त्रित किया।

प्रेमचन्द चले गये हैं। लेकिन क्या इस तरह के छोटे-मोटे लेख में हम उनकी महानता का वर्णन कर सकते हैं, इसके लिए तो वक्त चाहिए और क़ाबिल लिखनेवाले भी चाहिए। फिलहाल मैंने इस तरफ लोगों का ध्यान बँटाना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के इतने बड़े आदमी के जीते जी हम उसके साथ इन्साफ न कर सके।

० ०

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

(1) धर्म की आड़

उत्पाद=दंगा-फिसाद, अशान्ति। **जाहिल**=मूर्ख। **बेजा**=अनुचित। **अट्टालिकाएँ**=ऊँचे-ऊँचे भवन। **स्वार्थ-सिद्धि**=अपना मतलब पूरा करना। **अनियंत्रित**=बेकाबू। **उपासना**=पूजा कर्म आदि। **खिलाफत**=विरोध। **धर्माचार्य**=धर्म की व्याख्या करने वाले, समझने वाले लोग। **मजहबी**=साम्प्रदायिक। **प्रपंच**—ढोंग, आडम्बर। **अजां देना**=नमाज पढ़ने के लिए लोगों को बुलाने के लिए आवाज़ लगाना, बाँग देना। **दीनदार**=ईमान रखने वाले। **लामजहब**=किसी धर्म या सम्प्रदाय को न मानने वाले।

टिप्पणी

बोल्शेविज्म=रूस के बोलशिविक दल का राजनीतिक सिद्धान्त।

(2) धन और उसका उपयोग

सम्पत्ति शास्त्र=अर्थशास्त्र, सम्पत्ति आदि की व्याख्या-वर्णन करने वाला शास्त्र। **उपार्जन**=कामना, पैदा करना। **पंचभौतिक पदार्थ**=क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर, इन पाँच मूलभूत तत्वों से बने पदार्थ अर्थात् प्राणीजगत। **कन्दराएँ**=गुफाएँ, पहाड़ों में बनी खोह आदि। **निमित्त**=लिए, कारण। **आध्यात्मिक**=आत्मा से सम्बन्धित। **जिज्ञासा**=जानने की इच्छा। **आमोद**=खुशी। **रोगग्रस्त**=रोगी। **अकथनीय**=जिसे कहा न जा सके।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टिप्पणी

जेन्द अवेसत—पारसियों के पूजा ग्रंथ का नाम ।

(3) साबरमती आश्रम में महात्माजी

पर्वत श्रेणी—पहाड़ों की कतारें । **निकटस्थ**—पास में रहने वाला । **अनन्तता**—अन्तहीनता । **नगाधिराज**—पर्वतों का राजा, हिमालय । **असहयोग आन्दोलन**—गांधीजी द्वारा चलाया एक आन्दोलन जिसमें अंग्रेज सरकार को किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं देने की प्रतिज्ञा थी । **प्रवासी भारतीय**—दूसरे देशों-विदेशों में रहने वाले भारतीय । **उद्विग्नता**—बेचैनी । **पुण्यसलिला**—पवित्र जलवाली । **मंदवाहिनी**—धीरे-धीरे बहने वाली । **संयममूर्ति**—वह व्यक्ति जिसने अपने पर पूरी तरह काबू पा लिया है । **लिपिबद्ध**—लिखना । **ब्रह्मचर्य स्खलन**—ब्रह्मचर्य के आदर्श से गिर जाना । **मृत्यु शैया**—मौत की सेज । **मस्तक भंजक**—डंडा, मस्तक आदि फोड़ने वाला । **लड़वैया**—लड़ाने वाला ।

टिप्पणी

आल्प्स=यूरोप के एक ऊंचे पर्वत का नाम ।

असहयोग आन्दोलन—भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान सन् 1921 ई० में महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया एक आन्दोलन जिसका उद्देश्य अंग्रेजी राज्य के कामकाज में, नीतियों के पालन में असहयोग करना था । इस आन्दोलन ने स्वतन्त्रता आन्दोलन को विशेष गति प्रदान की थी ।

बारडोली—गुजरात प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर, यहाँ से सरदार पटेल ने किसानों का एक सफल आन्दोलन चलाकर अंग्रेज सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया था । इसी आन्दोलन की सफलता के कारण पटेलजी को 'सरदार आफ़ बारडोली' कहा गया था; इसके बाद 'सरदार' शब्द पटेल जी के नाम के साथ स्थाई रूप से जुड़ गया था ।

सी० एफ० एंड्र्यूज—एक प्रसिद्ध अंग्रेज चिन्तक जो भारतीय स्वतंत्रता का पक्षपाती था, महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में रहकर प्रवासी

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीयों के लिए भी काफी काम किया।

जगुलल पाशा—मिस्र देश का एक जननेता।

माखनलाल चतुर्वेदी—खड़ी बोली हिन्दी के प्रसिद्ध कवि जो अपनी राष्ट्रीय विचारधारा के कारण 'भारतीय आत्मा' के नाम से जाने जाते थे।

पोलक—प्रवासी भारतीयों की समस्याओं पर कार्य करने वाले एंड्रयूज के साथी, यह भी साबरमती आश्रम में रहते थे।

(4) मास्टर साहब

शागिर्द—शिष्य। **मिल्कियत**—जमीन-जायदाद आदि। **फारसीदां**—फ़ारसी भाषा-साहित्य को जानने वाला विद्वान। **नागवार**—अनुचित, नापसंद। **सुरभित**—सुगन्धित। **नीरव**—चुप, शान्त, शोर रहित। **त्रास-दायक**—कष्ट देने वाला, डरावना। **महानाद**—अत्यधिक शोर। **सद्-भिलाषा**—अच्छी कल्याणकारी इच्छाएं। **द्रवीभूत**—दयालु होना, पिघल जाना। **निर्जीव**—जीवन से रहित, मृत। **भयोत्पादक**—भय पैदा करने वाला। **आभास**—महसूस होना। **क्षत-विक्षत**—घायल, कटा-फटा। **निस्पन्द**—शान्त, बिना हिले-डुले, मृत। **निष्क्रिय**—क्रिया-रहित, बेकार। **महाप्रलय**—विनाश की वह स्थिति जिसमें सब कुछ नष्ट हो जाता है। **ईश्वर-परायण**—ईश्वर पर विश्वास करने वाला, मदन। **आराध्य देव**—वह देवता जिसकी पूजा की जाती है। **कायाकल्प**—योग और आयुर्वेद की एक क्रिया जिसमें शरीर को नया बना दिया जाता है। **गमगीन**—दुखी। **धूल-धूसरित**—धूल में सना हुआ। **आकृति**—शकल-सूरत। **दुई**—दुविधा। **तर्जनी**—अंगूठे के पास वाली अंगुली। **पैगाम**—सन्देश। **अप्रत्याशित**—ऐसी घटना जिसकी आशा न हो, अचानक। **संज्ञाहीन**—बेहोश। **सहानु-भूति**—तसल्ली, दयाभाव। **प्रतिरोध**—विरोध। **हिफ़ाजत**—सुरक्षा।

(5) निराला: जीवन की सार्थकता का प्रश्न

सार्थकता—अर्थपूर्ण, सफलता। **निरर्थकता**—व्यर्थ, अर्थरहित, बेकार। **प्रहार**—चोट। **वज्रपात**—बिजली गिरना, किसी मुसीबत का आना। **चीत्कार**—जोर से चिल्लाना। **परास्त**—हार जाना। **लांछित**—दोष लगना, कलंकित होना। **अन्तस**—हृदय। **सहेजना**—प्यार से इकट्ठा

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करना। **सम्बद्ध**—सम्बन्धित। **तारतम्य**—एक दूसरे से जुड़े हुए, क्रम। **शब्दबद्ध**—भाषा में बंधा हुआ, लिखा हुआ। **आस्था**—विश्वास, भरोसा। **शतशर**—हजारों तीर, वाण। **जर्जर**—क्षीण, टूट-फूटा। **भाग्य अंक**—भाग्य में लिखा हुआ, भाग्य लिपि। **पुरुषार्थ**—परिश्रम, मेहनत। **अशंक**—शंका रहित, सन्देह से रहित। **सम्बल**—सहारा, आधार। **सामर्थ्य**—शक्ति, हिम्मत। **शतदल**—हजार पंखुड़ियों वाला कमल, कमल। **तर्पण**—मरे हुए पितरों को जल आदि देने की क्रिया। **वाक्यविश्रृंखल**—वाक्य का क्रम टूट जाना। **प्रकृतिस्थ**—सामान्य, स्वस्थ। **शोकाकुल**—दुख से व्याकुल। **लक्ष्यबिन्दु**—उद्देश्य। **आघात**—चोट। **अकर्मण्य**=निकम्मा, कर्म से रहित। **उद्‌बोधन गीत**—जन-जीवन को जगाने वाले गीत। **तरी**—नौका। **उत्ताल-तरंगें**—ऊँची-ऊँची लहरें। **विप्लव**—हलचल, विद्रोह, अशान्ति। **वज्रस्वर**—बिजली की भड़भड़ाहट, बिजली के समान तीव्र स्वर। **भूधर**—पहाड़। **स्पर्धा**—होड़, एक दूसरे से आगे निकलने की भावना। **निर्गन्ध**—खुशबू से रहित। **ओंकार**—ब्रह्म, ओम् की ध्वनि। **संकल्प** दृढ़ निश्चय, मन की तीव्र इच्छा। **किरीट**—मुकुट। **रन्ध्र**—छिद्र, सूराख। **ज्योतिवसना देवी**—वह देवी जिसने ज्योति के समान चमकते वस्त्र पहने हुए हों। **किसलय**—वृक्षों के कोमल पत्ते। **प्रवंचना**—धोखा, छल। **असार**—सारहीन। **ध्यान-मग्न**—ध्यान में डूबा हुआ। **नीलज्योति वसन**—वह जिसकी नीली चमक ही वस्त्र हो। **हसन**—हास्य, हँसी। **मृत्यु दशन**—मौत के दाँत। **दुखहरण**—दुख को दूर करने वाला। **रागरंजित मरण**—प्रेम के रंग में रंगी हुई मौत। **अविरत**—लगातार। **प्रलोभन**—लोभ। **समुपकरण**—साधन। **आह्वान**—निमंत्रण, बुलाना। **परिहास**—निन्दापूर्वक हँसी उड़ाना। **सतर**—पंक्ति। **गरांडील**—ग्राम्य दोषों से युक्त, गँवारू। **समस्यापूर्ति**—किसी एक समस्या, पंक्ति को आधार बनाकर रची गयी कविता। **संस्कृत गर्भित**—सस्कृत-तत्सम शब्दों से युक्त भाषा। **संस्कृतज्ञ**—संस्कृत-साहित्य का विद्वान। **वर्जित**—रहित, मना। **मंथन**—बार-बार गणना। **क्लिष्टता**···कठिनाई, दुर्बोधता। **तन्वी**—दुबली-पतली। **ज्योत्स्ना**—चांदनी। **उजवक**—मूर्ख, नासमझ। **वृहत्त्रयी**—तीन बड़े कवियों का समूह। **बरपेश**—सामने। **निर्वाह**—परम्परा का पालन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टिप्पणी

महिषादल—बंगाल प्रदेश का एक स्थान।

सरस्वती—ब्रह्मा की पुत्री। सरस्वती को विद्या-ज्ञान की देवी माना जाता है।

सरोज-स्मृति—निराला की पुत्री सरोज जिसका असमय देहान्त हो गया था, निराला सरोज की मृत्यु से बहुत व्यथित हो गये थे, उस व्यथा को एक लम्बी कविता लिखकर व्यक्त किया, यही कविता 'सरोज स्मृति' के नाम से जानी जाती है।

गढ़कोला गढ़मऊ—उत्तर प्रदेश के दो स्थानों के नाम।

सामगान—सामवेद की ऋचाओं का गायन।

स्वच्छंद छन्द—परम्परागत तुकान्त कविता से अलग अतुकान्त कविता, निराला ने इस छन्द का सुन्दर प्रयोग किया।

हल्दीघाटी—राजस्थान का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ राणाप्रताप और अकबर में ऐतिहासिक युद्ध हुआ था। 'हल्दीघाटी' वीर रस के कवियों का प्रिय विषय रहा है।

कालिदास—संस्कृति साहित्य के महान कवि।

नन्ददुलारे वाजपेयी—हिन्दी आलोचना को समृद्ध करने वाले आलोचक।

(6) संस्कार और भावना

मध्यवर्गीय—मध्यम आय वर्ग के लोग। **कुण्डलाकार**—कुंडलों की शक्ल के। **रक्तिम**—खून के समान लाल रंग से युक्त। **पगध्वनि**—पैरों के चलने-फिरने की आवाज। **मोहग्रस्त**—मोह-ममता में जकड़ा हुआ। **परितोष**—सन्तोष, तसल्ली। **विजातीय**—दूसरी जाति की। **मरणासन्न**—मरने के निकट।

(7) प्रेमचन्द स्मृति

सख्तियों—कठोरता। **नावल**—उपन्यास। **मीजान**—स्थिति, हिसाब। **निहायत**—काफी। **आइडियलिस्ट**—आदर्शवादी। **मजमुआ**—संग्रह। **सप्तसरोज**—प्रेमचन्द की कहानियों का संग्रह। **उसूल**—सिद्धान्त। **फिलौसफी**—दर्शन। **प्रोपेगण्डा**—प्रचार। **विचलित**—एक स्थान से डिगना। **बावन तोले पाव रत्ती**—नपी तुली। **मुनासिब**—उचित। **मार्के**—ठीक, सही। **इत्तफाक**—अवसर, संयोग। [illegible] **इन्साफ**—न्याय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gr

०००

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc. No. 2827 (D)
Dated 21/12/2015

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant